

[2023] 9 एस. सी. आर 493:2023 आईएनएससी 517

क.

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम.

भारत का संघ

(2017 की सिविल अपील संख्या 2357) 11 मई, 2023

[डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई, एम आर शाह, कृष्णा मुरारी, हिमा कोहली और**पामिदिघंतम श्री नरसिम्हा, जे. जे.]**

भारत का संविधान:सातवीं अनुसूची-सूची II, प्रविष्टि 41-(3 (ए))-एन. सी. टी. दिल्ली-सेवाओं पर नियंत्रण-केंद्र और राज्य के बीच शक्ति का वितरण-आई. ए. एस. (संवर्ग) नियम, 1954-भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग शक्ति का निर्धारण) विनियम, 1955 -आर. 2 (सी)-अखिल भारतीय सेवा (संयुक्त संवर्ग) नियम 1972-केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 21 मई 2015 को एक अधिसूचना जारी की जिसमें प्रावधान किया गया था कि एन. सी. टी. दिल्ली के उपराज्यपाल "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" के अलावा "सेवाओं" पर नियंत्रण रखेंगे-अधिसूचना को उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी गई थी जिसने बदले में अधिसूचना की संवैधानिकता को बरकरार रखा-उच्च न्यायालय ने घोषणा की कि "सेवाओं" से जुड़े मामले एन. सी. टी. दिल्ली की विधानसभा के दायरे से बाहर हैं "-अपील दायर किए जाने पर, इस अदालत की दो न्यायाधीशों की पीठ ने एक विभाजित निर्णय दिया-इसलिए, प्रश्न संविधान पीठ के समक्ष विचार के लिए आया-आयोजित:अखिल भारतीय सेवाओं या संयुक्त संवर्ग सेवाओं के प्रासंगिक नियमों में "राज्य सरकार" के संदर्भ, जिनमें से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.) एक हिस्सा है या जो एन. सी. टी. डी. के संबंध में है, का अर्थ होगा एन. सी. टी. डी. की सरकार-यह स्पष्ट है कि एन. सी. टी. डी. की विधानसभा राज्य सूची में सभी प्रविष्टियों पर विशेष विधायी शक्तियों का प्रयोग नहीं करती है-यह केवल एक सीमांकित संवैधानिक क्षेत्र में है कि वह अपनी विधायी शक्ति का प्रयोग करने में सक्षम है-यह एन. सी. टी. डी. की सरकार की जिम्मेदारी है कि वह दिल्ली के लोगों की इच्छा को व्यक्त करे जिन्होंने इसे चुना-इसलिए, आदर्श निष्कर्ष यह होगा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (जी. एन. सी. टी. डी.) की सरकार का "सेवाओं" पर नियंत्रण होना चाहिए।

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

493 ए.

494 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

प्रविष्टि 41 के तहत "सेवाओं" के संबंध में-प्रविष्टि 41 पर एन. सी. टी. डी. के नियंत्रण की विधायी और कार्यकारी शक्ति का विस्तार "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" से संबंधित सेवाओं तक नहीं होगा-हालांकि, भारतीय प्रशासनिक सेवाओं, या संयुक्त संवर्ग सेवाओं जैसी सेवाओं पर विधायी और कार्यकारी शक्ति, जो क्षेत्र के दिन-प्रतिदिन के प्रशासन के संदर्भ में एन. सी. टी. डी. की नीतियों और दृष्टि के कार्यान्वयन के लिए प्रासंगिक हैं, एन. सी. टी. डी. के पास होगी-इसके तहत अधिकारी एन. सी. टी. डी. में सेवारत हो सकते हैं, भले ही उन्हें एन. सी. टी. डी. द्वारा भर्ती नहीं किया गया हो-उपराज्यपाल

एन. सी. टी. डी. के विधायी दायरे के भीतर मामलों के संबंध में एन. सी. टी. डी. के मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बाध्य हैं-एन. सी. टी. डी.

ग

डी.

भारत का संविधान:अनुच्छेद 239 ए, 239 ए (3 (बी)) और 239 ए (7)-Art.239AA में "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश की व्याख्या-आयोजित:अनुच्छेद 239 ए. ए. (3 (बी)) और अनुच्छेद 239 ए. ए. (7) का आशय और उद्देश्य संसद को एक विस्तारित विधायी क्षमता प्रदान करना है, जब राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (जी. एन. सी. टी. डी.) की सरकार की बात आती है, स्पष्ट रूप से क्योंकि यह देश की राजधानी है और इसलिए, अलग-अलग विचारों के साथ निपटा जाना चाहिए-इस वाक्यांश की व्याख्या करने के लिए "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों की विधायी शक्ति को प्रतिबंधात्मक तरीके से सीमित कर देगा-इस प्रकार, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.) की विधायी क्षमता की व्याख्या मतदाताओं की इच्छा को पूरी गति देने के लिए की जानी चाहिए-एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति इसकी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है, यानी,

ई.

च

जी.

एच.

495

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ ए

क.

भारत का संविधान-अनुच्छेद 239 ए-अनुच्छेद 239 ए (3) में वाक्यांश "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन"-आयोजित:अनुच्छेद 239 ए (3) में "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" वाक्यांश के संदर्भ में, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.) की विधायी शक्ति को संविधान के व्यापक सिद्धांतों और प्रावधानों द्वारा निर्देशित किया जाना है, न कि केवल सीमित किया जाना है। भारत का संविधान-संघवाद और लोकतंत्र-सहकारी संघवाद-आयोजित:संघवाद का हमारा मॉडल केंद्र में संघ और क्षेत्रीय संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त लोकतांत्रिक इकाइयों के बीच सहयोग की भावना की उम्मीद करता है-केंद्र और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.) को केंद्र और राज्यों के समान तरीके से सहयोग करने की आवश्यकता है-संविधान की व्याख्या को संघवाद और लोकतंत्र की भावना को एक साथ बढ़ाना चाहिए-सहकारी संघवाद की भावना में, भारत संघ को संविधान द्वारा बनाई गई सीमाओं के भीतर अपनी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए-एन. सी. टी. डी., जिसका एक सुई जेनरिस संघीय मॉडल है, को संविधान द्वारा उसके लिए तैयार किए गए क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए-संघ और एन. सी. टी. डी. एक अद्वितीय संघीय संबंध साझा करते हैं-इसका मतलब यह नहीं है कि एन. सी. टी. डी. को संघ की इकाई में केवल इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि यह एक संघीय इकाई नहीं है।

ग

डी.

भारत का संविधान-व्याख्या-आयोजित:संविधान की रूपरेखा ऐसी है कि यह विभिन्न क्षेत्रों के हितों को समायोजित करता है-विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक बड़ा संवैधानिक छत्र प्रदान करते हुए, यह विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय आकांक्षाओं को संरक्षित करता है-"विविधता में एकता" का उपयोग न केवल आम बोलचाल में किया जाता है, बल्कि यह हमारी संवैधानिक संरचना में भी अंतर्निहित है-संविधान की व्याख्या को अंतर्निहित सिद्धांतों को पर्याप्त महत्व देना चाहिए।

ई.

च

भारत का संविधान:भाग XIV-कला।308 & 367 – सामान्य खंड अधिनियम, 1897 -धारा 3 (58)-केंद्र शासित प्रदेश का समावेशन-राज्य की परिभाषा में-क्या केंद्र शासित प्रदेश भारत के संविधान के भाग XIV के उद्देश्य के लिए एक राज्य है-
आयोजित:सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58), संविधान के Art.367 (1) के आधार पर, संविधान में 'राज्य' अभिव्यक्ति के निर्माण पर लागू होती है, जब तक कि संविधान के किसी विशेष प्रावधान के विषय या संदर्भ में कुछ भी अप्रिय न हो-संविधान के भाग XIV के विषय या संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो केंद्र शासित प्रदेशों में इसके आवेदन को बाहर कर दे-
बल्कि,

जी.

एच.

496 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

खंड 3 (58) के तहत प्रदान की गई "राज्य" की समावेशी परिभाषा के लागू होने से केंद्र शासित प्रदेशों के लिए परिकल्पित संवैधानिक योजना व्यावहारिक हो जाएगी।

केंद्र शासित प्रदेश-समान शासन संरचना वाले केंद्र शासित प्रदेशों का कोई सजातीय वर्ग मौजूद नहीं है।

केंद्र शासित प्रदेश-भारत का संविधान-अनुच्छेद 239 ए-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.)-आयोजित:अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं हैं-अनुच्छेद 239 ए के आधार पर, एन. सी. टी. डी. को "सुई जेनरिस" का दर्जा दिया गया है, जो इसे अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से अलग करता है-एन. सी. टी. डी. की विधानसभा को सूची II और सूची III में प्रविष्टियों पर क्षमता प्राप्त है, सिवाय सूची II की स्पष्ट रूप से बहिष्कृत प्रविष्टियों के-सूची I में प्रविष्टियों के अलावा, संसद को एन. सी. टी. डी. के संबंध में सूची II और सूची III में सभी मामलों पर विधायी क्षमता प्राप्त है, जिसमें वे प्रविष्टियां भी शामिल हैं जिन्हें अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के आधार पर एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से बाहर रखा गया है।केंद्र शासित प्रदेश-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.)-एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति-आयोजित:एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति अपनी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है, अर्थात यह उन सभी मामलों में विस्तारित होगी जिनके संबंध में उसके पास कानून बनाने की शक्ति है-भारत संघ के पास सूची II में केवल तीन प्रविष्टियों पर कार्यकारी शक्ति है जिन पर एन. सी. टी. डी. के पास विधायी क्षमता नहीं है-सूची II और सूची III में प्रविष्टियों के संबंध में एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति संविधान द्वारा या संसद द्वारा अधिनियमित कानून द्वारा संघ को स्पष्ट रूप से प्रदत्त कार्यकारी शक्ति के अधीन होगी।

ग

डी.

ई.

केंद्र शासित प्रदेश-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एन. सी. टी. डी.)-"सेवाओं" पर विधायी और कार्यकारी शक्ति-आयोजित:एन. सी. टी. डी. के पास "सेवाओं" पर विधायी और कार्यकारी शक्ति है, यानी सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 41 क्योंकि:(i) सामान्य खंड अधिनियम 1897 की धारा 3 (58) के तहत राज्य की परिभाषा संविधान के भाग XIV में "राज्य" शब्द पर लागू होती है-इस प्रकार, भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है; और (ii) अनुच्छेद 309 के परंतुक के तहत नियम बनाने की शक्ति का प्रयोग राज्य सूची-भारत का संविधान-अनुच्छेद 309 और सातवीं अनुसूची, सूची II, प्रविष्टि 41 की प्रविष्टि 41 पर कानून बनाने के लिए उपयुक्त प्राधिकारी की विधायी शक्ति को समाप्त नहीं करता है।

च

जी.

एच.

497

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ ए

क.

संदर्भ का जवाब देते हुए, न्यायालय ने

पकड़ना: **1.1** प्रविष्टि **41** पर एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति का विस्तार "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" से संबंधित सेवाओं तक नहीं होगा। हालांकि, भारतीय प्रशासनिक सेवाओं या संयुक्त संवर्ग सेवाओं जैसी सेवाओं पर विधायी और कार्यकारी शक्ति, जो क्षेत्र के दिन-प्रतिदिन के प्रशासन के संदर्भ में एन. सी. टी. डी. की नीतियों और दृष्टि के कार्यान्वयन के लिए प्रासंगिक हैं, एन. सी. टी. डी. के पास होगी। इसके तहत अधिकारी एन. सी. टी. डी. में सेवारत हो सकते हैं, भले ही उन्हें एन. सी. टी. डी. द्वारा भर्ती नहीं किया गया हो। ऐसे परिदृश्य में, एक उदाहरण के रूप में, कुछ नियमों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा, जो स्पष्ट रूप से अखिल भारतीय या केंद्र और राज्यों के बीच संयुक्त कैडर सेवाओं के नियंत्रण का सीमांकन करते हैं। एन. सी. टी. डी., अन्य राज्यों की तरह, सरकार के प्रतिनिधि रूप का भी प्रतिनिधित्व करता है। एन. सी. टी. डी. के प्रशासन में भारत संघ की भागीदारी संवैधानिक प्रावधानों द्वारा सीमित है, और आगे कोई भी विस्तार शासन की संवैधानिक योजना के विपरीत होगा। [पैरा **160**] [579-एच; 580-ए-सी]

ग

डी.

1.2 भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियम, **1954** का उदाहरण, जो आई. ए. एस. अधिकारियों की नियुक्ति से संबंधित है। नियम **2 (ए)** 'संवर्ग अधिकारी' को आई. ए. एस. के सदस्य के रूप में परिभाषित करता है। नियम **2 (बी)** 'संवर्ग पद' को भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग शक्ति निर्धारण) विनियम, **1955** की अनुसूची में प्रत्येक संवर्ग के मद **I** के तहत निर्दिष्ट किसी भी पद के रूप में परिभाषित करता है। नियम **2 (सी)** 'राज्य' को संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य के रूप में परिभाषित करता है और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल है। नियम **2 (डी)** संयुक्त संवर्ग के संबंध में 'संबंधित राज्य सरकार' को परिभाषित करता है, जिसका अर्थ है संयुक्त संवर्ग प्राधिकरण। 'संयुक्त संवर्ग प्राधिकरण' के गठन और संरचना को अखिल भारतीय सेवा (संयुक्त संवर्ग) नियम **1972** के संदर्भ में समझा जाता है। **1972** के नियम "केंद्र शासित प्रदेशों के संयुक्त संवर्ग के अलावा राज्यों के किसी भी समूह के लिए गठित संयुक्त संवर्ग" पर लागू होते हैं।" आई. ए. एस. (संवर्ग) नियम **1954** के नियम **3** में प्रत्येक राज्य या राज्यों के समूह के लिए 'राज्य संवर्ग' या 'संयुक्त संवर्ग' के रूप में संवर्गों के गठन का प्रावधान है। नियम **5** केंद्र सरकार को विभिन्न संवर्गों में संवर्ग अधिकारियों को आवंटित करने का अधिकार देता है। नियम **5 (1)** के संदर्भ में, विभिन्न संवर्गों को संवर्ग अधिकारियों का आवंटन

ई.

च

जी.

एच.

498 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकार या संबंधित राज्य सरकार के परामर्श से किया जाएगा। नियम **7** में कहा गया है कि संवर्ग पदों पर सभी नियुक्तियां "सिविल सेवा बोर्ड की सिफारिश पर" की जाएंगी-राज्य सरकार द्वारा "राज्य संवर्ग के मामले में" और संबंधित राज्य सरकार द्वारा, जैसा कि नियम **2 (डी)** में परिभाषित किया गया है, "संयुक्त संवर्ग के मामले में"। नियम **11** ए के तहत, "उस राज्य की सरकार" को संयुक्त संवर्ग सेवा के सदस्यों के संबंध में नियम **7** (और अन्य उल्लिखित नियमों) के तहत निर्णय लेने की शक्तियां प्रदान की गई हैं। नियम **2, 7** और **11** ए के संयुक्त अध्ययन से संकेत मिलता है कि राज्य संवर्ग

के साथ-साथ एक संविधान राज्य के संयुक्त संवर्ग के भीतर नियुक्ति "उस राज्य की सरकार", यानी विधिवत निर्वाचित सरकार द्वारा की जाएगी। हमारे मामले में यह एन. सी. टी. डी. की सरकार होगी। तदनुसार यह अभिनिर्धारित किया जाता है कि अखिल भारतीय सेवाओं या संयुक्त संवर्ग सेवाओं के प्रासंगिक नियमों में "राज्य सरकार" के संदर्भ, जिनमें से एन. सी. टी. डी. एक हिस्सा है या जो एन. सी. टी. डी. के संबंध में हैं, का अर्थ एन. सी. टी. डी. की सरकार होगा। [पैरा 161] [580-सी-एच; 581-ए-बी]

ग

डी.

1.3 अनुच्छेद 239 ए और 2018 की संविधान पीठ के फैसले के आलोक में, उपराज्यपाल एन. सी. टी. डी. के विधायी दायरे के भीतर मामलों के संबंध में एन. सी. टी. डी. के मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बाध्य हैं। चूंकि एन. सी. टी. डी. के पास सूची II में प्रविष्टि 41 के तहत "सेवाओं" ("सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" को छोड़कर) पर विधायी शक्ति है, उपराज्यपाल सेवाओं पर जी. एन. सी. टी. डी. के निर्णयों से बाध्य होंगे। स्पष्ट करने के लिए, संबंधित नियमों में सेवाओं ("सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" से संबंधित सेवाओं को छोड़कर) पर 'उपराज्यपाल' के किसी भी संदर्भ का अर्थ होगा जी. एन. सी. टी. डी. की ओर से कार्य करने वाले उपराज्यपाल। [पैरा 162] [581-सी-डी]

ई.

च

2. उपरोक्त चर्चा को देखते हुए, निष्कर्ष इस प्रकार है: (क) समान शासन संरचना वाले केंद्र शासित प्रदेशों का एक समान वर्ग मौजूद नहीं है; (ख) एन. सी. टी. डी. अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं है। अनुच्छेद 239 ए के आधार पर, एन. सी. टी. डी. को "सुई जेनरिस" का दर्जा दिया गया है, जो इसे अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से अलग करता है; (सी) एन. सी. टी. डी. ए. की विधानसभा

जी.

एच.

499

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ ए

सूची II की स्पष्ट रूप से बहिष्कृत प्रविष्टियों को छोड़कर सूची II और सूची III में प्रविष्टियों पर योग्यता है। सूची I में प्रविष्टियों के अलावा, संसद को एन. सी. टी. डी. के संबंध में सूची II और सूची III में सभी मामलों पर विधायी क्षमता है, जिसमें वे प्रविष्टियां भी शामिल हैं जिन्हें अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के आधार पर एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से बाहर रखा गया है; (डी) एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति अपनी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है, यानी यह उन सभी मामलों तक विस्तारित होगी जिनके संबंध में उसे कानून बनाने की शक्ति है; (ई) भारत संघ के पास सूची II में केवल तीन प्रविष्टियों पर कार्यकारी शक्ति है जिन पर एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता नहीं है; (एफ) सूची II और सूची III में प्रविष्टियों के संबंध में एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति निम्नलिखित के अधीन होगी: (i) सामान्य खंड अधिनियम 1897 की धारा 3 (58) के तहत राज्य की परिभाषा संविधान के भाग XIV में "राज्य" शब्द पर लागू होती है। इस प्रकार, भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है; और (ii) अनुच्छेद 309 के परंतुक के तहत नियम बनाने की शक्ति का प्रयोग राज्य सूची की प्रविष्टि 41 पर कानून बनाने के लिए उपयुक्त प्राधिकारी की विधायी शक्ति को समाप्त नहीं करता है। [पैरा 164] [581-ई-एच; 582-ए-एफ]

ग

डी.

ई.

च

शिव कृपाल सिंह बनाम वी. वी. गिरि ए. आई. आर. 1970 एस. सी. 2097:[1971] 2 एस. सी. आर. 197-प्रति इनक्यूरियम आयोजित।

जी.

एन. डी. एम. सी बनाम पंजाब राज्य 1997 (7) एस. सी. सी. 339:[1996]

10 पूरक।एससीआर **472**; एसआर बोम्मई बनाम।भारत संघ **(1994)**

3 एससीसी **1**:[**1994**] **2** एस. सी. आर. **644**-अनुसरण किया गया।

अग्रिम बीमा निगम लिमिटेड बनाम गुरुदासमल

(1970) 1 एससीसी 633:[1970] 3 एससीआर 881; T.M.Kanniyan

एच.

500 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

बनाम सी. आई. टी. [1968] 2 एस. सी. आर. 103; राजेंद्र दीवान बनाम प्रदीप

कुमार रानीबाला [2019] 17 एससीआर 1089; आरएस नायक बनाम एआर अंतुले (1984) 2 एससीसी 183:[1984] 2 एससीआर 495; संघ

भारत सरकार बनाम प्रेम कुमार जैन **(1976) 3** एससीसी **473**:[**1976**]

पूरक।एस. सी. आर. **166**-निर्भर।

आई. के. सक्सेना बनाम मध्य प्रदेश राज्य **(1976) 4** एससीसी **750**:[**1976**] **3** एस. सी. आर. **237**; भारत संघ बनाम तुलसीराम

पटेल (1985) 3 एससीसी 398:[1985] 2 पूरक।एससीआर 131;

कृष्ण कुमार सिंह बनाम बिहार राज्य **(2017) 3** एस. सी. सी. **1**:[**2017**] **5** एस. सी. आर. **160**; अमरिंदर सिंह बनाम पंजाब विधान

सभा (2010) 6 एससीसी 113:[2010] 4 एससीआर 1105;

ग

सचिव, जयपुर विकास प्राधिकरण बनाम दौलत मल

जैन (1997) 1 एससीसी 35:[1996] 6 पूरक।एससीआर 584; एसके गुप्ता बनाम केपी जैन (1979) 3 एससीसी 54:[1979] 2

एस. सी. आर. **1184**; इच्छापुर औद्योगिक सहकारी समिति।सोसायटी लिमिटेड बनामसक्षम प्राधिकरण, तेल और प्राकृतिक गैस

डी.

आयोग (1997) 2 एससीसी 42:[1996] 10 पूरक।एससीआर

416; रत्नप्रोवा देवी बनाम उड़ीसा राज्य **[1964] 6 एस. सी. आर. 301;** बिहार राज्य बनाम महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह **[1952] एस. सी. आर. 889;** हरियाणा राज्य बनाम चानन

माल (1977) 1 एससीसी 340:[1976] 3 एससीआर 688; ए. बी.

ई.

कृष्णा बनाम कर्नाटक राज्य **(1998) 3 एससीसी 495:[1998] 1 एससीआर 157;** बी. एस. वाडेरा बनाम भारत संघ **[1968] 3 एस. सी. आर. 575** और गुजरात राज्य बनाम रमन लॉ केशव

लाल (1980) 4 एससीसी 653:[1981] 1 एस. सी. आर. 144-संदर्भित।

च

निर्णीत विधि संदर्भ

[1976] पूरक।एससीआर 166

पर भरोसा किया

पैरा **8 (एफ)**

[1970] 3 एससीआर 881

पर भरोसा किया

पैरा **54**

[1971] 2 एससीआर 197

इनक्यूरियम पैरा **56** के अनुसार आयोजित

जी.

[1968] 2 एससीआर 103

पर भरोसा किया

पैरा **59**

[1996] 10 पूरक।एस. सी. आर. 472 का अनुसरण किया गया

पैरा **60 [2019] 17 एससीआर 1089** पैरा **66 [1994] 2 एससीआर 644** पर निर्भर था

पीछा किया।

पैरा **74 ए**

एच.

501

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ ए

[1985] 2 पूरक।एस. सी. आर. 131 पैरा **102 [2017] 5 एस. सी. आर. 160** को संदर्भित करता है।

संदर्भित किया गया है

पैरा **102**

[2010] 4 एससीआर 1105

संदर्भित किया गया है

पैरा **102**

[1996] 6 पूरक।एससीआर 584

संदर्भित किया गया है

पैरा **104**

[1984] 2 एससीआर 495

पर भरोसा किया

पैरा **119**

[1979] 2 एससीआर 1184

संदर्भित किया गया है

पैरा **132**

[1996] 10 पूरक।पैरा 132 को संदर्भित एस. सी. आर. 416 पैरा 132 को संदर्भित

[1964] 6 एससीआर 301

ग

[1952] एससीआर 889

संदर्भित किया गया है

पैरा **139**

[1976] 3 एससीआर 688

संदर्भित किया गया है

पैरा **140**

[1998] 1 एससीआर 157

संदर्भित किया गया है

पैरा **141**

[1968] 3 एससीआर 575

संदर्भित किया गया है

पैरा **141**

डी.

[1981] 1 एससीआर 144

संदर्भित किया गया है

पैरा 149

[1976] 3 एससीआर 237

संदर्भित किया गया है

पैरा 158

सिविल अपील न्यायनिर्णय:2017 की सिविल अपील संख्या 2357।

ई.

डब्ल्यू. पी. में नई दिल्ली में दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय और आदेश दिनांक 04.08.2016 से। (ग) 2015 की सं. 5888।

डॉ. ए. एम. सिंघवी, राहुल मेहरा, डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी, राहुल मेहरा, वरिष्ठ अधिवक्ता।, शादन फरासत, चिराग एम. श्रॉफ, प्रतीक चड्ढा, चैतन्य गोसाई, आनंद थुम्बायिल, शैलेंद्र पी. सिंह, सुशांत मेहरा, शादन फरासत, प्रतीक चड्ढा, अमित भंडारी, गौतम भाटिया, शौर्य दासगुप्ता, सुश्री हृषिका जैन, अमन नकवी, सिद्धार्थ सीम, सुश्री आशिमा, सुश्री मेरगांका कुकरेजा, शादन फरासत, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।तुषार मेहता, एस. जी., संजय जैन, ए. एस. जी., आर. बालासुब्रमण्यम, सीनियर एड., रजत नायर, कानू अग्रवाल, सौरभ मिश्रा, राजेश कुमार सिंह, पद्मेश मिश्रा, अर्काज कुमार, सुश्री तान्या अग्रवाल, गौरांग भूषण, सुश्री हर्षिता सुखीजा, शिवम शुक्ला, नकुल राय, सुश्री आशिमा गुप्ता, अरविंद कुमार शर्मा, गगन गुप्ता, के. आर. शशिप्रभु, एड.उत्तरदाता के लिए।

च

जी.

एच.

502

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई

ए. संदर्भ. 4 * बी. प्रस्तुतियाँ. 11 * सी. अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या:2018 की संविधान पीठ का फैसला। 15 * (ए) दिल्लीएक सुई जेनरिस मॉडल. 15 * (बी) एन. सी. टी. डी. की विधान सभा की विधायी और कार्यकारी शक्ति. 19 * (सी) "जहां तक ऐसा कोई भी मामला लागू होता है

ग

केंद्र शासित प्रदेश. 23 * डी. केंद्र शासित प्रदेशों का 'वर्ग'. 30 * ई. स्थानीय हित और राष्ट्रीय हित का संतुलन बनाए रखना। 35* च. "जहाँ तक ऐसी कोई बात है" की समावेशी व्याख्या

डी.

केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू " 38 * जी." प्रावधानों के अधीन " : एक सीमा?..... 47* H. संविधान एकात्मक नहीं है। 50 * I. संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच विधायी और कार्यकारी शक्ति का दायरा। 56 * जे. जवाबदेही की ट्रिपल श्रृंखला: मंत्रिमंडल में लोक सेवक सरकार. 68 * (आधुनिक सरकार में लोक सेवाओं की भूमिका. 68 * (बी) वेस्टमिंस्टर में लोक सेवकों की जवाबदेही

ई.

च

संसदीय लोकतंत्र. 69 * (सी) संघीय राजनीति में सिविल सेवा अधिकारियों की जवाबदेही. 73 * के. बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट. 75 * एल. केंद्र शासित प्रदेशों में भाग XIV की प्रयोज्यता. 80 * (ए) संविधान के भाग XIV के उद्देश्य के लिए "राज्य" का अर्थ. 80 *

जी.

*एड। ध्यान दें: सूचकांक में पृष्ठांकन मूल निर्णय के अनुसार है।

एच.

503

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

(ख) 1956 के संविधान संशोधन द्वारा भाग XIV में छूट. 87 * (ग) शक्ति का अस्तित्व और शक्ति का प्रयोग. 89 * एम. प्रविष्टि 41 पर एन. सी. टी. डी. द्वारा विधायी शक्ति का प्रयोग. 93 * एन. "सेवाएं" और एन. सी. टी. डी. 99 * ओ. निष्कर्ष. 103 *

A. संदर्भ

ग

1. हमारे सामने यह मामला भारत में शासन के असममित संघीय मॉडल से संबंधित है, जिसमें एक केंद्र शासित प्रदेश और केंद्र सरकार के बीच सत्ता की प्रतिस्पर्धा शामिल है। मुद्दा यह है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में "सेवाओं" पर किसका नियंत्रण होगा 1: एन. सी. टी. डी. 2 की सरकार या केंद्र सरकार की ओर से कार्य करने वाले उपराज्यपाल। यह सवाल केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा 21 मई 2015 को जारी एक अधिसूचना 3 के बाद उठा, जिसमें कहा गया था:

डी.

"..... 239 एए के अनुच्छेद 239 और खंड (3) के उपखंड (ए) में निहित प्रावधानों के अनुसार, राष्ट्रपति एतद्द्वारा निर्देश देते हैं कि -

ई.

अपने नियंत्रण और आगे के आदेशों के अधीन रहते हुए, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का उपराज्यपाल, 'लोक व्यवस्था', 'पुलिस', 'भूमि' और 'सेवाओं' से जुड़े मामलों के संबंध में, जैसा कि ऊपर कहा गया है, केंद्र सरकार की शक्तियों का प्रयोग करेगा और राष्ट्रपति द्वारा समय-समय पर उसे सौंपी गई सीमा तक कार्यों का निर्वहन करेगा।

च

बशर्ते कि दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का उपराज्यपाल, अपने विवेकाधिकार पर, 'सेवाओं' के मामले में दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के मुख्यमंत्री के विचार प्राप्त कर सकता है, जहां भी वह उचित समझे।" अधिसूचना में कहा गया है कि एन. सी. टी. डी. के उपराज्यपाल समय-समय पर उन्हें सौंपी गई सीमा तक नियंत्रण का प्रयोग करेंगे।

जी.

1 "एन. सी. टी. डी. "2" जी. एन. सी. टी. डी. "

एच.

3 "2015 अधिसूचना "

504

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

राष्ट्रपति द्वारा "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" के अलावा "सेवाओं पर"। उपराज्यपाल अपने "विवेकाधिकार" पर एन. सी. टी. डी. के मुख्यमंत्री के विचार ले सकता है।

2. "सेवाएँ संविधान की सातवीं अनुसूची की राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत आती हैं। 2015 की अधिसूचना में राज्य सूची की प्रविष्टि 41 को शामिल नहीं किया गया है, जिसका विषय "राज्य लोक सेवाएँ;

राज्य लोक सेवा आयोग ", की शक्तियों के दायरे से

जीएनसीटीडी। अधिसूचना में कहा गया है कि एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति के दायरे से "सेवाओं" को बाहर करने का तर्क यह है कि एन. सी. टी. डी. की अपनी राज्य सार्वजनिक सेवाएँ नहीं हैं:

"इसके अलावा, भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा के कर्मियों से युक्त केंद्र शासित प्रदेशों का संवर्ग केंद्र शासित प्रदेशों दिल्ली, चंडीगढ़, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली, पुडुचेरी और अरुणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के लिए समान है, जो गृह मंत्रालय के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित हैं और इसी तरह DANICS और DANIPS केंद्र शासित प्रदेशों दमन और दीव, दादरा नगर हवेली, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली सामान्य सेवाएँ हैं, जिसमें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली भी शामिल है, जिसे गृह मंत्रालय के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित किया जाता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की अपनी राज्य लोक सेवाएँ नहीं हैं। इस प्रकार, 'सेवाएँ' इस श्रेणी में आती हैं।

ग

डी.

ई.

और जबकि यह अच्छी तरह से स्थापित है कि जहाँ कोई विधायी शक्ति नहीं है, वहाँ कोई कार्यकारी शक्ति नहीं है क्योंकि कार्यकारी शक्ति विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है।

च

और जबकि राज्य सूची की प्रविष्टियाँ 1,2 और 18 क्रमशः 'लोक व्यवस्था', 'पुलिस' और 'भूमि' से संबंधित मामले हैं और उस सूची की प्रविष्टियाँ 64,65 और 66 जहाँ तक वे प्रविष्टियाँ 1,2 और 18 से संबंधित हैं और 'सेवाएँ' भी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा के दायरे से बाहर हैं और परिणामस्वरूप दिल्ली की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार के पास उपरोक्त के संबंध में कोई कार्यकारी शक्ति नहीं होगी और आगे यह कि उपरोक्त विषयों के संबंध में शक्ति विशेष रूप से राष्ट्रपति या उनके प्रतिनिधि यानी दिल्ली के उपराज्यपाल में निहित है।"

जी.

एच.

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

3. उपरोक्त अधिसूचना पर दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष याचिकाओं के एक समूह के माध्यम से हमला किया गया था। अधिसूचना की वैधता को उच्च न्यायालय द्वारा बरकरार रखा गया था क्योंकि इसने घोषणा की थी कि 'सेवाओं' से जुड़े मामले दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की विधानसभा के दायरे से बाहर हैं।" 4 अपील पर, इस न्यायालय की दो-न्यायाधीशों की पीठ की राय थी कि इस मामले में अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या के बारे में कानून का एक महत्वपूर्ण प्रश्न शामिल है, जो "दिल्ली के संबंध में विशेष प्रावधानों" से संबंधित है, और इसलिए 15 फरवरी 2017 को अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या के मुद्दे को संविधान पीठ को भेज दिया गया।

4. अनुच्छेद 239 एए निम्नलिखित प्रावधान करता है: "239-ए। दिल्ली के संबंध में विशेष प्रावधान।—

ग

(1) संविधान (उनसठवां संशोधन) अधिनियम, 1991 के प्रारंभ की तारीख से, केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली को दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (इसके बाद इस भाग में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के रूप में संदर्भित) कहा जाएगा और अनुच्छेद 239 के तहत नियुक्त इसके प्रशासक को उपराज्यपाल के रूप में नामित किया जाएगा।

डी.

(2)(क) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए एक विधान सभा होगी और ऐसी विधानसभा में सीटें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों से प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा चुने गए सदस्यों द्वारा भरी जाएंगी।

ई.

(ख) विधान सभा में सीटों की कुल संख्या, अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजन (ऐसे विभाजन के आधार सहित) और विधान सभा के कामकाज से संबंधित अन्य सभी मामलों को संसद द्वारा बनाई गई कानून द्वारा विनियमित किया जाएगा।

च

(ग) अनुच्छेद 324 से 327 और 329 के प्रावधान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की विधान सभा और उसके सदस्यों के संबंध में लागू होंगे, जैसा कि वे किसी राज्य, राज्य की विधान सभा और उसके सदस्यों के संबंध में लागू होते हैं; और अनुच्छेद 326 और 329 में "उपयुक्त विधानमंडल" के लिए कोई भी संदर्भ संसद के लिए एक संदर्भ माना जाएगा।

जी.

4 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ ("दिल्ली उच्च न्यायालय का निर्णय"), (2016) 232 डी. एल. टी. 196।

एच.

506

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

(3)(क) इस संविधान के प्रावधानों के अधीन रहते हुए, विधान सभा को राज्य सूची या समवर्ती सूची में सूचीबद्ध किसी भी मामले के संबंध में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के पूरे या किसी भी भाग के लिए कानून बनाने की शक्ति होगी, जहां तक ऐसा कोई

मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है, राज्य सूची की प्रविष्टियों 1,2 और 18 और उस सूची की प्रविष्टियों 64,65 और 66 के संबंध में मामलों को छोड़कर जहां तक वे उक्त प्रविष्टियों 1,2 और 18 से संबंधित हैं।

(ख) उपखंड (क) की कोई भी बात इस संविधान के तहत किसी केंद्र शासित प्रदेश या उसके किसी हिस्से के लिए किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने की संसद की शक्तियों का हनन नहीं करेगी।(ग) यदि किसी विषय के संबंध में विधान सभा द्वारा बनाई गई विधि का कोई उपबंध उस विषय के संबंध में संसद द्वारा बनाई गई विधि के किसी उपबंध के प्रतिकूल है, चाहे वह विधान सभा द्वारा बनाई गई विधि से पहले या बाद में पारित किया गया हो, या विधान सभा द्वारा बनाई गई विधि से भिन्न किसी पूर्ववर्ती विधि का, तो दोनों ही मामलों में, संसद द्वारा बनाई गई विधि या, यथास्थिति, ऐसी पूर्ववर्ती विधि प्रबल होगी और विधान सभा द्वारा बनाई गई विधि, तिरस्कार की सीमा तक, शून्य होगी:

ग

डी.

बशर्ते कि यदि विधान सभा द्वारा बनाई गई कोई ऐसी विधि राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित की गई है और उसे उसकी सहमति मिल गई है, तो ऐसी विधि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रबल होगी:

ई.

बशर्ते कि इस उपखंड की कोई भी बात संसद को किसी भी समय एक ही मामले के संबंध में कोई भी कानून बनाने से नहीं रोकेगी, जिसमें विधान सभा द्वारा इस तरह बनाए गए कानून को जोड़ने, संशोधन करने, बदलने या निरस्त करने वाली कानून भी शामिल है।(4) विधान सभा में सदस्यों की कुल संख्या के दस प्रतिशत से अधिक नहीं वाली एक मंत्रिपरिषद होगी, जिसके प्रमुख मुख्यमंत्री होंगे, जो उन मामलों के संबंध में अपने कार्यों के प्रयोग में उपराज्यपाल की सहायता और सलाह देंगे, जिनके संबंध में विधान सभा को कानून बनाने की शक्ति है, सिवाय इसके कि वह किसी कानून द्वारा या उसके तहत अपने विवेक से कार्य करने के लिए अपेक्षित है: बशर्ते कि किसी भी मामले पर उपराज्यपाल और उनके मंत्रियों के बीच मतभेद की स्थिति में, ए

च

जी.

एच.

507

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

उपराज्यपाल इसे राष्ट्रपति को निर्णय के लिए भेजेगा और राष्ट्रपति द्वारा उस पर दिए गए निर्णय के अनुसार कार्य करेगा और ऐसा निर्णय आने तक यह उपराज्यपाल के लिए किसी भी मामले में सक्षम होगा जहां मामला, उसकी राय में, इतना जरूरी है कि उसके लिए तत्काल कार्रवाई करना, ऐसी कार्रवाई करना या मामले में ऐसा निर्देश देना आवश्यक है जो वह आवश्यक समझे।

(5) मुख्यमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा मुख्यमंत्री की सलाह पर की जाएगी और मंत्री राष्ट्रपति की इच्छा के दौरान पद धारण करेंगे।

ग

(6) मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होगी।

(7)(क) संसद, विधि द्वारा, पूर्वगामी खंडों में निहित प्रावधानों को प्रभावी बनाने या पूरक बनाने के लिए और उनके सभी आनुषंगिक या परिणामी मामलों के लिए प्रावधान कर सकती है।(ख) ऐसी कोई विधि जो उपखंड (क) में निर्दिष्ट है, अनुच्छेद

368 के प्रयोजनों के लिए इस संविधान का संशोधन नहीं मानी जाएगी, इसके बावजूद कि इसमें ऐसा कोई प्रावधान है जो इस संविधान में संशोधन करता है या संशोधन करने का प्रभाव रखता है।

डी.

ई.

(8) अनुच्छेद 239-ख के प्रावधान, जहां तक हो सके, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, उपराज्यपाल और विधान सभा के संबंध में लागू होंगे, जैसा कि वे क्रमशः केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी, प्रशासक और उसके विधानमंडल के संबंध में लागू होते हैं; और उस अनुच्छेद में "अनुच्छेद 239-ए के खंड (1)" के किसी भी संदर्भ को इस अनुच्छेद या अनुच्छेद 239-एबी का संदर्भ माना जाएगा, जैसा भी मामला हो।"

च

5. संविधान पीठ ने 4 जुलाई 2018 को अपना फैसला 5 सुनाया। फैसले में तीन न्यायिक राय थीं। बहुमत की राय मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा ने लिखी थी, जिसमें न्यायमूर्ति ए. के. सीकरी और न्यायमूर्ति ए. एम. खानविलकर शामिल हुए। 6 हममें से एक (डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़, जे.) और न्यायमूर्ति अशोक भूषण ने अलग-अलग सहमति वाली राय दी। संविधान पीठ ने संवैधानिक से निपटा

जी.

5 "2018 संविधान पीठ का निर्णय "; (2018) 8 एस. सी. सी. 501 6" बहुमत का निर्णय "

एच.

508

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

एन. सी. टी. डी. की स्थिति और एन. सी. टी. डी. की निर्वाचित सरकार की शक्तियों, कार्यों और जिम्मेदारियों के विभाजन के आधार पर इसके प्रशासन के तौर-तरीके और उपराज्यपाल, जो भारत के राष्ट्रपति द्वारा नामित, केंद्र सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। हम इस निर्णय की धारा सी में उस निर्णय में निर्धारित सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे।

6. अनुच्छेद 239 ए की व्याख्या पर निर्णय लेने पर, अपीलों को विशिष्ट मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए एक नियमित पीठ के समक्ष सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया गया था। 14 फरवरी 2019 को न्यायमूर्ति ए. के. सीकरी और न्यायमूर्ति अशोक भूषण की दो-न्यायाधीशों की पीठ ने दो अलग-अलग फैसले दिए। न्यायाधीशों ने इस बात पर मतभेद व्यक्त किया कि क्या अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) को देखते हुए "सेवाओं" को जीएनसीटीडी के विधायी और कार्यकारी क्षेत्र से बाहर रखा गया है। 7 7. यह मामला तीन न्यायाधीशों की पीठ के समक्ष विचार के लिए आया। वहाँ, संघ ने तर्क दिया कि 2018 की संविधान पीठ ने अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) में दो महत्वपूर्ण वाक्यांशों का विश्लेषण नहीं किया: (i) "जहाँ तक ऐसी कोई बात है

ग

यह मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है और (ii)

डी.

इस संविधान के प्रावधान "। 6 मई 2022 के एक आदेश द्वारा, तीन-न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि:

"8. भारत संघ द्वारा प्रस्तुत संदर्भ आवेदन के साथ-साथ पक्षों की प्रतिद्वंद्वी दलीलों से, विवाद का मुख्य आधार वाक्यांशों की व्याख्या से संबंधित है: "जहाँ तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है और संविधान के अनुच्छेद 239 ए

(3) (ए) में निहित "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" है। संविधान पीठ के फैसले पर विचार करने पर, ऐसा प्रतीत होता है कि इस पीठ के समक्ष विचाराधीन मुद्दे को छोड़कर सभी मुद्दों पर विस्तार से विचार किया गया है। इसलिए, हम उन मुद्दों पर फिर से विचार करना आवश्यक नहीं समझते हैं जो पहले से ही पिछले संविधान पीठ द्वारा सुलझा लिए गए हैं।⁹ इस पीठ को भेजा गया सीमित मुद्दा "सेवा" शब्द के संबंध में केंद्र और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधायी और कार्यकारी शक्तियों के दायरे से संबंधित है। इस न्यायालय की संविधान पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) की व्याख्या करते हुए राज्य सूची में प्रविष्टि 41 के संबंध में इसके शब्दों के प्रभाव की विशेष रूप से व्याख्या करने का कोई अवसर नहीं पाया।

ई.

च

जी.

7 "2019 विभाजित फैसला "

एच.

509

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

10. इसलिए हम संविधान के अनुच्छेद 145 (3) के संदर्भ में संविधान पीठ द्वारा आधिकारिक निर्णय के लिए उपरोक्त सीमित प्रश्न को संदर्भित करना उचित समझते हैं।"

उपरोक्त संदर्भ इस संविधान पीठ के समक्ष निर्णय का विषय है। इस संविधान पीठ के विचार के लिए सीमित मुद्दा केवल "सेवा" शब्द के संबंध में केंद्र और एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्तियों के दायरे से संबंधित है। अर्थात्, क्या एन. सी. टी. डी. या केंद्र सरकार का "सेवाओं" पर विधायी और कार्यकारी नियंत्रण है। अब हम विरोधी पक्षों के वकीलों द्वारा दिए गए तर्कों की ओर रुख करेंगे।

ग

B. प्रस्तुतियाँ

8. अपीलार्थी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील डॉ. ए. एम. सिंघवी ने निम्नलिखित दलीलें दीं:

ए। एन. सी. टी. डी. की विधानसभा के पास सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 41 के तहत कानून बनाने की शक्ति है। शक्ति को केवल इसलिए बाहर नहीं किया जा सकता है क्योंकि प्रविष्टि "राज्य लोक सेवा" शब्द का उपयोग करती है न कि "केंद्र शासित प्रदेश लोक सेवा"। वास्तव में, दिल्ली विधानसभा ने ऐसे कानून बनाए हैं जो प्रविष्टि 41 के अंतर्गत आते हैं;

डी.

बी। भले ही यह पाया जाता है कि एन. सी. टी. डी. के विधानमंडल ने सूची II की प्रविष्टि 41 से संबंधित विधायी शक्ति का प्रयोग नहीं किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि शक्ति का अस्तित्व समाप्त हो गया है;

ई.

ग. एन. सी. टी. डी. के पास सूची II में प्रविष्टियों 1, 2 और 18 के अलावा सभी प्रविष्टियों पर विधायी शक्ति और कार्यकारी शक्ति है जिन्हें अनुच्छेद 239 ए. ए. द्वारा स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।

च

घ. अनुच्छेद 239 ए में "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश समावेशी है और अपवर्जक नहीं है। सूची II और सूची III में कई प्रविष्टियाँ "राज्य" शब्द का उपयोग करती हैं। वाक्यांश "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित

प्रदेशों पर लागू होता है" एक सुविधाजनक वाक्यांश है जो सातवीं अनुसूची में सूचियों के संशोधन के बिना केंद्र शासित प्रदेश एन. सी. टी. डी. को ऐसी प्रविष्टियाँ उपलब्ध कराने की अनुमति देता है। सुविधाजनक वाक्यांश के बिना, एन. सी. टी. डी. के पास सूची II और III में उन प्रविष्टियों पर विधायी क्षमता नहीं होगी जो "राज्य" शब्द का उपयोग करती हैं;

जी.

एच.

510

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

ई. एन. सी. टी. डी. सुई जेनरिस है। इसे 'केंद्र शासित प्रदेशों' के सामान्य वर्ग के भीतर नहीं लाया जा सकता है।

च. भारत संघ बनाम प्रेम कुमार जैन 8 में इस न्यायालय ने

यह माना गया कि संविधान के भाग XIV के प्रावधान केंद्र शासित प्रदेशों तक फैले हुए हैं;

छ. एन. सी. टी. डी. के विधायी और कार्यकारी दायरे में "सेवाओं" को शामिल करने के खिलाफ बालाकृष्णन समिति की रिपोर्ट की कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि: (i) यह अनुच्छेद 239 एए को शामिल करने से पहले था, जिसके द्वारा सूची II से तीन प्रविष्टियों को एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता से स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है; (ii) यह निष्कर्ष कि केवल राज्यों (और केंद्र शासित प्रदेशों नहीं) के पास सेवाएं हो सकती हैं, वैचारिक रूप से गलत है; (iii) प्रेम कुमार जैन (उपरोक्त) मामले में इस न्यायालय के फैसले पर विचार नहीं किया गया था; और

ग

डी.

(iv) 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत की राय स्पष्ट रूप से नोट करती है कि बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट का उपयोग अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या करने में सहायता के रूप में नहीं किया जाएगा।

ज. अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्र सरकार की सेवाओं से संबंधित कार्मिक क्रमशः भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियम 1954 और अखिल भारतीय सेवा (संयुक्त संवर्ग) नियम 1972 द्वारा शासित होते हैं। इन नियमों के संदर्भ में, जबकि जी. एन. सी. टी. डी. को एक अधिकारी उपलब्ध कराना संयुक्त संवर्ग प्राधिकरण का विशेषाधिकार है, जी. एन. सी. टी. डी. के विभागों के भीतर अधिकारी की वास्तविक नियुक्ति बाद वाले का विशेषाधिकार है। इसी तरह, डैनिल्स और डैनिल्स नियम 2003 के तहत, एक बार जब एक अधिकारी को एन. सी. टी. डी. में आवंटित किया जाता है, तो वह प्रशासक होता है जो उस अधिकारी को एन. सी. टी. डी. के भीतर एक पद पर नियुक्त करता है।

ई.

च

जी.

9. अपीलार्थी की ओर से पेश विद्वान वकील श्री शादान फरासत ने दुनिया भर में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रों में सेवाओं के नियंत्रण का एक अवलोकन प्रदान किया। उन्होंने तर्क दिया कि दुनिया भर के देशों में सत्ता के हस्तांतरण के स्तर की परवाह किए बिना, यहां तक कि देशों में भी

8 (1976) 3 एससीसी 473 ए

एच.

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

सरकार के केंद्रीकृत रूप, "सेवाओं" को नियंत्रित करने की शक्ति राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की स्थानीय सरकार को सौंपी गई है।¹⁰ विद्वान सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता ने भारत संघ की ओर से निम्नलिखित दलीलें दीं:

ए। सूची II की प्रविष्टि 41 केंद्र शासित प्रदेशों के लिए उपलब्ध नहीं है, क्योंकि इसमें राज्य लोक सेवा या राज्य लोक सेवा आयोग नहीं हो सकता है।

बी। 2018 के संविधान पीठ के फैसले ने यह तय नहीं किया कि क्या एन. सी. टी. डी. के पास सूची II की प्रविष्टि 41 पर विधायी क्षमता है;

ग

ग. राष्ट्रीय राजधानी होने के नाते दिल्ली को एक विशेष दर्जा प्राप्त है जिसके लिए संघ को सेवाओं पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता होती है, जिसके अभाव में संघ के लिए अपनी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों का निर्वहन करना असंभव हो जाएगा।

घ. "जहाँ तक ऐसी कोई बात लागू हो" अभिव्यक्ति

डी.

अनुच्छेद 239 ए में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए "का अर्थ है कि सूची II में निहित प्रविष्टियां एन. सी. टी. डी. के लिए उस सीमित सीमा तक उपलब्ध हैं जिस तक वे केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होती हैं। एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्तियों का विस्तार केवल उन मामलों तक होगा जो केंद्र शासित प्रदेशों पर 'लागू' होते हैं। चूंकि संविधान 'लागू' शब्द का उपयोग करता है और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 'संबंधित' शब्द का उपयोग नहीं करता है, इसलिए एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति एक प्रविष्टि तक तभी विस्तारित होगी जब वह प्रविष्टि एक वर्ग के रूप में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए स्पष्ट और स्पष्ट रूप से लागू होगी। नतीजतन, सूची II को प्रासंगिक रूप से पढ़ना होगा और कुछ प्रविष्टियों को जी. एन. सी. टी. डी. के क्षेत्र से बाहर रखा जा सकता है।

ई.

च

ई. "सेवाओं" पर भारत संघ के नियंत्रण से एन. सी. टी. डी. के शासन से संबंधित कोई मुद्दा नहीं उठा है; और

च. व्यापार लेन-देन नियम 1993 जी. एन. सी. टी. डी. के मंत्रियों को सिविल सेवाओं पर उनके उचित कामकाज को सुनिश्चित करने के लिए पर्यवेक्षी और कार्यात्मक नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त शक्तियां प्रदान करता है; सिविल सेवाओं पर लागू नियम इंगित करते हैं कि प्रशासनिक नियंत्रण संघ के पास निहित है।

जी.

11. अग्रिम दलीलों से संकेत मिलता है कि इस संविधान पीठ को इस सीमित प्रश्न पर निर्णय लेने के लिए बुलाया गया है कि क्या एन. सी. टी. डी. के पास है

एच.

512

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत कानून बनाने की शक्ति, और इसका अर्थ

पद "जहाँ तक ऐसा कोई मामला संघ पर लागू होता है

अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) में क्षेत्र। यह पीठ विश्लेषण को सुविधाजनक बनाने के लिए 2018 के संविधान पीठ के फैसले में निर्धारित सिद्धांतों का उल्लेख करेगी।

यद्यपि दोनों पक्षों ने यह तर्क देने के लिए ऊपर उल्लिखित अधीनस्थ नियमों पर भरोसा किया कि अधिकारियों की नियुक्ति पर उनका नियंत्रण है, हम प्रत्येक संवर्ग में शासन के ढांचे को स्पष्ट करने के लिए इनमें से प्रत्येक नियम की व्याख्या करना उचित नहीं समझते हैं। यह संदर्भ अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) की व्याख्या के संदर्भ में "सेवाओं" पर एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी और विधायी शक्ति के दायरे तक सीमित है।

ग

ग. अनुच्छेद 239 ए की व्याख्या: 2018 की संविधान पीठ का फैसला

((क) दिल्ली। सुई जेनरिस मॉडल

12. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में कहा गया कि एन. सी. टी. डी. अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं है। यह निर्णय उस तरीके को स्पष्ट करता है जिसमें अनुच्छेद 239 ए के सम्मिलन ने एन. सी. टी. डी. को अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से अलग करते हुए "सुई जेनरिस" का दर्जा दिया। फैसले में कहा गया कि एक विधान सभा, मंत्रिपरिषद और वेस्टमिंस्टर शैली की कैबिनेट प्रणाली के संवैधानिक प्रवेश ने सरकार के प्रतिनिधि रूप की विशेषताओं को अस्तित्व में लाया। परिणामस्वरूप, दिल्ली के निवासियों को, अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से, भारत संघ के राष्ट्रीय हितों को संतुलित करते हुए, एन. सी. टी. डी. के शासन में एक आवाज दी गई है। मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा के माध्यम से बोलते हुए बहुमत के फैसले में कहा गया:

डी.

ई.

च

"196. इस प्रकार, एन. डी. एम. सी. [एन. डी. एम. सी. बनाम पंजाब राज्य, (1997) 7 एस. सी. सी. 339] यह स्पष्ट करता है कि हमारी संवैधानिक योजना के तहत सभी केंद्र शासित प्रदेश एक ही आधार पर नहीं हैं।

एस. संविधान के अनुच्छेद 239-ए का सार

206. यह स्पष्ट है कि संविधान संशोधन में दिल्ली को विशेष दर्जा देने की परिकल्पना की गई है। अनुच्छेद 239-ए की व्याख्या करते समय इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

जी.

207. शुरुआत में, हमें यह घोषणा करनी चाहिए कि अनुच्छेद 239-ए और 239-एबी का सम्मिलन, जो विशेष रूप से दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से संबंधित है, संसद के ए समझौते के इरादे को दर्शाता है

एच.

513

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

दिल्ली को अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के साथ-साथ केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी से एक सुई जेनरिस का दर्जा प्राप्त है, जिस पर आज की तारीख में अनुच्छेद 239-ए एकल रूप से लागू है। एन. डी. एम. सी. मामले में बहुमत के फैसले द्वारा आधिकारिक रूप से यह माना गया है कि दिल्ली का एन. सी. टी. अपने आप में एक वर्ग है।

209. अनुच्छेद 239-ए. ए. और 239-ए. बी. को शामिल करके दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए सरकार के एक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधि रूप की स्थापना की कवायद व्यर्थ हो जाएगी यदि दिल्ली की सरकार, जिसे दिल्ली के लोगों का विश्वास प्राप्त है, ऐसी नीतियों और कानूनों की शुरुआत करने में सक्षम नहीं है जिन पर दिल्ली विधानसभा के पास दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए कानून बनाने की शक्ति है।

ग

210. इसके अलावा, संविधान के उद्देश्यों और कारणों का विवरण (74 वां संशोधन) विधेयक, 1991, जिसे संविधान (69 वां संशोधन) अधिनियम, 1991 के रूप में अधिनियमित किया गया था, भी हमारे विचार का समर्थन करता है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है कि राष्ट्रीय राजधानी को विशेष दर्जा प्रदान करने के लिए, व्यवस्थाओं को संविधान में ही शामिल किया जाना चाहिए।"

डी.

13. न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय ने अनुच्छेद 239 ए की व्याख्या में विधायी और संवैधानिक इतिहास के महत्व पर जोर दिया। इस संदर्भ में, निर्णय में कहा गया है:

"383. इस इतिहास और पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, एन. सी. टी. को अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान दर्जा देना मौलिक रूप से अनुचित होगा। अनुच्छेद 239-ए (4) एक विशेष प्रावधान है जिसे एन. सी. टी. के शासन के लिए एक विशेष संवैधानिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए अपनाया गया था, भले ही केंद्र शासित प्रदेशों के दायरे में हो। अनुच्छेद 239-ए. ए. के प्रावधानों की व्याख्या करते हुए, यह न्यायालय एक पलक झपकाने वाला दृष्टिकोण नहीं अपना सकता है, जो विधायी और संवैधानिक इतिहास की अनदेखी करता है। 1963 और 1966 के अधिनियमों के कुछ प्रावधानों को अपनाते समय, संसद ने अपनी घटक क्षमता में उनसठवें संशोधन से पहले के विधायी अधिनियमों के कुछ अन्य प्रावधानों को हटा दिया।

ई.

च

जी.

14. अनुच्छेद 239 ए की उद्देश्यपूर्ण व्याख्या करने के बाद, निर्णय इस बात को रेखांकित करता है कि संसद ने एन. सी. टी. डी. के लिए जो शासन संरचना अपनाई है, वह अन्य केंद्र शासित प्रदेशों की तुलना में अद्वितीय और अलग है। यह अभिनिर्धारित किया गया कि संसद की घटक शक्ति का प्रयोग "दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार को सरकार के प्रतिनिधि रूप के रूप में मानने के लिए" किया गया था। बहुमत के फैसले में कहा गया:

एच.

514

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

"213... अनुच्छेद 239-ए संसद को केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के लिए कानून द्वारा एक मंत्रिपरिषद और/या एक निकाय बनाने का विवेक देता है जो या तो पूरी तरह से निर्वाचित या आंशिक रूप से निर्वाचित हो सकता है और आंशिक रूप से केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के लिए एक विधानमंडल के कार्यों को करने के लिए नामित किया जा सकता है।

214. दूसरी ओर, अनुच्छेद 239-ए खंड (2), "होगा" शब्द का उपयोग करके, संसद के लिए कानून द्वारा राष्ट्रीय राजधानी के लिए एक विधान सभा का निर्माण अनिवार्य बनाता है।

दिल्ली का क्षेत्र। इसके अलावा, खंड (2) का उपखंड (ए) बहुत स्पष्ट रूप से घोषणा करता है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा के सदस्यों का चयन राष्ट्रीय राजधानी के क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों से सीधे चुनाव द्वारा किया जाएगा।

ग

दिल्ली का क्षेत्र। अनुच्छेद 239-ए खंड (1) के विपरीत, जिसमें केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के लिए विधानमंडल के कार्यों को करने के लिए संसद द्वारा कानून द्वारा बनाया गया निकाय या तो पूरी तरह से निर्वाचित या आंशिक रूप से निर्वाचित और आंशिक रूप से नामित हो सकता है, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधान सभा के संदर्भ में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिसके अनुसार सदस्यों को विधानमंडल के लिए नामित किया जा सकता है।

डी.

सभा। यह संसद द्वारा जानबूझकर बनाया गया था।

215. हमने इस अंतर को रेखांकित करने और संसद की मंशा पर जोर देने के लिए, अपनी घटक शक्ति के प्रयोग में अनुच्छेद 239-ए को शामिल करते हुए, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के मतदाताओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों के समूह के रूप में मानने और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार को सरकार के प्रतिनिधि रूप के रूप में मानने के लिए इस अंतर को उजागर किया है।

ई.

च

216. विधानसभा में पूरी तरह से निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं जिन्हें सीधे चुनाव द्वारा चुना जाता है और जिन्हें दिल्ली के मतदाताओं द्वारा दिल्ली की विधानसभा में भेजा जाता है। दिल्ली विधानसभा के किसी भी सदस्य को नामित नहीं किया जाता है। दिल्ली के निर्वाचित प्रतिनिधियों और मंत्रिपरिषद के पास दिल्ली के मतदाताओं के प्रति जवाबदेह होने के कारण उचित शक्तियां होनी चाहिए ताकि वे अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से और कुशलता से कर सकें।

जी.

(जोर दिया गया)

एच.

515

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

15. न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने अपनी सहमति में यह भी कहा कि एन. सी. टी. डी. "केंद्र शासित प्रदेशों के बीच विशेष वर्ग" है। यह अभिनिर्धारित किया गया कि:

"384. सभी केंद्र शासित प्रदेशों को संविधान के भाग VIII में एक साथ समूहीकृत किया गया है। उन्हें एक संवैधानिक जोड़ी के दायरे में लाते समय, संविधान द्वारा उनके बीच एक स्पष्ट अंतर बनाया गया है।

388. दिल्ली के तहत एक विशेष संवैधानिक दर्जा प्रस्तुत करता है

अनुच्छेद 239 ए। यह तब मजबूत होता है जब उन प्रावधानों को अनुच्छेद 239 ए और 240 के विपरीत पढ़ा जाता है। अनुच्छेद 239 ए में अनुच्छेद 240 (1) की भाषा या योजना शामिल नहीं है, जो राष्ट्रपति को अनुच्छेद 240 (1) में निर्दिष्ट केंद्र शासित प्रदेशों की शांति, प्रगति और सुशासन के लिए नियम बनाने में सक्षम बनाता है। अनुच्छेद 240 (1) का यह प्रावधान

इंगित करता है कि एक बार संसदीय कानून बनाए जाने के बाद, राष्ट्रपति पुडुचेरी के लिए विनियम नहीं बनाएगा।दिल्ली के मामले में, अनुच्छेद 239 ए किसी विधायिका या मंत्रिपरिषद के संविधान को भविष्य में संसद द्वारा बनाए जाने वाले कानून पर नहीं छोड़ता है।अनुच्छेद 239 ए. ए. आदेश देता है कि एन. सी. टी. के लिए एक विधान सभा होगी और उपराज्यपाल को सहायता और सलाह देने के कार्य के साथ एक मंत्रिपरिषद होगी।द.

ग

डी.

“वहाँ होगा “गठन एक संवैधानिक का संकेत है

आदेश दिया।एन. सी. टी. के लिए एक विधान सभा और एक मंत्रिपरिषद को संसद द्वारा (अपनी घटक शक्ति में) सक्षम करने वाले कानून के अधिनियमन पर भविष्य की तारीख में अपने विधायी ज्ञान में नहीं लाया गया था।अनुच्छेद 239 ए का खंड 7 (ए) संसद को कानून द्वारा उस अनुच्छेद में निहित प्रावधानों को प्रभावी बनाने या पूरक बनाने के लिए प्रावधान करने में सक्षम बनाता है।संसद की शक्ति अनुच्छेद 239 ए और इसके परिभाषित मानदंडों को लागू करने, लागू करने और मजबूत करने की है।

ई.

च

389. उपरोक्त विश्लेषण से संकेत मिलता है कि जबकि भाग **VIII** सभी केंद्र शासित प्रदेशों के एक सामान्य समूह को एक साथ लाता है, संविधान का स्पष्ट रूप से उनकी स्थिति, शासन की संस्थाओं (विधायी या कार्यकारी), लोकतांत्रिक भागीदारी की प्रकृति या अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को शासन के साथ सौंपे गए लोगों की जवाबदेही के विस्तार के विवरण को चित्रित करने के लिए एक ही ब्रश का उपयोग करने का इरादा नहीं था।

जी.

(जोर दिया गया)

एच.

516

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

16. इस प्रकार, 2018 के संविधान पीठ के फैसले से यह स्पष्ट है कि एन. सी. टी. डी. की संवैधानिक स्थिति अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं है, जो संविधान के भाग **VIII** के तहत आते हैं।17. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत का निर्णय लोकतांत्रिक आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए संविधान की व्याख्या के महत्व को रेखांकित करता है।यह अभिनिर्धारित किया गया कि:

“ 284.1.संविधान के प्रावधानों की व्याख्या करते समय, संवैधानिक न्यायालयों के लिए अपनाने के लिए सबसे सुरक्षित और सबसे ठोस दृष्टिकोण संविधान के शब्दों को संविधान की भावना के प्रकाश में पढ़ना है।

संविधान ताकि हमारे संविधान की सर्वोत्कृष्ट लोकतांत्रिक प्रकृति और नागरिकों की भागीदारी के माध्यम से प्रतिनिधि भागीदारी के प्रतिमान को समाप्त न किया जाए।अदालतों को ऐसी व्याख्या अपनानी चाहिए जो संविधान की लोकतांत्रिक भावना का महिमामंडन करे।”

ग

(जोर दिया गया) इसलिए, वर्तमान विवाद का निर्णय लेने में, एक ऐसी व्याख्या को अपनाना अनिवार्य हो जाता है जो अनुच्छेद 239 एए को शामिल करके एन. सी. टी. डी. सरकार को प्रदान किए गए अद्वितीय संवैधानिक लोकतांत्रिक जनादेश की भावना को बनाए रखती है।

डी.

(ख) एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति

ई.

18. अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) में कहा गया है कि दिल्ली की विधानसभा को राज्य सूची और समवर्ती सूची के मामलों के संबंध में पूरे या एन. सी. टी. डी. के किसी भी हिस्से के लिए कानून बनाने की शक्ति होगी "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" कुछ विषयों को छोड़कर जिन्हें स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। इस प्रावधान में राज्य सूची की 1,2 और 18 प्रविष्टियों और सूची II की 64,65 और 66 प्रविष्टियों को स्पष्ट रूप से शामिल नहीं किया गया है, जहां तक वे 1,2 और 18 प्रविष्टियों से संबंधित हैं। अनुच्छेद 239 एए (3) (बी) संसद को किसी केंद्र शासित प्रदेश या उसके किसी भी हिस्से के लिए "किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने" की शक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार, जबकि एन. सी. टी. डी. की विधानसभा को सूची II की बहिष्कृत प्रविष्टियों को छोड़कर सूची II और सूची III में प्रविष्टियों पर विधायी क्षमता प्राप्त है, संसद को एन. सी. टी. डी. के संबंध में सूची II और सूची III में सभी मामलों पर विधायी क्षमता प्राप्त है, जिसमें ऐसी प्रविष्टियां भी शामिल हैं जिन्हें अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के आधार पर एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से बाहर रखा गया है। यही वह जगह है जहाँ राज्यों के संबंध में संसद की विधायी शक्तियों से विचलन होता है। जबकि संसद के पास राज्यों के लिए सूची II में प्रविष्टियों पर विधायी क्षमता नहीं है, उसके पास ए में प्रविष्टियों पर कानून बनाने की शक्ति है।

च

जी.

एच.

517

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

एन. सी. टी. डी. के लिए सूची III। यह विचार 2018 की संविधान पीठ के फैसले में लिया गया था। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय के अनुसार: "316... राज्य विधानसभाओं के विपरीत, जो विशेष रूप से राज्य सूची पर विधायी शक्ति का उपयोग करती हैं, अनुच्छेद 246 (3) के प्रावधानों के तहत, एन. सी. टी. के लिए विधानसभा के पास राज्य सूची विषयों पर विशेष विधायी क्षमता नहीं है। एक संवैधानिक कल्पना के अनुसार, जैसे कि संसद के पास सातवीं अनुसूची में समवर्ती के साथ-साथ राज्य सूची के विषयों पर विधायी शक्ति है। अनुच्छेद 239 एए के खंड 3 के उपखंड (सी) में अनुच्छेद 254 के समान तिरस्कार का प्रावधान है। विधान सभा द्वारा अधिनियमित कोई कानून संसद द्वारा अधिनियमित कानून के प्रतिकूल होने की सीमा तक अमान्य होगा जब तक कि उसे राष्ट्रपति की सहमति नहीं मिल जाती। इसके अलावा, राष्ट्रपति की सहमति संसद को भविष्य में विधान सभा द्वारा अधिनियमित कानून को ओवरराइड या संशोधित करने के लिए कानून बनाने से नहीं रोकेगी।

ग

डी.

19. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में कहा गया कि एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति इसकी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है, यानी यह उन सभी मामलों में विस्तारित होगी जिनके संबंध में उसके पास कानून बनाने की शक्ति है। अनुच्छेद 239 एए (4) में प्रावधान है कि मंत्रिपरिषद उन मामलों के संबंध में उपराज्यपाल के कार्यों के प्रयोग में सहायता और सलाह देगी जिनके संबंध में विधान सभा को कानून बनाने की शक्ति है। इस प्रकार, एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति सूची II में प्रविष्टियों पर विस्तारित होगी, सिवाय बहिष्कृत प्रविष्टियों के। अनुच्छेद 239 एए (4) के प्रावधान का विश्लेषण करने के बाद, 2018 की संविधान पीठ के फैसले में बहुमत की राय में यह माना गया था कि संघ के पास सूची II में केवल तीन प्रविष्टियों पर कार्यकारी

शक्ति है, जिन पर एन. सी. टी. डी. के पास विधायी क्षमता नहीं है, यानी सूची II में प्रविष्टियां 1,2 और 18। यह आयोजित किया गया था:

ई.

च

“222. अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) और अनुच्छेद 239-ए (4) के संयुक्त अध्ययन से पता चलता है कि एन. सी. टी. दिल्ली सरकार की कार्यकारी शक्ति दिल्ली विधानसभा की विधायी शक्ति के साथ सह-विस्तारित है जिसकी परिकल्पना अनुच्छेद 239-ए (3) में की गई है और जो राज्य सूची में तीन विषयों और समवर्ती सूची में सभी विषयों को छोड़कर सभी पर फैली हुई है और इस प्रकार, अनुच्छेद 239-ए (4) उन सभी विषयों पर मंत्रिपरिषद को कार्यकारी शक्ति प्रदान करता है जिनके लिए दिल्ली विधानसभा के पास विधायी शक्ति है।

जी.

एच.

518

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

223. अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) राज्य सूची और समवर्ती सूची के सभी मामलों पर संसद की विधायी शक्ति को सुरक्षित रखता है, लेकिन खंड (4) ऐसे मामलों के संबंध में संघ की कार्यकारी शक्तियों को कहीं भी सुरक्षित नहीं रखता है। इसके विपरीत, खंड (4) स्पष्ट रूप से दिल्ली सरकार को उन मामलों के संबंध में कार्यकारी शक्तियां प्रदान करता है जिनके लिए विधानसभा को कानून बनाने की शक्ति है। विधायी शक्ति विधानसभा को अधिनियमित करने के लिए प्रदान की जाती है, जबकि कानून की नीति को कार्यपालिका द्वारा प्रभावी बनाया जाना है, जिसके लिए दिल्ली सरकार के पास व्यापक कार्यपालिका शक्तियां होनी चाहिए।

224. अनुच्छेद 239-ए (4) दिल्ली की एन. सी. टी. सरकार को कार्यकारी शक्तियां प्रदान करता है जबकि संघ की कार्यकारी शक्ति अनुच्छेद 73 से उत्पन्न होती है और संसद की विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है। इसके अलावा, व्यावहारिक संघवाद और सहयोगी संघवाद के विचार जमीन पर गिर जाएंगे यदि हम यह कहें कि संघ के पास उन मामलों के संबंध में भी कार्यकारी शक्तियां हैं जिनके लिए दिल्ली विधानसभा के पास विधायी शक्तियां हैं। इस प्रकार, यह बहुत अच्छी तरह से कहा जा सकता है कि दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के संबंध में संघ की कार्यकारी शक्ति राज्य सूची के उन तीन मामलों तक सीमित है जिनके लिए दिल्ली विधानसभा की विधायी शक्ति को अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) के तहत बाहर रखा गया है। इस तरह की व्याख्या केंद्र सरकार की ओर से सभी नियंत्रण को जब्त करने के किसी भी प्रयास को विफल कर देगी और संविधान द्वारा लगाई गई सीमाओं के अधीन दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को अपने कामकाज में कुछ हद तक आवश्यक स्वतंत्रता देकर व्यावहारिक संघवाद और संघीय संतुलन की अवधारणाओं को प्रबल करने की अनुमति देगी।

ग

डी.

ई.

च

284.16. एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में, भारत संघ के पास राज्य सूची के तीन मामलों से संबंधित दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के संबंध में विशेष कार्यकारी शक्ति है, जिसके संबंध में दिल्ली विधानसभा की शक्ति को बाहर रखा गया है। अन्य मामलों के संबंध में, कार्यकारी शक्ति का प्रयोग दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार द्वारा किया जाना है। हालांकि, यह

संविधान के अनुच्छेद 239-ए (4) के प्रावधान के अधीन है। इस तरह की व्याख्या व्यावहारिक संघवाद और संघीय संतुलन की अवधारणाओं के अनुरूप होगी, जिसमें दिल्ली की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार को संविधान द्वारा लगाई गई सीमाओं के अधीन कुछ आवश्यक स्वतंत्रता दी जाएगी।"

जी.

एच.

519

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

20. हालाँकि, बहुमत के निर्णय ने स्पष्ट किया कि यदि संसद सूची II और सूची III में किसी भी विषय के संबंध में कोई कानून बनाती है, तो जी. एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति संसद द्वारा अधिनियमित कानून द्वारा सीमित होगी। यह अभिनिर्धारित किया गया कि:

" 284.15. अनुच्छेद 239-ए. ए. के खंड (3) (ए) और (4) के एक संयुक्त पठन से पता चलता है कि एन. सी. टी. डी. सरकार की कार्यकारी शक्ति दिल्ली विधानसभा की विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है और तदनुसार,

दिल्ली के मंत्रिपरिषद की कार्यकारी शक्ति समवर्ती सूची के सभी विषयों और सभी पर फैली हुई है, लेकिन तीन

राज्य सूची में बहिष्कृत विषय। तथापि, यदि संसद राज्य सूची में आने वाले कुछ विषयों के संबंध में कानून बनाती है या

ग

समवर्ती सूची में, राज्य की कार्यकारी कार्यवाई संसद द्वारा बनाए गए कानून के अनुरूप होनी चाहिए। (sic) "(जोर देना आपूर्ति की गई)

21. उपरोक्त विचार न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने भी अपनी सहमति में लिया था:

डी.

"316..... अनुच्छेद 239 ए के खंड 2 और खंड 3 के प्रावधानों से संकेत मिलता है कि एन. सी. टी. की विधान सभा को संवैधानिक दर्जा प्रदान करते हुए, संविधान ने अपनी विधायी शक्तियों के दायरे को पहले अपनी क्षमता से कुछ विषयों को अलग करके (उन्हें संसद में निहित करके) और दूसरा, संसद को राज्य और समवर्ती सूचियों दोनों में आने वाले मामलों पर कानून बनाने में सक्षम बनाकर सीमित कर दिया है। इसके अलावा, जिन विषयों को इसे सौंपा गया है, विधानसभा का विधायी प्राधिकरण अनन्य नहीं है और संसद द्वारा अधिनियमित कानूनों के अधीन है।"

ई.

च

22. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में आधिकारिक रूप से कहा गया कि एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति सूची II और III में सभी विषयों तक फैली हुई है, सिवाय उन विषयों के जिन्हें स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। हालांकि, अनुच्छेद 239 ए (3) (बी) को देखते हुए, संसद के पास एन. सी. टी. डी. के लिए सूची II और III में सभी विषयों के संबंध में कानून बनाने की शक्ति है।

जी.

(ग) "जहाँ तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" 23. भारत संघ द्वारा यह तर्क दिया गया है कि वाक्यांश 'में'

जहाँ तक ऐसा कोई मामला अनुच्छेद में केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है

239 ए. ए. का अर्थ संविधान पीठ द्वारा नहीं लगाया गया है, और यह वाक्यांश एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को सीमित करता है।

एच.

520

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

24. हालाँकि, 2018 के संविधान पीठ के फैसले में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय का संदर्भ दिया जाना चाहिए, जो उपरोक्त वाक्यांश से संबंधित है। यह अभिनिर्धारित किया गया कि:

“जहाँ तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों 460 पर लागू होता है। राज्य सूची और सातवीं अनुसूची की समवर्ती सूची में, कई प्रविष्टियाँ हैं जो "राज्य" अभिव्यक्ति का उपयोग करती हैं। इन प्रविष्टियों को नीचे स्पष्ट रूप से सूचीबद्ध किया गया है:

[...]

461. अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) एन. सी. टी. की विधान सभा को प्रविष्टि 1,2 और 18 (और प्रविष्टि 64,65 और 66 जहाँ तक वे पहले की प्रविष्टियों से संबंधित हैं) और समवर्ती को छोड़कर राज्य सूची के मामलों पर कानून बनाने की अनुमति देता है।

ग

सूची ", जहाँ तक ऐसा कोई भी मामला संघ पर लागू होता है

क्षेत्र "। अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) के इन शब्दों की समझ बनाने में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कन्नियन में निर्णय से लेकर एन. डी. एम. सी. में नौ-न्यायाधीशों की पीठ के फैसले तक, यह माना गया है कि अनुच्छेद 246 में "राज्य" अभिव्यक्ति में एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल नहीं है। "जहाँ तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता है कि एन. सी. टी. की विधानसभा को राज्य या समवर्ती सूचियों में किसी भी विषय पर कानून बनाने की कोई शक्ति नहीं होगी, केवल उस विशेष प्रविष्टि में "राज्य" अभिव्यक्ति का उपयोग करके। यह उपरोक्त शब्दों का सही पठन नहीं है।

डी.

ई.

अनुच्छेद 239-ए (3) (ए)। जैसा कि हम नीचे देखते हैं, संसद ने भी उनका इस तरह से अर्थ नहीं निकाला है।

च

462. जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम की धारा 7 (5) में प्रावधान है कि विधानसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का वेतन कानून द्वारा विधानसभा द्वारा तय किया जा सकता है। धारा 19 में प्रावधान है कि विधान सभा के सदस्यों को विधान सभा द्वारा कानून द्वारा निर्धारित वेतन और भत्ते प्राप्त होंगे। धारा 43 (3) इसी तरह प्रदान करती है कि मंत्रियों के वेतन और भत्ते विधानसभा द्वारा निर्धारित किए जाएंगे। हालांकि, धारा 24 में प्रावधान है कि इस उद्देश्य के लिए एक विधेयक राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित रखा जाना चाहिए।

जी.

संसद ने उपरोक्त प्रावधानों को तब तक अधिनियमित नहीं किया होगा जब तक कि राज्यों में विधायी क्षमता ए पर न हो।

एच.

521

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

विषय से ऊपर।राज्य के विधानमंडल के सदस्यों (अध्यक्ष और उपाध्यक्ष सहित) और राज्य के मंत्रियों के वेतन और भत्तों से संबंधित विषय राज्य सूची की प्रविष्टि 38 और प्रविष्टि 40 द्वारा शासित होते हैं।जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम इन विषयों पर कानून बनाने के लिए एन. सी. टी. की विधान सभा की विधायी क्षमता को मान्यता देता है।इन प्रविष्टियों में "राज्य" शब्द का उपयोग विधान सभा के अधिकार क्षेत्र से वंचित नहीं करता है।न ही अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) के शब्द बहिष्कृत या अक्षम करने वाले प्रकृति के हैं।

463. उपरोक्त कथन का उद्देश्य यह इंगित करना है कि

ग

"राज्य" अभिव्यक्ति अपने आप में इस बात का निर्णायक नहीं है कि संविधान का कोई विशेष प्रावधान संघ पर लागू होगा या नहीं।

क्षेत्र।इसी तरह, यह भी कहा जा सकता है कि

सामान्य खंड अधिनियम (जिसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल है) की धारा 3 (58) में राज्य शब्द अनिवार्य रूप से संविधान में "राज्य" के सभी संदर्भों को नियंत्रित नहीं करेगा।अगर ऐसा है तो

डी.

कुछ ऐसा जो विषय या संदर्भ में प्रतिकूल है, धारा 3 (58) में समावेशी परिभाषा लागू नहीं होगी।यह इस न्यायालय से निकले उदाहरण में स्पष्ट किया गया है।कुछ संदर्भों में, यह माना गया है कि "राज्य" अभिव्यक्ति में केंद्र शासित प्रदेश शामिल नहीं होंगे, जबकि अन्य संदर्भों में धारा 3 (58) में परिभाषा दी गई है।

ई.

लागू किया गया है।इसलिए, "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" अभिव्यक्ति बहिष्करण में से एक नहीं है और न ही इसे विषय या संदर्भ के बावजूद ऐसा माना जा सकता है।"

(जोर दिया गया) यह स्पष्ट है कि सहमत राय में कहा गया है कि वाक्यांश "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" एक समावेशी शब्द है, और "बहिष्करण में से एक नहीं" है।न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने इस शब्द की व्याख्या इस अर्थ में की कि एन. सी. टी. डी. की विधानसभा के पास राज्य में किसी भी विषय या समवर्ती सूचियों पर कानून बनाने की शक्ति होगी, सिवाय बहिष्कृत विषयों के।

च

जी.

25. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में अपनी सहमति में, न्यायमूर्ति भूषण ने उक्त वाक्यांश की व्याख्या निम्नलिखित शब्दों में की:

"551. यह प्रावधान बहुत स्पष्ट है जो विधान सभा को किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने का अधिकार देता है

एच.

522

राज्य सूची या समवर्ती सूची में सूचीबद्ध, सिवाय बहिष्कृत प्रविष्टियों के। एक मुद्दा यह है कि राज्य सूची या समवर्ती सूची में कानून बनाने की शक्ति को "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश द्वारा सीमित किया जाता है।

552. सूची II और सूची III में प्रविष्टियों पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि केंद्र शासित प्रदेश का कोई उल्लेख नहीं है। सूची II और III के अवलोकन से संकेत मिलता है कि हालांकि विभिन्न प्रविष्टियों में "राज्य" शब्द का विशिष्ट उल्लेख है, लेकिन किसी भी राज्य में "केंद्र शासित प्रदेश" का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं है।

प्रविष्टियाँ। उदाहरण के लिए, सूची II प्रविष्टि **12,26,37,38,39,40,41,42** और **43** में "राज्य" शब्द का विशिष्ट उल्लेख है। इसी तरह, सूची III प्रविष्टि **3,4** और **43** में "राज्य" शब्द का उल्लेख है। उपरोक्त

ग

वाक्यांश "जहाँ तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेश पर लागू होता है" अप्रासंगिक है। इसके दो कारण हैं। संविधान के प्रारंभ पर, केंद्र शासित प्रदेशों की कोई अवधारणा नहीं थी और केवल भाग ए, बी, सी और डी राज्य थे। सातवें संवैधानिक संशोधन के बाद, जिसमें पहली अनुसूची के साथ-साथ संविधान के अनुच्छेद 2 में संशोधन किया गया था, जिसमें अनुच्छेद 1 के साथ-साथ पहली अनुसूची दोनों में केंद्र शासित प्रदेश का उल्लेख शामिल था। इस प्रकार, उपरोक्त वाक्यांश का उपयोग राज्य सूची और समवर्ती सूची से संबंधित मामलों सहित सभी मामलों पर दिल्ली के लिए कानून बनाने की शक्तियों को स्वचालित रूप से प्रदान करने की सुविधा के लिए किया गया था, सिवाय इसके कि एक प्रविष्टि इंगित करती है कि केंद्र शासित प्रदेश के लिए इसकी प्रयोज्यता निहितार्थ या किसी भी स्पष्ट संवैधानिक प्रावधान से बाहर है।

डी.

ई.

553. इस प्रकार, एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को समझने में कोई कठिनाई नहीं है जैसा कि अनुच्छेद 239 ए. ए. में स्पष्ट रूप से लिखा गया है। न्यायमूर्ति भूषण ने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश का उपयोग दिल्ली विधानसभा की विधायी शक्ति को प्रतिबंधित करने के लिए नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस वाक्यांश का उपयोग बहिष्कृत प्रविष्टियों को छोड़कर राज्य सूची और समवर्ती सूची से संबंधित सभी मामलों सहित दिल्ली के लिए कानून बनाने की शक्तियों को स्वचालित रूप से प्रदान करने के लिए किया गया था।

च

जी.

27. बहुमत के निर्णय ने उक्त वाक्यांश की व्याख्या पर सीधा अवलोकन नहीं किया। हालाँकि, तर्क ए को इंगित करता है

एच.

523

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

कि इस वाक्यांश पर व्यापक अर्थ में विचार किया जाना था। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बहुमत के फैसले में कहा गया है कि एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के तहत बहिष्कृत विषयों को छोड़कर विषयों पर अपनी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है। इसका मतलब है कि कार्यकारी शक्ति विधायी शक्ति से प्रवाहित होती है, यानी यदि एन.

सी. टी. डी. के पास सूची II में किसी विषय पर कार्यकारी शक्ति है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि उस सूची की प्रविष्टियों के तहत उसके पास विधायी शक्ति है। बहुमत के फैसले में कहा गया कि संघ के पास एन. सी. टी. डी. के संबंध में केवल "राज्य सूची के उन तीन मामलों के लिए विशेष कार्यकारी शक्ति होगी जिनके संबंध में दिल्ली विधानसभा की शक्ति को बाहर रखा गया है।" यह भी माना गया कि "अन्य सभी मामलों" के संबंध में, कार्यकारी शक्ति का प्रयोग जी. एन. सी. टी. डी. द्वारा किया जाना है। इसका मतलब यह होगा कि एन. सी. टी. डी. के पास "अन्य सभी मामलों" पर कार्यकारी शक्ति है। यह इंगित करता है कि बहुमत के निर्णय ने अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) की व्याख्या की और वाक्यांश "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेश पर लागू होता है" राज्य सूची के तीन मामलों को छोड़कर "अन्य सभी मामलों" पर एन. सी. टी. डी. को विधायी शक्ति देने के लिए, जिनके संबंध में एन. सी. टी. डी. की विधानसभा की शक्ति को बाहर रखा गया है।

ग

डी.

28. उपरोक्त चर्चा का तात्पर्य है कि 2018 के संविधान पीठ के फैसले में सभी पांच न्यायाधीशों ने अनुच्छेद 239 ए में "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश को बहिष्कृत नहीं किया।

ई.

29. हालाँकि, 2019 के विभाजित फैसले में उनकी राय में, न्यायमूर्ति भूषण का विचार इसके विपरीत था। उन्होंने कहा कि 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत की राय इस वाक्यांश की व्याख्या नहीं करती है कि "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है":

च

"187. जैसा कि ऊपर देखा गया है, संविधान पीठ ने ऊपर निकाले गए पैरा 39 में प्रत्यर्थी के वकील की दलीलों पर ध्यान दिया है कि अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) में "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" शब्द दिल्ली विधानसभा की विधायी शक्ति को केवल उन प्रविष्टियों तक सीमित करते हैं जो केवल केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होती हैं।

जी.

सभी नहीं। इसके उत्तर पर विस्तृत चर्चा न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा द्वारा व्यक्त बहुमत की राय में नहीं पाई जाती है।

सी. जे. (जैसा कि वे तब थे)। संविधान पीठ के समक्ष प्रस्तुत किया गया था, जिस प्रस्तुतिकरण पर डॉ. न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ द्वारा व्यक्त अन्य दो रायों में विचार किया गया था और

एच.

524

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

स्वयं, यह ध्यान रखना उपयोगी है कि संविधान पीठ में अन्य दो रायों में क्या कहा गया है।

191. डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़, जे., ने इस प्रकार अभिनिर्धारित किया कि "राज्य" अभिव्यक्ति अपने आप में इस बात का निर्णायक नहीं है कि संविधान का कोई विशेष प्रावधान केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होगा या नहीं। उनके लॉर्डशिप ने राय दी कि "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" अभिव्यक्ति बहिष्करण में से एक नहीं है और न ही इसे विषय या संदर्भ के बावजूद ऐसा माना जा सकता है।

192. मैंने पैरा 500,551 और 552 में उपरोक्त प्रस्तुतिकरण को भी निम्नलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया था:

ग

[...]

193. उपरोक्त पैराग्राफ में यह राय व्यक्त की गई है कि राज्य सूची और समवर्ती सूची से संबंधित सभी मामले दिल्ली विधानसभा के लिए उपलब्ध हैं, सिवाय इसके कि

जहाँ एक प्रविष्टि इंगित करती है कि केंद्र शासित प्रदेश के लिए इसकी प्रयोज्यता निहितार्थ या किसी भी अभिव्यक्ति द्वारा बाहर रखी गई है

डी.

संवैधानिक प्रावधान। इस प्रकार, निष्कर्ष यह है कि सूची II और सूची III की सभी प्रविष्टियाँ विधायी शक्ति का प्रयोग करने के लिए विधान सभा के लिए उपलब्ध हैं, सिवाय इसके कि जब किसी प्रविष्टि को निहितार्थ या किसी स्पष्ट प्रावधान द्वारा बाहर रखा गया हो।

ई.

194. दीपक मिश्रा, सी. जे. (जैसा कि वे तब थे) द्वारा दी गई बहुमत की राय "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" अभिव्यक्ति पर विचार नहीं करने के बाद, इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि संविधान पीठ की बहुमत की राय में कोई राय व्यक्त नहीं की गई है।

च

(जोर दिया गया) 30। हम 2019 के विभाजित फैसले में न्यायमूर्ति भूषण के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। जैसा कि पहले संकेत दिया गया था, 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत के फैसले ने एन. सी. टी. डी. को बहिष्कृत विषयों को छोड़कर विशाल कार्यकारी और सह-व्यापक विधायी शक्तियां प्रदान करने के लिए अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) की व्यापक व्याख्या प्रदान की। बहुमत की राय और न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति भूषण की सहमति वाली राय के संयुक्त अध्ययन से संकेत मिलता है कि "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्तियों को प्रतिबंधित नहीं करता है।

जी.

एच.

525

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

31. जबकि 2018 के संविधान पीठ के फैसले में "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश की व्याख्या पर पर्याप्त स्पष्टता प्रदान की गई है, हम भारत संघ द्वारा दिए गए तर्कों से निपटने के लिए आवश्यक पाते हैं कि इस वाक्यांश को सूची II में कुछ विषयों (पहले से ही बहिष्कृत विषयों के अलावा) पर एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को सीमित करने के लिए प्रतिबंधात्मक तरीके से पढ़ा जाना चाहिए।

D. केंद्र शासित प्रदेशों का 'वर्ग'

32. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत की राय ने एन. सी. टी. डी. के विशेष दर्जे को स्वीकार किया। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संदर्भ, जिसके कारण केंद्र शासित प्रदेशों की अवधारणा बनी, संघ के इस तर्क का आकलन करने के लिए उपयोगी होगा कि केंद्र शासित प्रदेशों का एक वर्ग मौजूद है। जब भारतीय संविधान को अपनाया गया था, तो भारतीय संघ के राज्यों को भाग ए, भाग बी और भाग सी राज्यों में वर्गीकृत किया गया था। दिल्ली एक भाग सी राज्य था और भाग सी राज्यों की सरकार

अधिनियम 1951 द्वारा शासित था। अधिनियम ने दिल्ली के लिए एक मंत्रिपरिषद और निर्वाचित प्रतिनिधियों के विधानमंडल के लिए राज्य सूची या समवर्ती सूची में सूचीबद्ध किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने की शक्ति प्रदान की, सिवाय उन विषयों के जिन्हें स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया था। बहिष्कृत विषय 'नगर निगम' के विषय के साथ अनुच्छेद 239 एए के अनुरूप थे।' ये शक्तियाँ प्रकृति में सीमित थीं और संसद की विधायी शक्ति के अधीन थीं।

ग

डी.

ई.

33. मोटे तौर पर फजल अली आयोग की सिफारिशों पर आधारित और राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के प्रावधानों को लागू करने के लिए बनाए गए संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956, 9 ने अन्य बातों के साथ-साथ राज्यों के पहले के भाग ए, भाग बी और भाग सी राज्यों और भाग डी क्षेत्रों में वर्गीकरण को समाप्त कर दिया। इसके बजाय, इसने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को पेश किया। नवनिर्मित केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन संविधान के अनुच्छेद 239 के अनुसार एक प्रशासक के माध्यम से कार्य करने वाले राष्ट्रपति द्वारा किया जाना था।

च

34. हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि फजल अली आयोग दिल्ली की विशेष जरूरतों और एन. सी. टी. डी. के निवासियों की स्थानीय जरूरतों और इच्छाओं के लिए लेखांकन के महत्व के प्रति सचेत था। इसमें कहा गया है कि: "593. [...] इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए, हमारा निश्चित रूप से यह विचार है कि नगरपालिका की स्वायत्तता

जी.

9 "1956 संविधान संशोधन "

एच.

526

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

निगम, जो कुछ महत्वपूर्ण संघीय राजधानियों की तुलना में अधिक स्थानीय स्वायत्तता प्रदान करेगा, दिल्ली राज्य की समस्या का अधिकार और वास्तव में एकमात्र समाधान है।"

35. इसके तुरंत बाद, 1962 में, संविधान (चौदहवां संशोधन) अधिनियम 1956 द्वारा संविधान में अनुच्छेद 239 ए जोड़ा गया। इसने कुछ केंद्र शासित प्रदेशों के लिए स्थानीय विधानसभाओं या एक मंत्रिपरिषद या दोनों के निर्माण की परिकल्पना की। इस प्रकार, केंद्र शासित प्रदेशों के लिए शासन संरचना में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया गया। अनुच्छेद 239 ए ने केंद्र शासित प्रदेशों की एक अलग श्रेणी बनाई क्योंकि सभी केंद्र शासित प्रदेशों को अब केवल राष्ट्रपति द्वारा प्रशासित करने की परिकल्पना नहीं की गई थी। अनुच्छेद 239 ए को लागू करने के बाद केंद्र शासित प्रदेश सरकार अधिनियम 1963 लागू किया गया। वर्तमान में, केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी को इस अधिनियम द्वारा परिकल्पित शासन संरचना के संदर्भ में प्रशासित किया जाता है।

ग

36. संविधान (उनसठवां संशोधन) अधिनियम 1991 10 द्वारा संविधान में अनुच्छेद 239 एए जोड़ा गया था। इसने केंद्र शासित प्रदेशों की तुलना में एन. सी. टी. डी. के लिए शासन की एक अनूठी संरचना पेश की। उद्देश्यों और कारणों का विवरण इस प्रकार है:

डी.

“1. ... इस तरह की विस्तृत जांच और जांच के बाद, इसने सिफारिश की कि दिल्ली को एक केंद्र शासित प्रदेश बना रहना चाहिए और आम आदमी के लिए चिंता के मामलों से निपटने के लिए उचित शक्तियों के साथ ऐसी विधानसभा के लिए जिम्मेदार एक विधान सभा और एक मंत्रिपरिषद प्रदान की जानी चाहिए। समिति ने यह भी सिफारिश की कि स्थिरता और स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए,

ई.

राष्ट्रीय राजधानी को केंद्र शासित प्रदेशों के बीच एक विशेष दर्जा देने के लिए संविधान में व्यवस्थाएं शामिल की जानी चाहिए।”

च

(जोर दिया गया) 37। 1991 के संविधान संशोधन ने केंद्र शासित प्रदेशों के शासन में एक नया आयाम लाया। अनुच्छेद 239 ए के प्रावधानों के आधार पर, एन. सी. टी. डी. एकमात्र केंद्र शासित प्रदेश बन गया जिसे संवैधानिक रूप से अनिवार्य विधायिका और मंत्रिपरिषद का विशेष दर्जा प्राप्त था। यह केंद्र शासित प्रदेशों के लिए शासन के पहले के मॉडल से अलग था। इसके विपरीत, अनुच्छेद 239 ए, संवैधानिक रूप से एक विधायिका को अनिवार्य करता है और एन. सी. टी. डी. के लिए विधायी और कार्यकारी शक्ति का दायरा निर्धारित करता है।

जी.

एच.

10 "1991 संविधान संशोधन "

527

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

38. अनुच्छेद 239 ए अन्य केंद्र शासित प्रदेशों की तुलना में एन. सी. टी. डी. के शासन की संरचनाओं में व्यापक भिन्नता पैदा करता है, यहां तक कि जिस तरह से उन्हें विधायी शक्तियां दी गई हैं, उसके संबंध में भी मतभेद हैं। उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 239 ए में प्रावधान है कि संसद पुडुचेरी के लिए एक विधानमंडल बना सकती है। दूसरी ओर, एन. सी. टी. डी. के लिए, संविधान ने स्वयं (अनुच्छेद 239 ए. ए. के संदर्भ में) एक विधान सभा और एक मंत्रिपरिषद का निर्माण किया है। एन. सी. टी. डी. की संवैधानिक रूप से संहिताबद्ध स्थिति के परिणामस्वरूप अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की तुलना में शासन संरचना में काफी अंतर पैदा होता है।

39. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय ने इस पहलू पर स्पष्ट रूप से चर्चा की और कहा कि केंद्र शासित प्रदेशों का कोई भी सजातीय वर्ग बाहर नहीं निकलता है। इसके बजाय, केंद्र शासित प्रदेश विभिन्न श्रेणियों में आते हैं:

ग

“453. बहुमत [नई दिल्ली नगर परिषद बनाम पंजाब राज्य] के फैसले में यह भी कहा गया है कि सभी केंद्र शासित प्रदेश

डी.

समान रूप से स्थित नहीं हैं। पहली श्रेणी में केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं जिनके पास कोई विधायिका नहीं है। दूसरी श्रेणी में केंद्र शासित प्रदेश सरकार अधिनियम, 1963 के तहत संसद द्वारा अधिनियमित कानून द्वारा बनाई गई विधानसभाएं हैं। तीसरा।

श्रेणी दिल्ली है जिसकी अनुच्छेद 239-ए के तहत "विशेष विशेषताएं" हैं। हालांकि केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली "अपने आप में एक वर्ग में है", यह "निश्चित रूप से अनुच्छेद 246 या संविधान के भाग VI के अर्थ के भीतर एक राज्य नहीं है"। न्यायालय ने कहा कि विभिन्न केंद्र शासित प्रदेश विकास के विभिन्न चरणों में हैं।

ई.

475.1.संविधान में अनुच्छेद 239-ए की शुरुआत घटक शक्ति के प्रयोग का परिणाम था।साठ -

च

संविधान के नौवें संशोधन के दिल्ली को राष्ट्रीय दर्जा देने के लिए महत्वपूर्ण परिणाम हैं।

राजधानी क्षेत्र, यद्यपि संविधान के भाग **VIII** द्वारा शासित केंद्र शासित प्रदेश के तहत।"

जी.

(जोर दिया गया) 40।केंद्र शासित प्रदेशों के साथ संवैधानिक व्यवहार में यह भिन्नता और साथ ही एक सजातीय वर्ग की अनुपस्थिति केवल केंद्र शासित प्रदेशों के लिए अद्वितीय नहीं है।संविधान विशिष्ट क्षेत्रीय आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए की जा रही विशेष व्यवस्थाओं के उदाहरणों से भरा हुआ है

एच.

528

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

विशिष्ट क्षेत्रों में राज्यों का।इसलिए, एन. सी. टी. डी. पहला क्षेत्र नहीं है जिसे एक संवैधानिक प्रावधान के माध्यम से विशेष उपचार प्राप्त हुआ है, लेकिन यह एक और उदाहरण है-संविधान के अभ्यास के अनुरूप-ऐसी व्यवस्थाओं की परिकल्पना करना जो संघीय इकाइयों को उनकी विशिष्ट परिस्थितियों के लिए एक दूसरे से अलग मानते हैं।उदाहरण के लिए, संविधान के अनुच्छेद 371 में विभिन्न राज्यों के कुछ क्षेत्रों के साथ-साथ कुछ राज्यों की संपूर्णता के लिए विशेष प्रावधान हैं।अनुच्छेद 371 के तहत बनाए गए विभिन्न अनुच्छेदों के सीमांत नोट कई राज्यों का अवलोकन प्रदान करते हैं जिनके लिए असममित संघवाद की प्रकृति में व्यवस्थाएं देश भर के क्षेत्रों के मतभेदों और विशिष्ट आवश्यकताओं को समायोजित करने की भावना से की जाती हैं:"371. महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के संबंध में विशेष प्रावधान

ग

371-ए. नागालैंड राज्य 371-बी के संबंध में विशेष प्रावधान। असम राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान 371-सी. मणिपुर राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान 371-डी. आंध्र प्रदेश राज्य या तेलंगाना राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान]

डी.

371-ई. आंध्र प्रदेश में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना 371-एफ. सिक्किम राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान 371-जी. मिजोरम राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान 371-एच. अरुणाचल प्रदेश राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान।

ई.

371-। गोवा राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान 371-जे। कर्नाटक राज्य के संबंध में विशेष प्रावधान "41. हमारे संविधान की रूपरेखा ऐसी है कि यह विभिन्न क्षेत्रों के हितों को समायोजित करती है।विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक बड़ा संवैधानिक छत्र प्रदान करते हुए, यह विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय आकांक्षाओं को संरक्षित करता है।"विविधता में एकता का उपयोग न केवल आम बोलचाल में किया जाता है, बल्कि यह हमारी संवैधानिक संरचना में भी अंतर्निहित है।संविधान की हमारी व्याख्या को अंतर्निहित सिद्धांतों को महत्वपूर्ण महत्व देना चाहिए।

च

जी.

42. इसलिए, हम सॉलिसिटर जनरल के इस तर्क से सहमत नहीं हैं कि एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति ए.

एच.

529

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

वे विषय जो केंद्र शासित प्रदेशों के लिए एक वर्ग के रूप में उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि अनुच्छेद 239 एए "ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" शब्द का उपयोग करता है। इस खंड के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समान शासन संरचना वाले केंद्र शासित प्रदेशों का कोई सजातीय वर्ग नहीं है।

ई. स्थानीय हितों और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन बनाए रखना

43. भारत संघ ने कहा है कि अनुच्छेद 239 एए में "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश की समग्र व्याख्या नहीं की जा सकती है क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी के शासन में संघ की प्रमुख रुचि है और इसलिए इस वाक्यांश को संकीर्ण तरीके से पढ़ा जाना चाहिए। इसने प्रस्तुत किया है कि चूंकि दिल्ली केंद्र सरकार की पीठ है, इसलिए राष्ट्रीय हितों को स्थानीय हितों की उलझनों से परे प्राथमिकता दी जाती है। हम पाते हैं कि यह तर्क अनुच्छेद 239 एए (3) के पाठ के आलोक में योग्यता नहीं रखता है। इस तर्क को 2018 के संविधान पीठ के फैसले में पहले ही संबोधित किया जा चुका था। 44. अनुच्छेद 239 एए (3) (ए) एन. सी. टी. डी. को विधायी शक्ति प्रदान करता है। हालांकि, यह सूची II में सभी प्रविष्टियों पर एन. सी. टी. डी. को विधायी शक्ति प्रदान नहीं करता है। अनुच्छेद 239 एए (3) यह सुनिश्चित करने के लिए कई सुरक्षा उपाय प्रदान करता है कि संघ के हितों की रक्षा की जाए। पहला, खंड (3) का उपखंड (ए) एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से सूची II में तीन प्रविष्टियों को हटा देता है। इसमें प्रावधान है कि एन. सी. टी. डी. के पास "राज्य सूची की प्रविष्टियों 1, 2 और 18 और उस सूची की प्रविष्टियों 64, 65 और 66 के संबंध में मामलों पर कानून बनाने की शक्ति नहीं होगी, जहां तक वे उक्त प्रविष्टियों 1, 2 और 18 से संबंधित हैं।" दूसरा, खंड (3) का उपखंड (बी) स्पष्ट करता है कि संसद के पास केंद्र शासित प्रदेश के लिए "किसी भी मामले" पर कानून बनाने की शक्ति है (उन विषयों सहित जिनके संबंध में एन. सी. टी. डी. के पास अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के तहत विधायी शक्ति है)। दूसरे शब्दों में, संसद के पास एन. सी. टी. डी. के लिए सातवीं अनुसूची की तीन सूचियों में से किसी भी विषय पर कानून बनाने की पूर्ण शक्ति है। तीसरा, अनुच्छेद 239 एए (3) (सी) में प्रावधान है कि जहां एन. सी. टी. डी. की विधान सभा द्वारा अधिनियमित किसी कानून और संसद द्वारा अधिनियमित किसी कानून के बीच विरोधाभास है, वहां बाद वाला प्रबल होगा, और विधान सभा द्वारा अधिनियमित कानून, "तिरस्कार की सीमा तक, शून्य" होगा। अनुच्छेद 254 के विपरीत, जो केवल समवर्ती सूची के विषयों पर संसद की सर्वोच्च शक्ति प्रदान करता है, संसद के पास एन. सी. टी. डी. के संबंध में सूची II और सूची III दोनों के विषयों पर सर्वोच्च शक्ति है। चौथा, अनुच्छेद 239 एए (सी) के दूसरे परंतुक में प्रावधान है कि संसद किसी भी समय इस संबंध में कोई भी कानून बना सकती है।

ग

डी.

ई.

च

जी.

एच.

530

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

एन. सी. टी. डी. की विधान सभा द्वारा इस प्रकार बनाए गए कानून को जोड़ने, संशोधन करने, बदलने या निरस्त करने वाली कानून सहित एक ही मामला। पाँचवाँ, अनुच्छेद 239 ए (7) (ए) के तहत, संसद कानून द्वारा अनुच्छेद 239 ए के पूर्वगामी खंडों में प्रावधानों को प्रभावी बनाने या पूरक बनाने और "सभी आनुषंगिक या परिणामी मामलों" के लिए प्रावधान कर सकती है। अनुच्छेद 239 ए (7) (बी) में कहा गया है कि ऐसी कानून को अनुच्छेद 368 के प्रयोजनों के लिए संविधान का संशोधन नहीं माना जाएगा, जो संविधान में संशोधन करने की शक्ति और प्रक्रिया से संबंधित है। इस प्रकार, अनुच्छेद 239 ए (3) एन. सी. टी. डी. और भारत संघ के हितों के बीच संतुलन बनाता है।

45. इस संवैधानिक संतुलन का विश्लेषण 2018 की संविधान पीठ के फैसले में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय में निम्नलिखित शब्दों में किया गया है:

ग

“ लोकतंत्र के मौलिक संवैधानिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, उपरोक्त तत्वों में से दूसरे के साथ संतुलन बनाना होगा जो एन. सी. टी. के विशेष दर्जे को मान्यता देते हैं। एन. सी. टी. अपने क्षेत्र के निवासियों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन यह एक राजधानी शहर के रूप में अपने चरित्र में राष्ट्रीय शासन में अंतर्निहित राजनीतिक प्रतीकवाद का प्रतीक है। एन. सी. टी. के शासन से संबंधित परिस्थितियों में प्रत्यक्ष और

डी.

ई.

राष्ट्र के सामूहिक कल्याण पर तत्काल प्रभाव। सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस और भूमि के विषयों को विधायी शक्ति से और अनिवार्य रूप से एन. सी. टी. की कार्यकारी शक्ति से बाहर रखने का यही तर्क है। इन विचारों के लिए अनिवार्य रूप से दोनों सिद्धांतों के बीच सावधानीपूर्वक संतुलन की आवश्यकता होगी।” 46. इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि एन. सी. टी. डी. की विधान सभा राज्य सूची की सभी प्रविष्टियों पर अनन्य विधायी शक्तियों का प्रयोग नहीं करती है। यह केवल एक सीमांकित संवैधानिक क्षेत्र में है कि यह अपनी विधायी शक्ति का प्रयोग करने में सक्षम है। संसद, 1991 के संविधान संशोधन के आधार पर, पहले से ही राष्ट्रीय महत्व के कुछ विषयों को अपने लिए आरक्षित कर चुकी है। इसके अलावा, संसद के पास अनुच्छेद 239 ए (3) और अनुच्छेद 239 ए (7) के उपखंड (बी) और (सी) के संदर्भ में एन. सी. टी. डी. के संबंध में विधायी शक्तियां हैं। अनुच्छेद 239 ए. ए. (3 (बी) और अनुच्छेद 239 ए. ए. (7) का आशय और उद्देश्य संसद को एक विस्तारित विधायी क्षमता प्रदान करना है, जब यह जी. एन. सी. टी. डी. की बात आती है तो स्पष्ट रूप से क्योंकि यह देश की राजधानी है और इसलिए, विभिन्न विचारों के साथ निपटा जाना चाहिए। इस तरह से, संसद अपने ए में कार्य कर रही है

च

जी.

एच.

531

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

अनुच्छेद 239 ए को लागू करते समय घटक शक्ति ने पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की है और राष्ट्रीय हितों से संबंधित चिंताओं की रक्षा करने की आवश्यकता से अवगत थी। संविधान संसद को इस हद तक शक्तियां प्रदान करता है कि यह संविधान में संशोधन का प्रभाव डालेगा। जैसा कि चर्चा की गई है, एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्तियाँ सीमित हैं। यदि हम वाक्यांश की व्याख्या करते हैं "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" की व्याख्या इस तरह से की जाती है कि अनुच्छेद 239 ए (3) द्वारा पहले से ही बाहर की गई प्रविष्टियों की अधिक संख्या को बाहर कर दिया जाए, तो यह एन. सी. टी. डी. को "विशेष दर्जा" देने के उद्देश्य को विफल कर देगा।

च. "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" की समावेशी व्याख्या

ग

47. भारत संघ ने प्रस्तुत किया कि वाक्यांश "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" विशेष रूप से बहिष्करण का शब्द है न कि समावेश का शब्द। इसने तर्क दिया कि यह वाक्यांश उन प्रविष्टियों के अलावा सूची II में प्रविष्टियों पर विधायी और कार्यकारी शक्ति को सीमित करने के लिए पेश किया गया था जिन्हें अनुच्छेद 239 एए द्वारा स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। अब हम उपरोक्त तर्कों का विश्लेषण करने के लिए संविधान के अन्य प्रावधानों का उल्लेख करेंगे।

डी.

48. संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची में प्रविष्टियों पर कानून बनाने की संसद और राज्यों की विधानसभाओं की शक्ति संविधान के अनुच्छेद 246 से आती है। अनुच्छेद 246 (3) राज्यों की विधानसभाओं को राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में उस राज्य के लिए कानून बनाने की विशेष शक्ति प्रदान करता है। अनुच्छेद 246 (4) में प्रावधान है कि संसद को भारत के क्षेत्र के किसी भी हिस्से के लिए किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने की शक्ति है जो किसी राज्य में शामिल नहीं है, भले ही ऐसा मामला राज्य सूची में गिना गया हो।

ई.

च

49. अनुच्छेद 366 संविधान में उपयोग की जाने वाली विभिन्न अभिव्यक्तियों के अर्थ प्रदान करता है, जब तक कि संदर्भ अन्यथा आवश्यक न हो। प्रावधान में कहा गया है कि जब तक संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, तब तक किसी अनुच्छेद में परिभाषित अभिव्यक्तियों के अर्थ प्रावधान में उन्हें क्रमशः दिए गए होंगे। अनुच्छेद 366 (26 बी) में प्रावधान है कि अनुच्छेद 246 ए, 268, 269, 269 ए और 279 ए के संदर्भ में 'राज्य' में विधायिका वाला केंद्र शासित प्रदेश शामिल है। संविधान (एक सौ पहला संशोधन) अधिनियम 2016 द्वारा संविधान में शामिल अनुच्छेद 366 (26 बी), वस्तु और सेवा कर व्यवस्था के उचित संचालन को सक्षम करने के लिए संविधान में केवल पांच अन्य अनुच्छेदों के संदर्भ में 'राज्य' का अर्थ प्रदान करता है। हालांकि, अनुच्छेद 366 के तहत 'राज्य' की सार्वभौमिक परिभाषा प्रदान नहीं की गई है।

जी.

एच.

532

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

50. अनुच्छेद 367 (1) में प्रावधान है कि जब तक संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, तब तक सामान्य खंड अधिनियम 1897-11, संविधान के प्रावधानों के अनुरूप लाने के लिए अनुच्छेद 372 के तहत बनाए गए किसी भी राष्ट्रपति के आदेश द्वारा किए गए किसी भी अनुकूलन और संशोधनों के अधीन, संविधान की व्याख्या के लिए आवेदन करना है:

"367(1): जब तक संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, सामान्य खंड अधिनियम, 1897, अनुच्छेद 372 के तहत किए जाने वाले किसी भी अनुकूलन और संशोधनों के अधीन रहते हुए, इस संविधान की व्याख्या के लिए लागू होगा क्योंकि यह भारत डोमिनियन के विधानमंडल के एक अधिनियम की व्याख्या के लिए लागू होता है।"

51. अनुच्छेद 372 (2) में कहा गया है कि राष्ट्रपति आदेश द्वारा भारत के क्षेत्र में लागू किसी भी कानून के प्रावधानों में संशोधन और अनुकूलन कर सकते हैं ताकि इसे संविधान के प्रावधानों के अनुसार लाया जा सके। अनुच्छेद 372 (3) के तहत यह शक्ति राष्ट्रपति को केवल तीन साल के लिए दी गई थी और इस प्रकार, यह 25 जनवरी 1953 को समाप्त हो गई।

52. 1956 का संविधान संशोधन राज्यों के पुनर्गठन को प्रभावी बनाने के लिए संविधान के प्रावधानों में आवश्यक संशोधन करने के लिए पेश किया गया था। अनुच्छेद 372 ए, जिसे 1956 के संविधान संशोधन के अनुसार पेश किया गया था, राष्ट्रपति को संशोधन से ठीक पहले भारत में लागू कानून के प्रावधानों में संशोधन और अनुकूलन करने की शक्ति प्रदान करता है, ताकि इसे संविधान के प्रावधानों के अनुरूप बनाया जा सके।

ग

डी.

ई.

53. राष्ट्रपति ने कानूनों के अनुकूलन (संख्या 1) आदेश, 1956 द्वारा सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) में संशोधन किया। 1956 में संशोधन के बाद धारा 3 (58) में कहा गया है कि 1956 के संविधान संशोधन के प्रारंभ से पहले की किसी भी अवधि के संबंध में 'राज्य' वाक्यांश का अर्थ एक भाग ए राज्य, एक भाग बी राज्य या एक भाग सी राज्य होगा और संशोधन के बाद की अवधि के संबंध में संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट एक राज्य शामिल होगा और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल होगा:

च

“(58) “राज्य”-(क) संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 के प्रारंभ से पहले की किसी भी अवधि के संबंध में, इसका अर्थ होगा एक भाग क राज्य, एक भाग ख राज्य या एक भाग ग राज्य; और (ख) ऐसे प्रारंभ के बाद की किसी भी अवधि के संबंध में, संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य का अर्थ होगा और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल होगा।

जी.

एच.

11 "सामान्य खंड अधिनियम "

533

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

54. अग्रिम बीमा निगम लिमिटेड बनाम.

गुरुदासमल, 12 इस न्यायालय की संविधान पीठ के समक्ष सवाल यह था कि क्या सूची I की प्रविष्टि 80 में 'राज्य' शब्द को केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल करने के लिए पढ़ा जा सकता है। प्रविष्टि 80 इस प्रकार है:

“80. किसी भी राज्य से संबंधित पुलिस बल के सदस्यों की शक्तियों और अधिकार क्षेत्र का उस राज्य के बाहर किसी भी क्षेत्र में विस्तार, लेकिन इस तरह से नहीं कि एक राज्य की पुलिस उस राज्य की सरकार की सहमति के बिना उस राज्य के बाहर किसी भी क्षेत्र में शक्तियों और अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने में सक्षम हो, जिसमें ऐसा क्षेत्र स्थित है; किसी भी राज्य से संबंधित पुलिस बल के सदस्यों की शक्तियों और अधिकार क्षेत्र का उस राज्य के बाहर के रेलवे क्षेत्रों में विस्तार।” 55. न्यायमूर्ति हिदायतुल्ला ने संविधान पीठ के लिए लिखते हुए इस तर्क को खारिज कर दिया कि सामान्य खंड अधिनियम के तहत 'राज्य' की संशोधित परिभाषा संविधान के प्रावधानों की व्याख्या पर लागू नहीं होगी। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 372 ए राष्ट्रपति को अनुकूलन की एक नई शक्ति प्रदान करता है और यह शक्ति अनुच्छेद 372 (2) के तहत राष्ट्रपति के पास मौजूद शक्ति के बराबर और अनुरूप है। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि जब तक कि संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, सामान्य खंड अधिनियम के तहत प्रदान की गई परिभाषा और अनुच्छेद 372 ए के तहत आदेश द्वारा संशोधित परिभाषा लागू की जाएगी।

ग

डी.

56. हालाँकि, शिव कृपाल सिंह बनाम वी. वी. गिरि, 13 के मामले में इस न्यायालय की एक अलग संविधान पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 372 ए के तहत प्रदत्त शक्ति के आधार पर अनुकूलन आदेश के तहत राष्ट्रपति द्वारा संशोधित सामान्य खंड अधिनियम के तहत परिभाषाएँ संविधान की व्याख्या पर लागू नहीं होती हैं। इस मामले में, मुद्दा यह था कि क्या अनुच्छेद 54 (जो राष्ट्रपति के चुनाव के लिए निर्वाचक मंडल का गठन करता है) में "राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य" वाक्यांश में केंद्र शासित प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होंगे। इस अदालत ने नकारात्मक जवाब दिया। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि अनुच्छेद 372 ए के तहत संशोधन केवल संसद के कानूनों की व्याख्या तक सीमित थे और संविधान की व्याख्या पर लागू नहीं होंगे क्योंकि अनुच्छेद 367 में निर्धारित किया गया है कि सामान्य खंड अधिनियम संविधान की व्याख्या पर लागू होगा, जो अनुच्छेद 372 के तहत किए गए ऐसे अनुकूलन के अधीन होगा। प्रावधान में यह प्रावधान नहीं है कि व्याख्या अनुच्छेद 372 ए के तहत किए गए अनुकूलन के अधीन भी होनी चाहिए। संसद ने द्वारा बनाई गई विसंगति का जवाब दिया

ई.

च

जी.

12 (1970) 1 एससीसी 633 13 एआईआर 1970 एससी 2097

एच.

534

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

शिव कृपाल सिंह (ऊपर) में निर्णय, और संविधान (सत्रहवाँ संशोधन) अधिनियम 1992 द्वारा अनुच्छेद 54 में एक स्पष्टीकरण जोड़ा गया। स्पष्टीकरण में स्पष्ट किया गया है कि अनुच्छेद 54 और 55 में 'राज्य' के संदर्भ में राष्ट्रपति के चुनाव के लिए निर्वाचक मंडल का गठन करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी शामिल होंगे। शिव कृपाल सिंह (ऊपर) मामले में, इस न्यायालय ने अग्रिम बीमा (ऊपर) मामले में निर्णय का उल्लेख नहीं किया। इस प्रकार,

शिव कृपाल सिंह में निर्णय इस हद तक अनुचित है कि

अनुच्छेद 372 ए की व्याख्या। 57. अनुच्छेद 372 ए के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति द्वारा संशोधित सामान्य खंड अधिनियम के प्रावधान संविधान की व्याख्या पर लागू होंगे। इसे केवल इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि अनुच्छेद 367 अनुच्छेद 372 ए का उल्लेख नहीं करता है। अनुच्छेद 367 की इस तरह से व्याख्या करने से अनुच्छेद 372 ए और 1956 के संविधान संशोधन द्वारा संविधान में किए गए संशोधन अप्रासंगिक हो जाएंगे। 1956 के संविधान संशोधन द्वारा संशोधित संविधान के अनुसार कानून के प्रावधानों को लाने के लिए अनुच्छेद 372 ए द्वारा राष्ट्रपति को अनुकूलन और संशोधन करने की शक्ति प्रदान की गई थी। यदि अनुच्छेद 367 की व्याख्या अनुच्छेद 372 ए के तहत संशोधनों को बाहर करने के रूप में की जाती है, तो संविधान की व्याख्या और कानूनों की व्याख्या के बीच एक स्पष्ट विसंगति होगी। जबकि पहले वाले के मामले में, 1956 के संशोधन से पहले राज्य की परिभाषा लागू होगी, बाद वाले के मामले में, 1956 के संशोधन द्वारा संशोधित परिभाषा लागू होगी। इस प्रकार, अनुच्छेद 367 की शाब्दिक व्याख्या संविधान को अव्यवहारिक बना देगी और 1956 के संविधान संशोधन को प्रभावी नहीं बनाएगी। इस न्यायालय को अनुच्छेद 367 की उद्देश्यपूर्ण व्याख्या करनी चाहिए। अनुच्छेद 367 को इस अर्थ में पढ़ा जाना चाहिए कि सामान्य खंड अधिनियम, जैसा कि अनुच्छेद 372 और अनुच्छेद 372 ए के तहत अनुकूलन और संशोधन आदेशों द्वारा संशोधित किया गया है, संविधान की व्याख्या पर लागू होगा, जब तक कि संदर्भ की आवश्यकता न हो। इस प्रकार, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, संविधान में "राज्य" शब्द को केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल करने के लिए पढ़ा जाना चाहिए। तदनुसार, हम अग्रिम बीमा (उपरोक्त) में इस न्यायालय द्वारा प्रदान किए गए अनुच्छेद 367 की व्याख्या से सहमत हैं।

ग

डी.

ई.

च

जी.

58. अग्रिम बीमा (ऊपर) में निष्कर्ष बाद में थे

इस न्यायालय द्वारा प्रेम कुमार जैन (ऊपर) में दोहराया गया। प्रेम कुमार जैन (उपरोक्त) मामले में, इस न्यायालय की चार-न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 372 ए 1956 के संविधान संशोधन को व्यवहार्य बनाने के लिए पेश किया गया एक विशेष प्रावधान है:

एच.

535

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

“7. [.....] "राज्य" शब्द की परिभाषा, जो 1 नवंबर, 1956 से पहले थी, 1 नवंबर, 1956 से संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 के लागू होने पर अनुपयुक्त और भ्रामक हो गई और स्पष्ट कारणों से, यह तर्क देना व्यर्थ होगा कि यह आने वाले सभी समय के लिए लागू रहना चाहिए था और "राज्य" की अंतिम परिभाषा केवल इसलिए बनी रहना चाहिए क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 372 के खंड (3) (ए) द्वारा प्रदान की गई तीन साल की अवधि समाप्त हो गई थी और उस खंड के संशोधन द्वारा विस्तारित नहीं की गई थी, या क्योंकि अनुच्छेद 367 (1) को सातवें संशोधन अधिनियम द्वारा संशोधित नहीं किया गया था "यह कहने के लिए कि सामान्य खंड अधिनियम में किए गए अनुकूलन अनुच्छेद 372 (2) के तहत बनाए गए परिवर्तनों के अलावा अन्य तरीके से किए गए थे। [.....] यह एक विशेष प्रावधान था और इसका उद्देश्य सातवें संशोधन अधिनियम को व्यवहार्य बनाने के उद्देश्य को पूरा करना था। जैसा कि इस न्यायालय द्वारा अग्रिम बीमा कंपनी लिमिटेड के प्रबंधन में अभिनिर्धारित किया गया है। श्री गुरुदासमल [(1970) 1 एस. सी. सी. 633: (1970) 3 एस. सी. आर. 881], अनुच्छेद 372-ए ने राष्ट्रपति को एक नई शक्ति दी जो अनुच्छेद 372 (2) के तहत शक्ति के बराबर और अनुरूप थी।”

ग

डी.

59. अब हम इस न्यायालय के उन निर्णयों पर विचार करेंगे जिनमें कहा गया है कि अनुच्छेद 246 में 'राज्य' अभिव्यक्ति में एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल नहीं है। आई. डी. 1 बनाम सी. आई. टी. 14 में, इस न्यायालय की एक संविधान पीठ ने सामान्य खंड अधिनियम 1897 की धारा 3 (58) को अनुच्छेद 246 पर लागू करने पर चर्चा की और कहा कि सामान्य खंड अधिनियम के तहत 'राज्य' की समावेशी परिभाषा अनुच्छेद 246 पर लागू नहीं होगी। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि ऐसी व्याख्या अनुच्छेद 246 के विषय और संदर्भ के प्रतिकूल होगी:

ई.

च

“4. संसद के पास किसी भी विषय के संबंध में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कानून बनाने की पूर्ण शक्ति है। केंद्र शासित प्रदेशों के संबंध में विधायी शक्ति का कोई वितरण नहीं है। अनुच्छेद 246 (4) में कहा गया है कि "संसद को भारत के क्षेत्र के किसी भी हिस्से के लिए किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने की शक्ति है जो किसी राज्य में शामिल नहीं है, इसके बावजूद कि ऐसा मामला राज्य सूची में गिना गया है।” आर. के. सेन बनाम संघ यह इंगित किया गया था कि अनुच्छेद 367 के संबंध में,

सामान्य खंड अधिनियम, 1897 की धारा 3 (58) में "राज्य" की परिभाषा संविधान की व्याख्या के लिए तब तक लागू होती है जब तक कि इस विषय में कुछ भी अप्रिय न हो या

जी.

14 (1968) 2 एससीआर 103

एच.

536 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

संदर्भ। उस परिभाषा के तहत, संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 के प्रारंभ के बाद की किसी भी अवधि के संबंध में "राज्य" शब्द का अर्थ संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य होगा और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल होगा। लेकिन यह समावेशी परिभाषा अनुच्छेद 246 के विषय और संदर्भ के प्रतिकूल है। वहाँ, "राज्य" पद का अर्थ है पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्यासंसद और विधानसभाओं के बीच विधायी शक्तियों का वितरण होता है।

राज्यों से। राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में कानून बनाने की विशेष शक्ति भाग VI द्वारा स्थापित राज्यों की विधानसभाओं को सौंपी गई है। केंद्र शासित प्रदेशों के संबंध में विधायी शक्ति का कोई वितरण नहीं है। यही कारण है कि संसद को अनुच्छेद 246 (4) द्वारा राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में भी कानून बनाने की शक्ति दी गई है। यदि समावेशी

ग

सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) में "राज्य" की परिभाषा अनुच्छेद 246 (4) पर लागू होनी थी, संसद को राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कानून बनाने की कोई शक्ति नहीं होगी और जब तक केंद्र शासित प्रदेशों के लिए अनुच्छेद 239-ए के तहत उन मामलों पर कानून बनाने के लिए सशक्त विधायिका नहीं बनाई जाती, तब तक उन पर कानून बनाने के लिए कोई सक्षम विधायिका नहीं होगी।

डी.

इसके अलावा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह जैसे कुछ क्षेत्रों के लिए अनुच्छेद 239-ए के तहत कोई विधायिका नहीं बनाई जा सकती है, और ऐसे क्षेत्रों के लिए राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में कानून बनाने के लिए सक्षम कोई प्राधिकरण नहीं हो सकता है।

ई.

इस तरह का निर्माण अनुच्छेद 246 के विषय और संदर्भ के प्रतिकूल है।"

च

(जोर दिया गया) 60। इस स्थिति को कि सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) अनुच्छेद 246 पर लागू नहीं होती है, इस न्यायालय की नौ न्यायाधीशों की पीठ ने एन. डी. एम. सी. बनाम पंजाब राज्य 15 में दोहराया था। सातवीं अनुसूची को अनुच्छेद 246 के तहत जोड़ा गया था। कन्नियन (ऊपर) और एन. डी. एम. सी. (ऊपर) में निर्धारित स्थिति को देखते हुए, सातवीं अनुसूची में प्रविष्टियों में उपयोग किए गए "राज्य" शब्द में केंद्र शासित प्रदेश भी शामिल नहीं होंगे। इस प्रकार, एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता उन प्रविष्टियों तक विस्तारित नहीं होगी जिनमें 'राज्य' का उल्लेख है। "जहाँ तक ऐसी बात है" वाक्यांश का उपयोग है

जी.

एच.

15 1997 (7) एससीसी 339 ए

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

इस तरह के परिणाम को टालने के लिए केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू "को शामिल किया गया था। इस वाक्यांश ने एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को सूची II में सभी प्रविष्टियों तक बढ़ा दिया है, जो "राज्य" शब्द का उपयोग करते हैं।

61. राज्य सूची के साथ-साथ समवर्ती सूची में कोई भी संशोधन, जो सातवीं अनुसूची का संशोधन है, संविधान के अनुच्छेद 368 के अनुसार होना चाहिए। संविधान के अनुच्छेद 368 (2) के प्रावधान में कहा गया है कि सातवीं अनुसूची में संशोधन के लिए संसद के प्रत्येक सदन में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई सदस्यों के विशेष बहुमत की आवश्यकता होगी। संशोधन को कम से कम आधे राज्यों की विधानसभाओं द्वारा भी अनुमोदित करने की आवश्यकता होगी। यदि वाक्यांश "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" को अनुच्छेद 239 एए में शामिल नहीं किया गया होता, तो संसद और राज्यों के विधानमंडल को सातवीं अनुसूची में सभी प्रविष्टियों में संशोधन करने की आवश्यकता होती, जहां "राज्य" शब्द का उपयोग "राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों" के लिए किया जाता है। इसके लिए विशेष बहुमत की आवश्यकता होती। इस समय लेने वाली प्रक्रिया से बचने के लिए अनुच्छेद 239 एए में "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" के विस्तृत वाक्यांश का उपयोग किया गया था।

ग

डी.

62. अनुच्छेद 239 एए स्पष्ट रूप से एन. सी. टी. डी. की विधान सभा की विधायी क्षमता के दायरे से सूची II की प्रविष्टियों 1,2 और 18 को बाहर करता है। अनुच्छेद 239 एए यह भी निर्धारित करता है कि एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को सूची II की प्रविष्टियों 64,65 और 66 के संबंध में बाहर रखा गया है क्योंकि वे प्रविष्टियों 1,2 और 18 से संबंधित हैं। प्रविष्टि 1 सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित है, प्रविष्टि 2 पुलिस से संबंधित है और प्रविष्टि 18 भूमि से संबंधित है। प्रविष्टि 64 "इस सूची के किसी भी मामले के संबंध में कानूनों के खिलाफ अपराधों" से संबंधित है, प्रविष्टि 65 में कहा गया है कि "इस सूची के किसी भी मामले के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय को छोड़कर सभी न्यायालयों की अधिकारिता और शक्तियां", और प्रविष्टि 66 में कहा गया है कि "इस सूची के किसी भी मामले के संबंध में शुल्क, लेकिन किसी भी अदालत में ली गई फीस शामिल नहीं है"। एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता से प्रविष्टियों 64,65 और 66 का इस हद तक अपवर्जन कि यह प्रविष्टियों 1,2 और 18 से संबंधित है, इंगित करता है कि एन. सी. टी. डी. के लिए अनुच्छेद 239 ए. ए. में परिकल्पित शासन संरचना केवल विशिष्ट प्रविष्टियों 1,2 और 18 को अपनी विधायी क्षमता से बाहर करने के लिए थी। "जहां तक ऐसा मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश को कुछ अन्य प्रविष्टियों के संबंध में एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्तियों के निहित बहिष्कार के रूप में पढ़ना प्रावधान के स्पष्ट अर्थ के विपरीत होगा।

ई.

च

जी.

63. अनुच्छेद 239 एए एन. सी. टी. डी. के लिए एक विधान सभा की स्थापना करता है। विधानसभा में सीटें सीधे चुनाव द्वारा भरी जाती हैं

एच.

538

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

एन. सी. टी. डी. के निर्वाचन क्षेत्र। एन. सी. टी. डी. की विधान सभा राज्य की विधान सभा के समान प्रतिनिधि लोकतंत्र के संवैधानिक सिद्धांत का प्रतीक है। एन. सी. टी. डी. की विधानसभा के सदस्यों का चयन दिल्ली के मतदाताओं द्वारा उनके हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है। प्रतिनिधि लोकतंत्र के सिद्धांत को आगे बढ़ाने के लिए अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या की जानी चाहिए। 16 "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश की व्याख्या प्रतिबंधात्मक तरीके से करने से विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों की विधायी शक्ति सीमित हो जाएगी। विधान सभा के सदस्यों को उनके स्थान पर कार्य करने के लिए मतदाताओं द्वारा चुना गया है। इस प्रकार, एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता की व्याख्या मतदाताओं की इच्छा को पूर्ण गति देने के लिए की जानी चाहिए। 64. हम पाते हैं कि अनुच्छेद 239 एए (3) में 'जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है' वाक्यांश को राज्य सूची या समवर्ती सूची में प्रविष्टियों पर एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को और बाहर करने के लिए नहीं पढ़ा जा सकता है, उन विषयों के अलावा जिन्हें प्रावधान द्वारा स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।

ग

डी.

जी. "प्रावधानों के अधीन": एक सीमा?

65. भारत संघ द्वारा इस बात पर जोर दिया गया है कि अनुच्छेद 239 एए न केवल एन. सी. टी. डी. की विधानसभा की शक्तियों को "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांश के माध्यम से प्रतिबंधित करता है, बल्कि "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" के प्रतिबंधात्मक वाक्यांश के माध्यम से भी प्रतिबंधित करता है।

ई.

66. वाक्यांश "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" अनुच्छेद 239 एए के लिए अद्वितीय नहीं है। इसका उपयोग संविधान के बाईस प्रावधानों में किया गया है। विशेष रूप से, इस वाक्यांश का उपयोग संसद और राज्य विधानसभाओं की विधायी शक्ति (अनुच्छेद 245) 17 के साथ-साथ संघ की कार्यकारी शक्ति (अनुच्छेद 73 (2)) 18 और राज्यों (अनुच्छेद 162 (3)) से संबंधित प्रावधानों में भी किया गया है। 19. वाक्यांश का उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि विधायी शक्ति और

च

16 2018 की संविधान पीठ में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की राय देखें।

17 245. संसद और राज्यों के विधानमंडलों द्वारा बनाए गए कानूनों का विस्तार-(1) इस संविधान के प्रावधानों के अधीन रहते हुए, संसद भारत के पूरे या किसी भी हिस्से के लिए कानून बना सकती है और किसी राज्य का विधानमंडल पूरे या राज्य के किसी भी हिस्से के लिए कानून बना सकता है। [...]

जी.

18 73. संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार-(1) इस संविधान के प्रावधानों के अधीन, संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार होगा।

19 162. राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार-इस संविधान के प्रावधानों के अधीन, किसी राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार उन मामलों तक होगा जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को कानून बनाने की शक्ति है: [...] ए.

एच.

विधायिका द्वारा प्रयोग की जाने वाली क्षमता संविधान द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर होनी चाहिए। वे सीमाएँ मामले के आधार पर भिन्न हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, विधायिका द्वारा बनाया गया कानून नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकता है। एक अन्य उदाहरण यह है कि संसद केवल अपनी विधायी क्षमता के भीतर विषयों पर कानून बना सकती है। इसके अलावा, संसद या राज्य विधानमंडल द्वारा बनाया गया कोई भी कानून अनुच्छेद 32 या अनुच्छेद 226 के तहत न्यायिक समीक्षा की शक्ति के अधीन होगा। के मामले में इस न्यायालय की एक संविधान पीठ

राजेंद्र दीवान बनाम प्रदीप कुमार रानीबाला 20 का आयोजन:

“संसद और राज्य विधानमंडलों को भारत के संविधान के अनुच्छेद 245 (1) से कानून बनाने की अपनी शक्ति प्राप्त होती है और

ग

शक्ति के प्रावधानों के अधीन और/या सीमित है

संविधान। जबकि संसद भारत के पूरे या किसी भी हिस्से के लिए कानून बना सकती है, राज्य विधानमंडल केवल राज्य या उसके किसी भी हिस्से के लिए कानून बना सकता है, जो भारत के संविधान में प्रतिबंधों के अधीन है।

डी.

जबकि संसद को संविधान के अनुच्छेद 246 (1) के तहत संघ सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में कानून बनाने की विशेष शक्ति है, राज्य विधानमंडल को अनुच्छेद 246 के खंड (1) और (2) के अधीन राज्य सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में कानून बनाने की विशेष शक्ति है। संघ विधानमंडल के साथ-साथ राज्य विधानमंडल भी अनुच्छेद 246 (1) के प्रावधानों के अधीन समवर्ती सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में कानून बनाने के लिए सक्षम है।

ई.

एक प्रविष्टि में, इसकी सामग्री को अन्य प्रविष्टियों के साथ सुसंगत बनाने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए, ताकि बाद वाले को निरर्थक न बनाया जा सके।”

च

(जोर दिया गया) निर्णय इंगित करता है कि अनुच्छेद 245 (1) के तहत संसद और राज्य विधानसभाओं की कानून बनाने की शक्ति भी निरपेक्ष नहीं है। यह संविधान के दायरे में होना चाहिए। डी. डी. बसु

जी.

भारत के संविधान पर टिप्पणी संवैधानिक पर चर्चा करती है

विधायी शक्ति पर सीमाएँ: 21

20 [2019] 17 एससीआर 1089

21 डॉ. डी. डी. बसु, भारत के संविधान पर टिप्पणी, 8 वीं संस्करण, 2012, खंड। 8, पीपी. 8749-8753

एच.

540

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

“जैसा कि अनुच्छेद 245 (1) के शुरुआती शब्दों में कहा गया है, संघ और राज्य दोनों विधानमंडलों की विधायी शक्तियां संविधान के अन्य प्रावधानों के अधीन हैं, भले ही उनकी शक्तियां संविधान द्वारा उन्हें सौंपे गए क्षेत्रों के भीतर पूर्ण हों।

क्या किसी कानून ने इनमें से किसी भी सीमा का उल्लंघन किया है, इसका पता न्यायालय द्वारा लगाया जाना चाहिए और यदि ऐसा उल्लंघन करते हुए पाया जाता है, तो न्यायालय कानून को अमान्य घोषित कर देगा।

ये सीमाएँ विभिन्न श्रेणियों में आती हैं:

I. सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण अधिकार या विधायी क्षमता का सवाल है।

ग

II. विधायी क्षमता के अभाव के अलावा, संविधान द्वारा लगाई गई कुछ सकारात्मक सीमाओं के उल्लंघन के कारण कोई कानून अमान्य हो सकता है। ऐसे मामलों में, भले ही विधानमंडल को विवादित कानून के विषय के संबंध में कानून बनाने की क्षमता थी, लेकिन संविधान द्वारा लगाए गए कुछ विशिष्ट निषेध या सीमा के उल्लंघन के कारण यह अमान्य हो गया।

डी.

ऐसी सीमाएँ दो शीर्षों के अंतर्गत आती हैं—(i) भाग III में निहित मौलिक अधिकार। मौलिक अधिकार के उल्लंघन के प्रभावों पर अनुच्छेद 13 के तहत पूरी तरह से चर्चा की गई है।

ई.

[...]

((ii) न केवल भाग III में शामिल प्रावधान, बल्कि संविधान में निहित कोई अन्य प्रावधान (भले ही यह प्रदान नहीं करता है।

च

कोई भी मौलिक अधिकार) दो शर्तों पर विधायी शक्ति पर एक सीमा का गठन करता है:

(क) कि विचाराधीन प्रावधान न्यायोचित है, अर्थात्, न्यायिक रूप से लागू होने का इरादा और सक्षम है। (ख) कि प्रावधान अनिवार्य है, उदाहरण के लिए कला। 255:286, 301, 303-4.

जी.

III. राज्य विधान के मामले में, और भी सीमाएँ हैं, अर्थात्, कि (ए) इसका संचालन ए की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकता है

एच.

541

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

राज्य, क्षेत्रीय सांठगांठ के अभाव में; विधायी शक्ति या असंवैधानिकता के आधार पर एक और सीमा यह है कि संबंधित विधानमंडल ने संविधान द्वारा उसे सौंपे गए अपने आवश्यक विधायी कार्य का त्याग कर दिया है और उस शक्ति का अत्यधिक हस्तांतरण किसी अन्य निकाय को कर दिया है। ((ख) यह राज्य के प्रयोजनों के लिए होना चाहिए।"

ऊपर उल्लिखित वही अर्थ अनुच्छेद 239 ए में "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" वाक्यांश के उपयोग पर लागू किया जाना चाहिए।

67. इसलिए हमारा मानना है कि अनुच्छेद 239 ए (3) के तहत एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को संविधान के व्यापक सिद्धांतों और प्रावधानों द्वारा निर्देशित किया जाना है। अनुच्छेद 239 ए (3) में उक्त वाक्यांश की व्याख्या संविधान के अंतर्निहित सिद्धांतों को प्रभावी बनाने के लिए की जानी चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में हम संघ द्वारा की गई अगली प्रस्तुति पर विचार करेंगे।

ग

डी.

H. संविधान एकात्मक नहीं है

68. भारत संघ ने तर्क दिया है कि भारतीय संविधान को अक्सर एक मजबूत एकात्मक पूर्वाग्रह के साथ एक संघीय संविधान के रूप में संदर्भित किया जाता है, और जहां तक केंद्र शासित प्रदेशों का संबंध है, संविधान रूप और भावना में एकात्मक है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि संघवाद की सामान्य अवधारणा, जैसा कि राज्यों पर लागू होती है, केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू नहीं हो सकती है। इस प्रकार, यह तर्क दिया जाता है कि "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" और "जहां तक ऐसा कोई भी मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" वाक्यांशों की व्याख्या तदनुसार की जानी चाहिए।

ई.

69. उपरोक्त तर्क का विश्लेषण करने के लिए, संविधान सभा के सदस्यों की परिकल्पना के अनुसार संघवाद की अवधारणा को समझना अनिवार्य है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने संविधान सभा के समक्ष अपने एक महत्वपूर्ण भाषण में संविधान 22 के तहत स्थापित दोहरी राजनीति वाले संघीय मॉडल की व्याख्या की:

च

“प्रस्तावित संविधान के तहत दोहरी राजनीति में केंद्र में संघ और परिधि में राज्य शामिल होंगे, जिनमें से प्रत्येक को संविधान द्वारा उन्हें सौंपे गए क्षेत्र में क्रमशः संप्रभु शक्तियों का प्रयोग करने की शक्ति होगी। प्रारूप संविधान में प्रस्तावित भारतीय संविधान राज्यों का संघ नहीं है और न ही राज्यों का संघ है।

जी.

22 संविधान सभा वाद-विवाद, खंड। 7 बजे पी। 33 (4 नवंबर 1948)

एच.

542 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

राज्यों की प्रशासनिक इकाइयाँ या केंद्र सरकार की एजेंसियाँ हैं।”

(जोर दिया गया) 70। इसके अलावा, जब डॉ. अम्बेडकर से संविधान सभा में संविधान के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति पर सवाल किया गया, तो उन्होंने यह कहकर जवाब दिया कि: 23

“हमारे संविधान के तहत राज्य अपने विधायी या कार्यकारी अधिकार के लिए किसी भी तरह से केंद्र पर निर्भर नहीं हैं। इस मामले में केंद्र और राज्य समान हैं

बात है। ऐसा हो सकता है कि संविधान केंद्र को अपने विधायी और कार्यकारी अधिकार के संचालन के लिए किसी भी अन्य संघीय संविधान की तुलना में बहुत बड़ा क्षेत्र प्रदान करता है। ऐसा हो सकता है कि अवशिष्ट शक्तियाँ केंद्र को दी गई हों न कि राज्यों को। लेकिन इन विशेषताओं का सार नहीं है

ग

संघवाद।संघवाद की मुख्य पहचान, जैसा कि मैंने कहा, संविधान द्वारा केंद्र और इकाइयों के बीच विधायी और कार्यकारी प्राधिकरण के विभाजन में निहित है।यह हमारे संविधान में सन्निहित सिद्धांत है।"

डी.

(जोर दिया गया) 71।संविधान सभा में डॉ. अम्बेडकर के भाषणों से यह पता चलता है कि भारत ने एक संघीय मॉडल अपनाया, जिसमें संघ और राज्यों को अपने निर्धारित विधायी क्षेत्रों के भीतर काम करना था।राज्य संघ के अधीन नहीं हैं।राज्यों का विधायी क्षेत्र अनन्य था और इसमें संघ द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है।इस न्यायालय के निर्णयों में इस सिद्धांत को दोहराया गया है।

ई.

च

72. न्यायमूर्ति बी. पी. जीवन रेड्डी ने एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ 24, जिसमें संघवाद को मूल संरचना का हिस्सा माना गया था, में अपनी अलग राय में कहा कि राज्य उन्हें आवंटित क्षेत्र में स्वतंत्र और सर्वोच्च थे, भले ही संविधान में एक केंद्रित प्रवाह हो।

जी.

"276. तथ्य यह है कि हमारे संविधान की योजना के तहत, राज्यों की तुलना में केंद्र को अधिक शक्ति प्रदान की जाती है, इसका मतलब यह नहीं है कि राज्य केवल केंद्र के उपांग हैं।इसके भीतर

23 संविधान सभा वाद-विवाद, खंड। 11 बजे पी।976 (25 नवंबर 1949) 24 (1994) 3 एससीसी 1 ए

एच.

543

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

उन्हें आवंटित क्षेत्र, राज्य सर्वोच्च हैं।केंद्र अपनी शक्तियों के साथ छेड़छाड़ नहीं कर सकता है।विशेष रूप से, न्यायालयों को एक दृष्टिकोण, एक व्याख्या को नहीं अपनाना चाहिए, जिसका प्रभाव राज्यों के लिए आरक्षित शक्तियों को कम करने का प्रभाव पड़ता है या होता है।"

73. संविधान सभा में उपरोक्त चर्चा और इस न्यायालय के फैसले के संदर्भ में, यह स्पष्ट है कि संविधान राज्यों को संविधान द्वारा लिखित क्षेत्र के भीतर स्वतंत्र रूप से कार्य करने की शक्ति प्रदान करता है।राज्य संघीय मॉडल के भीतर एक क्षेत्रीय इकाई हैं।राज्य अपनी विधायी शक्ति का प्रयोग करते हुए अपने घटकों की मांगों और उस विशेष राज्य में रहने वाले लोगों की क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करते हैं।इस मायने में, संघवाद और लोकतंत्र के सिद्धांत आपस में जुड़े हुए हैं और सभी नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा सुनिश्चित करने और उनके बीच भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करते हैं।लोगों की सरकार की पसंद उस सरकार की उनके कल्याण के लिए निर्णय लेने की क्षमता से जुड़ी हुई है।74. लोकतंत्र और संघवाद के सिद्धांत हमारे संविधान की आवश्यक विशेषताएं हैं और मूल संरचना का एक हिस्सा हैं।25 भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक, बहु-धार्मिक, बहु-जातीय और बहु-भाषाई देश में संघवाद विविध हितों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है।यह एक बहुलवादी समाज में स्वायत्तता की इच्छा के साथ-साथ समानता की इच्छा को समेटने और विविध आवश्यकताओं को समायोजित करने का एक साधन है।क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पहचानना देश की एकता को मजबूत करता है और लोकतंत्र की भावना का प्रतीक है।इस प्रकार, किसी भी संघीय संविधान में, कम से कम, दोहरी राजनीति होती है, यानी सरकार के दो समूह काम करते हैं: एक राष्ट्रीय सरकार के स्तर पर और दूसरा क्षेत्रीय संघीय इकाइयों के स्तर पर।सरकार के ये दोहरे समूह, जिन्हें "वी द पीपल" द्वारा दो अलग-अलग चुनावी प्रक्रियाओं में चुना गया है, जनता की इच्छाशक्ति की दोहरी अभिव्यक्ति हैं।संघीय प्रणाली में प्रकट होने वाली सरकारों के इन दो समूहों की प्राथमिकताएं न केवल अलग-अलग होती हैं, बल्कि उनका उद्देश्य भी अलग होता है।

डी.

ई.

च

75. जबकि एन. सी. टी. डी. एक पूर्ण राज्य नहीं है, इसकी विधानसभा को संवैधानिक रूप से राज्य सूची और समवर्ती सूची के विषयों पर कानून बनाने की शक्ति सौंपी गई है। यह संविधान की पहली अनुसूची के तहत एक राज्य नहीं है, फिर भी इसे सूची II और III में विषयों पर कानून बनाने की शक्ति प्रदान की गई है ताकि राज्य की आकांक्षाओं को प्रभावी बनाया जा सके।

जी.

25 एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) 3 एस. सी. सी. 1

एच.

544

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

एन. सी. टी. डी. के लोग। इसमें लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार है जो एन. सी. टी. डी. के लोगों के प्रति जवाबदेह है। अनुच्छेद 239 ए (3) में परिकल्पित संवैधानिक योजना के तहत, एन. सी. टी. डी. को विधायी शक्ति दी गई थी जो सीमित होने के बावजूद कई पहलुओं में राज्यों के समान है। इस मायने में, अनुच्छेद 239 ए को जोड़ने के साथ, संविधान ने केंद्र में भारत संघ और क्षेत्रीय स्तर पर एन. सी. टी. डी. के साथ एक संघीय मॉडल बनाया। यह एन. सी. टी. डी. के लिए अपनाया गया असममित संघीय मॉडल है। जबकि एन. सी. टी. डी. एक केंद्र शासित प्रदेश बना हुआ है, इसे प्रदान किया गया अनूठा संवैधानिक दर्जा इसे संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच संबंधों को समझने के उद्देश्य से एक संघीय इकाई बनाता है। 2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत ने कहा कि एन. सी. टी. डी. को राज्य का दर्जा नहीं दिया जा सकता है, लेकिन संघवाद की अवधारणा अभी भी एन. सी. टी. डी. पर लागू होगी:

ग

“122. हमने वैचारिक अनिवार्यता से निपटा है

संघीय सहयोग की संवैधानिक दर्शन को बनाए रखने में सकारात्मक भूमिका है। हम यह भी जोड़ सकते हैं कि यद्यपि ऊपर उल्लिखित प्राधिकारी संवैधानिक अर्थों में भारत संघ और राज्य सरकारों से संबंधित हैं -

डी.

"राज्य" शब्द, फिर भी यह अवधारणा दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए लागू होती है क्योंकि इसका विशेष दर्जा और अनुच्छेद 239 ए और अन्य अनुच्छेदों में नियोजित भाषा के लिए था।"

(जोर जोड़ा गया) 76। संघवाद का हमारा मॉडल केंद्र में संघ और क्षेत्रीय संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त लोकतांत्रिक इकाइयों के बीच सहयोग की भावना की उम्मीद करता है। सहकारी संघवाद की भावना के लिए लोकतांत्रिक सरकारों के दो समूहों को शासन के अभ्यास में उत्पन्न होने वाले अपने मतभेदों को दूर करने और एक दूसरे के साथ सहयोग करने की आवश्यकता होती है। संघ और एन. सी. टी. डी. को संघ और राज्यों के समान सहयोग करने की आवश्यकता है। संविधान की हमारी व्याख्या को मिलकर संघवाद और लोकतंत्र की भावना को बढ़ाना चाहिए। व्याख्या का यह दृष्टिकोण 2018 के संविधान पीठ के फैसले में स्थित है, जिसमें बहुमत की राय इस प्रकार है:

ई.

च

“ 284.7.हमारा संविधान एक समतावादी सामाजिक व्यवस्था, समकालीन विविधता में एक शास्त्रीय एकता और पहचान खोए बिना अंततः सामंजस्य में एक बहुलवादी परिवेश स्थापित करने के लिए संघवाद और लोकतंत्र के एक सार्थक संगठन पर विचार करता है।इन दोनों अवधारणाओं को पूर्ण प्रभाव देने के लिए ईमानदारी से प्रयास किए जाने चाहिए।

जी.

एच.

545

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

77. सहकारी संघवाद की भावना में, भारत संघ को संविधान द्वारा बनाई गई सीमाओं के भीतर अपनी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।एन. सी. टी. डी., जिसके पास एक सुई जेनरिस संघीय मॉडल है, को संविधान द्वारा इसके लिए निर्धारित क्षेत्र में कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए।संघ और एन. सी. टी. डी. एक अद्वितीय संघीय संबंध साझा करते हैं।इसका मतलब यह नहीं है कि एन. सी. टी. डी. को संघ की इकाई में केवल इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि यह एक "राज्य" नहीं है।2018 के संविधान पीठ के फैसले में बहुमत की राय के अनुसार:“इस तरह की व्याख्या व्यावहारिक संघवाद और संघीय संतुलन की अवधारणाओं के अनुरूप होगी, जिसमें दिल्ली की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार को संविधान द्वारा लगाई गई सीमाओं के अधीन कुछ आवश्यक स्वतंत्रता दी जाएगी।”

ग

अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) की विस्तृत तरीके से व्याख्या संघवाद की मूल संरचना को आगे बढ़ाएगी।

I. संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच विधायी और कार्यकारी शक्ति का दायरा

डी.

78. अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) इंगित करता है कि दिल्ली की विधानसभा को राज्य सूची और समवर्ती सूची के मामलों के संबंध में एन. सी. टी. डी. के पूरे या किसी भी भाग के लिए कानून बनाने की शक्ति होगी, सिवाय राज्य सूची की 1,2 और 18 प्रविष्टियों और 64,65 और 66 प्रविष्टियों के, जहां तक वे 1,2 और 18 प्रविष्टियों से संबंधित हैं।इसलिए, एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति उन प्रविष्टियों तक सीमित है जिन पर वह कानून बनाने के लिए सक्षम है।79. अनुच्छेद 239 ए (3) (बी) में प्रावधान है कि संसद किसी केंद्र शासित प्रदेश या उसके किसी भी हिस्से के लिए "किसी भी मामले के संबंध में कानून बना सकती है"।अतः संसद की विधायी शक्ति का विस्तार संघ सूची के अलावा एन. सी. टी. डी. के संबंध में राज्य सूची और समवर्ती सूची के सभी विषयों तक होगा।संसद द्वारा अधिनियमित कानून और एन. सी. टी. डी. की विधान सभा द्वारा बनाए गए कानून के बीच प्रतिकूलता के मामले में, पूर्व अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (डी) के संदर्भ में प्रबल होगा।

ई.

च

80. अनुच्छेद 239 ए (3) से जो स्थिति सामने आती है, वह यह है कि एन. सी. टी. डी. के पास सीमा के साथ सूची II में प्रविष्टियों पर विधायी शक्ति है (जैसा कि प्रावधान द्वारा बाहर रखा गया है) लेकिन संसद की विधायी शक्ति एन. सी. टी. डी. के संबंध में तीनों सूचियों में विषयों तक फैली हुई है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच विधायी और कार्यकारी शक्तियों के विभाजन का दायरा 2018 के संविधान पीठ के फैसले में विचार के लिए गिर गया।अनुच्छेद 239 ए (4) की व्याख्या करते हुए, 2018 की संविधान पीठ

जी.

एच.

निर्णय में कहा गया कि जी. एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति के साथ व्यापक थी।

81. संविधान के अनुच्छेद 73 (1) में कहा गया है कि संघ की कार्यकारी शक्ति उन मामलों तक विस्तारित होगी जिनके संबंध में संसद को कानून बनाने की शक्ति है। अनुच्छेद 73 (1) के परंतुक में प्रावधान है कि संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार "किसी भी राज्य में" उन मामलों में नहीं होगा जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को भी कानून बनाने की शक्ति है, जब तक कि संविधान में या संसद द्वारा बनाए गए कानून द्वारा स्पष्ट रूप से प्रावधान न किया गया हो:

“अनुच्छेद 73। संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार-(1) इस संविधान के प्रावधानों के अधीन, संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार होगा -

ग

उन मामलों के लिए जिनके संबंध में संसद को कानून बनाने की शक्ति है;

[.....] बशर्ते कि उपखंड (क) में निर्दिष्ट कार्यकारी शक्ति, जैसा कि इस संविधान में या संसद द्वारा बनाई गई किसी विधि में स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया है, किसी भी राज्य को उन मामलों में विस्तारित नहीं करेगी जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को भी कानून बनाने की शक्ति है।”

डी.

ई.

82. अनुच्छेद 162 में प्रावधान है कि संविधान के प्रावधानों के अधीन, किसी राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार उन मामलों तक होगा जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को कानून बनाने की शक्ति है। परंतुक में कहा गया है कि उन मामलों के संबंध में जिनके लिए किसी राज्य के विधानमंडल और संसद दोनों के पास विधायी क्षमता है, राज्य की कार्यकारी शक्ति संविधान या संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून द्वारा सीमित होगी:

च

“अनुच्छेद 162। राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार।- इस संविधान के प्रावधानों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार उन मामलों तक होगा जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को कानून बनाने की शक्ति है।

जी.

बशर्ते कि किसी ऐसे मामले में जिसके संबंध में किसी राज्य के विधानमंडल और संसद को कानून बनाने की शक्ति है, राज्य की कार्यकारी शक्ति इस संविधान द्वारा या संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून द्वारा संघ या उसके प्राधिकरणों को स्पष्ट रूप से प्रदत्त कार्यकारी शक्ति के अधीन होगी और उसके द्वारा सीमित होगी।”

एच.

83. अनुच्छेद 73 और 162 का संयुक्त अध्ययन इंगित करता है कि संघ के पास सूची I में प्रविष्टियों पर विशेष कार्यकारी शक्ति है। राज्यों के पास सूची II में प्रविष्टियों पर विशेष कार्यकारी शक्ति है। सूची III, अर्थात् समवर्ती सूची के संबंध में, संघ के पास कार्यकारी शक्ति केवल तभी होगी जब संविधान या संसद के किसी कानून द्वारा प्रदान की गई हो। राज्यों के पास सूची III में प्रविष्टियों पर कार्यकारी शक्ति होगी। तथापि, यदि कोई केंद्रीय विधान या संविधान का कोई प्रावधान किसी सूची III विषय के संबंध में संघ को कार्यकारी शक्ति प्रदान करता है, तो राज्य की कार्यकारी शक्ति ऐसे कानून या प्रावधान के अधीन होगी। "किसी राज्य में" संघ की कार्यकारी शक्ति उन मामलों पर है जिन पर राज्य और भारत संघ दोनों कानून बना सकते हैं (यानी समवर्ती सूची) यह सुनिश्चित करने के लिए सीमित है कि राज्यों का शासन संघ द्वारा नहीं लिया गया है। यह संघीय शासन प्रणाली और प्रतिनिधि लोकतंत्र के सिद्धांत को पूरी तरह से निरस्त कर देगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा के सदस्यों ने सोचा कि किसी राज्य में संघ की कार्यकारी शक्ति को उन मामलों पर सीमित करना उचित है जिन पर राज्य की विधायी क्षमता भी है।

ग

डी.

84. अनुच्छेद 73 और 162 का सिद्धांत उन मामलों पर कार्यकारी शक्ति के दायरे पर समान रूप से लागू होगा जो संघ और जी. एन. सी. टी. डी. दोनों की विधायी क्षमता के भीतर हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रावधानों का उद्देश्य संघ की कार्यकारी शक्ति को क्षेत्रीय सीमाओं में सीमित करना है जहां एक संघीय इकाई की निर्वाचित सरकार है। 85. एन. सी. टी. डी. की संसद और विधानमंडल दोनों के पास सूची II और सूची III पर विधायी क्षमता है। एन. सी. टी. डी. के प्रयोजनों के लिए, सूची II और सूची III दोनों "समवर्ती सूचियाँ" हैं। इस प्रकार, सूची II और सूची III में प्रविष्टियों के संबंध में संसद और एन. सी. टी. डी. सरकार के बीच कार्यकारी शक्ति का परिसीमन इन सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है। संसद और एन. सी. टी. डी. के विधानमंडल दोनों के पास सूची II (इस चेतावनी के अधीन कि प्रविष्टियाँ 1, 2 और 18; और प्रविष्टियाँ 64, 65 और 66 जितनी वे प्रविष्टियों 1, 2 और 18 से संबंधित हैं, जी. एन. सी. टी. डी. की विधान सभा के अधिकार क्षेत्र से बाहर की गई हैं) और सूची III के संबंध में कानून बनाने की शक्ति है। एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) में स्पष्ट रूप से बहिष्कृत प्रविष्टियों के अलावा सूची II और सूची III में सभी प्रविष्टियों तक विस्तारित होगी। ऐसी शक्ति संघ की कार्यकारी शक्ति (उपराज्यपाल के माध्यम से) के अधीन तभी होगी जब संघ को संविधान या संसद के कानून द्वारा ऐसी शक्ति प्रदान की गई हो। इसलिए, एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति, संसद द्वारा कानून के अभाव में, उन सभी विषयों तक विस्तारित होगी जिन पर उसे कानून बनाने की शक्ति है।

ई.

च

जी.

एच.

548

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

86. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में यह अभिनिर्धारित किया गया था कि उपराज्यपाल एन. सी. टी. डी. की विधानसभा के विधायी क्षेत्र के भीतर आने वाले मामलों के संबंध में कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग करते समय अनुच्छेद 239 ए. ए. (4) के तहत मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बाध्य हैं, सिवाय इसके कि वह अनुच्छेद 239 ए. ए. (4) के प्रावधान के तहत प्रदान किए गए सीमित मार्ग का प्रयोग करते हैं। प्रावधान के तहत इस सीमित विवेकाधीन शक्ति का प्रयोग, जैसा कि संविधान पीठ ने अभिनिर्धारित किया है, राष्ट्रीय हित और वित्त के मामलों जैसी दुर्लभ परिस्थितियों में सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। उपराज्यपाल हर मामले को राष्ट्रपति के पास नहीं भेज सकते थे। 26 अनुच्छेद 239 ए. ए. (4), एन. सी. टी. डी. सरकार अधिनियम 1991-27 और लागू व्यवसाय लेनदेन नियम 1993 के प्रावधानों का विश्लेषण करने के बाद, बहुमत द्वारा यह

अभिनिर्धारित किया गया था कि:“ 284.16.एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में, भारत संघ के पास राज्य सूची के तीन मामलों से संबंधित दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के संबंध में विशेष कार्यकारी शक्ति है, जिसके संबंध में दिल्ली विधानसभा की शक्ति को बाहर रखा गया है।अन्य मामलों के संबंध में, कार्यकारी शक्ति का प्रयोग दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार द्वारा किया जाना है।हालाँकि, यह संविधान के अनुच्छेद 239 ए (4) के प्रावधान के अधीन है।

ग

डी.

284.17.अनुच्छेद 239 ए (4) में नियोजित "सहायता और सलाह" के अर्थ का अर्थ यह समझा जाना चाहिए कि दिल्ली के एन. सी. टी. के उपराज्यपाल मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बंधे हैं और यह स्थिति तब तक सही है जब तक कि उपराज्यपाल अनुच्छेद 239-ए. ए. के खंड (4) के प्रावधान के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करते हैं। उपराज्यपाल को कोई स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति नहीं सौंपी गई है।उसे या तो मंत्रिपरिषद की "सहायता और सलाह" पर कार्य करना होता है या वह राष्ट्रपति द्वारा अपने द्वारा दिए गए निर्णय को लागू करने के लिए बाध्य होता है।

ई.

च

284.18.अनुच्छेद 239-ए. ए. के खंड (4) के परंतुक में प्रयुक्त "कोई भी मामला" शब्दों का अर्थ "प्रत्येक मामला" नहीं लगाया जा सकता है।"87. एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्तियों के बाहर आने वाले मामलों में, "सहायता और सलाह" का सिद्धांत लागू नहीं होता है।इन मामलों में,

जी.

26 पैरा 284.18 (बहुमत की राय); पैरा 475 (न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय)

27 "जीएनसीटीडी अधिनियम "

एच.

549

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के व्यापार लेन-देन नियम 1993 28 शक्ति के प्रयोग के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगे।जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम की धारा 41 के तहत, उपराज्यपाल को अपने विवेक से कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है कि अनुच्छेद 239 के तहत राष्ट्रपति द्वारा उन्हें कौन सी शक्तियां या कार्य सौंपे गए हैं, या जहां उन्हें कानून के एक विशिष्ट प्रावधान के तहत अपने विवेक से कार्य करने की आवश्यकता है या जहां वह न्यायिक या अर्ध-न्यायिक कार्यों का प्रयोग करता है।लेफ्टिनेंट गवर्नर के विवेकाधिकार से संबंधित धारा 41 में प्रावधान है कि:

“41. वे मामले जिनमें उपराज्यपाल को अपने विवेक से कार्य करना चाहिए।(1) उपराज्यपाल किसी ऐसे मामले में अपने विवेकाधिकार से कार्य करेगा-(i) जो विधान सभा को प्रदत्त शक्तियों के दायरे से बाहर है, लेकिन जिसके संबंध में राष्ट्रपति द्वारा उसे शक्तियां या कार्य सौंपे गए हैं या सौंपे गए हैं; या

ग

डी.

(ii) जिसमें उसे किसी भी कानून द्वारा या उसके तहत अपने विवेक से कार्य करने या किसी भी न्यायिक या अर्ध-न्यायिक कार्यों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। (2) यदि इस बारे में कोई प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या कोई मामला ऐसा मामला है या नहीं जिसके संबंध में उपराज्यपाल किसी कानून द्वारा या उसके तहत अपने विवेक से कार्य करने के लिए अपेक्षित है, तो उस पर उपराज्यपाल का निर्णय अंतिम होगा।

ई.

(3) यदि इस बारे में कोई प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या कोई मामला ऐसा मामला है या नहीं जिसके संबंध में उपराज्यपाल से किसी कानून द्वारा किसी न्यायिक या अर्ध-न्यायिक कार्यों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है, तो उस पर उपराज्यपाल का निर्णय अंतिम होगा।"88. तदनुसार, उपराज्यपाल केवल दो वर्गों के मामलों में अपने विवेक से कार्य कर सकता है। पहला, जहां मामला उन मुद्दों से संबंधित है जो विधान सभा की शक्तियों से परे हैं और जहां राष्ट्रपति ने ऐसे मामले के संबंध में उपराज्यपाल को शक्तियां और कार्य सौंप दिए हैं; और दूसरा, ऐसे मामले जो कानून द्वारा उसे अपने विवेक से कार्य करने की आवश्यकता रखते हैं या जहां वह न्यायिक या अर्ध-न्यायिक कार्यों का प्रयोग कर रहा है।

च

जी.

89. जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम की धारा 44 राष्ट्रपति को मंत्रियों को कार्य के आवंटन के संबंध में नियम बनाने की शक्ति प्रदान करती है।

28 "व्यापार नियमों का लेन-देन "

एच.

550

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

उपराज्यपाल को अपनी मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करने की आवश्यकता होती है। इसमें उपराज्यपाल और मंत्रिपरिषद या एक मंत्री के बीच मतभेद के मामले में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया सहित मंत्रियों के साथ व्यापार के सुविधाजनक लेनदेन को सुनिश्चित करने के लिए नियमों का भी प्रावधान है। धारा 44 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के व्यापार लेनदेन नियम 1993 बनाए। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने 2018 के संविधान पीठ के फैसले में अपनी सहमति में कहा कि ये नियम जी. एन. सी. टी. डी. के कार्यकारी कार्यों से संबंधित मामलों में पालन करने के लिए एक तंत्र प्रदान करते हैं। यह आयोजित किया गया था:

"428. नियमों का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उन मामलों पर जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार के कार्यकारी कार्यों के दायरे में आते हैं, निर्णय सरकार द्वारा लिया जाता है, जिसमें मंत्रिपरिषद होती है और इसके प्रमुख मुख्यमंत्री होते हैं।

ग

नियम 24 एक ऐसी घटना से संबंधित है जब उपराज्यपाल की राय हो सकती है कि कोई आगे की कार्रवाई की जानी चाहिए या डी.

कि कार्रवाई किसी मंत्री द्वारा पारित आदेश के अनुसार नहीं की जानी चाहिए। ऐसे में

एक मामले में, उपराज्यपाल अपना निर्णय नहीं लेते हैं।

उन्हें प्रस्ताव या मामले को विचार के लिए मंत्री परिषद को भेजना होगा।

ई.

उपराज्यपाल को उस सहायता और सलाह से स्वतंत्र और भिन्न निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिया गया है जो उपराज्यपाल द्वारा उन्हें दी जाती है।

मंत्रिपरिषद्। यदि वह सहायता और सलाह से असहमत है, तो उपराज्यपाल को मामले को केंद्र सरकार को भेजना चाहिए (मंत्री या मंत्रिपरिषद् के साथ समाधान के प्रयासों से कोई समाधान नहीं निकला है)। निर्णय लेने के बाद

च

राष्ट्रपति को किसी भिन्न मामले पर सूचित किया जाता है, उपराज्यपाल को उस निर्णय का पालन करना चाहिए। यह

सिद्धांत उन क्षेत्रों को नियंत्रित करता है जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार को सौंपे गए कार्यकारी कार्यों के दायरे और दायरे में ठीक से आते हैं।"

जी.

(जोर दिया गया) उपरोक्त व्याख्या इंगित करती है कि एन. सी. टी. डी. के कार्यकारी क्षेत्र के मामलों में, यह एन. सी. टी. डी. की निर्वाचित सरकार है जो ए.

एच.

551

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

निर्णय लेने की शक्ति। उपराज्यपाल मंत्री या मंत्रिपरिषद् से अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का अनुरोध कर सकते हैं। समाधान के प्रयासों के बाद भी मतभेद बने रहने पर ही वह मामले को राष्ट्रपति के पास भेज सकते हैं और निर्णय की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

90. व्यापार लेन-देन नियमों के नियम 45 से यह भी संकेत मिलता है कि उपराज्यपाल को अपने कार्यकारी कार्यों का प्रयोग करने में अनुच्छेद 239 ए के खंड (3) और (4) की सीमा के भीतर कार्य करना चाहिए, यानी वह उन मामलों पर मंत्रिपरिषद् की "सहायता और सलाह" का पालन करेगा जिनके संबंध में एन. सी. टी. डी. के पास विधायी शक्ति है। नियम 45 में कहा गया है: "उपराज्यपाल, लिखित रूप में स्थायी आदेशों द्वारा, संबंधित व्यवसाय के लेन-देन और निपटान को विनियमित कर सकता है

ग

उनके कार्यकारी कार्य:

बशर्ते कि स्थायी आदेश इस अध्याय, अध्याय 5 के प्रावधानों और केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए निर्देशों के अनुरूप होंगे।

डी.

बशर्ते कि उपराज्यपाल 'लोक व्यवस्था', 'पुलिस' और 'भूमि' से जुड़े मामलों के संबंध में अपने कार्यकारी कार्यों का प्रयोग उस सीमा तक करेगा जो राष्ट्रपति द्वारा उन्हें सौंपा गया है।

मुख्यमंत्री, यदि यह संविधान के अनुच्छेद 239 के तहत राष्ट्रपति द्वारा जारी किसी भी आदेश के तहत प्रदान किया गया है।

ई.

बशर्ते कि 'स्थायी आदेश' व्यवसाय के लेन-देन से संबंधित नियमों के साथ असंगत नहीं होंगे।"

(जोर दिया गया) 91। नियम में प्रावधान है कि उपराज्यपाल "अपने कार्यकारी कार्यों" से संबंधित स्थायी आदेश जारी कर सकता है, जो समग्र रूप से कार्य के नियमों के अनुरूप होना चाहिए। नियम के अपवाद के रूप में, केवल "सार्वजनिक व्यवस्था",

"पुलिस" और "भूमि" से जुड़े मामलों के संबंध में, जो अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) के तहत एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र के बाहर के मामले हैं, वह "राष्ट्रपति द्वारा उन्हें सौंपी गई सीमा तक अपने कार्यकारी कार्यों का प्रयोग कर सकते हैं।" इस परंतुक का दूसरा भाग आगे इंगित करता है कि एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र के बाहर के मामलों में, उपराज्यपाल को मुख्यमंत्री के साथ परामर्श करने की आवश्यकता हो सकती है, यदि यह संविधान के अनुच्छेद 239 के तहत राष्ट्रपति द्वारा जारी किसी भी आदेश के तहत प्रदान किया गया है। इस प्रकार यह नियम स्पष्ट करता है कि

च

जी.

एच.

552

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

उपराज्यपाल एन. सी. टी. डी. के विधायी दायरे से बाहर के मामलों के संबंध में अपने कार्यकारी कार्य का प्रयोग केवल "राष्ट्रपति द्वारा उन्हें सौंपी गई सीमा तक" कर सकते हैं। सैद्धांतिक रूप से, एन. सी. टी. डी. के क्षेत्र के भीतर कार्यकारी कार्यों के निर्वहन में, उपराज्यपाल को नियमों में बताए गए तरीके से मंत्रिपरिषद की "सहायता और सलाह" का पालन करना चाहिए। अतः नियम 46 को तदनुसार समझने की आवश्यकता है।

92. नियम 46 एन. सी. टी. डी. के "प्रशासन" के संबंध में सेवारत व्यक्तियों के संबंध में उपराज्यपाल की शक्ति से संबंधित है। नियम 46 में कहा गया है:

"46. (1) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रशासन के संबंध में सेवारत व्यक्तियों के संबंध में, उपराज्यपाल ऐसी शक्तियों का प्रयोग करेगा और ऐसे कार्यों का पालन करेगा जो ऐसे व्यक्तियों की सेवा की शर्तों को विनियमित करने वाले नियमों और आदेशों के प्रावधानों के तहत उसे सौंपे जा सकते हैं।

ग

डी.

यदि यह संविधान के अनुच्छेद 239 के तहत राष्ट्रपति द्वारा जारी किसी आदेश के तहत प्रदान किया गया है, तो मुख्यमंत्री के परामर्श से राष्ट्रपति का।

(2) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी उपराज्यपाल उन सभी मामलों पर संघ लोक सेवा आयोग से परामर्श करेगा जिन पर संविधान के अनुच्छेद 320 के खंड (3) के तहत आयोग से परामर्श करने की आवश्यकता है और ऐसे प्रत्येक मामले में वह संघ लोक सेवा आयोग की सलाह के अनुसार के अलावा कोई आदेश नहीं देगा जब तक कि केंद्र सरकार द्वारा ऐसा करने के लिए अधिकृत न किया जाए। (3) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रशासन के संबंध में सेवारत व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तों के संबंध में संघ लोक सेवा आयोग और केंद्र सरकार के साथ सभी पत्राचार उपराज्यपाल के निर्देश पर संबंधित विभाग के मुख्य सचिव या सचिव द्वारा किए जाएंगे।"

ई.

च

जी.

(जोर दिया गया) नियम में प्रावधान है कि उपराज्यपाल एन. सी. टी. डी. के "प्रशासन" में सेवारत व्यक्तियों के संबंध में ऐसी शक्तियों और कार्यों का प्रयोग करेगा, जो उन्हें सेवा की शर्तों को विनियमित करने वाले नियमों और आदेशों के प्रावधानों के तहत सौंपे जा सकते हैं।

एच.

553

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

ऐसे व्यक्ति या राष्ट्रपति के किसी अन्य आदेश द्वारा। इस नियम में "प्रशासन" शब्द पर अनुच्छेद 239 ए (3) और जीएनसीटीडी अधिनियम की धारा 41 के संदर्भ में विचार किया जाना चाहिए। उपराज्यपाल द्वारा कार्यकारी प्रशासन, अपने विवेकाधिकार में, केवल उन मामलों तक विस्तारित हो सकता है जो विधान सभा को प्रदत्त शक्तियों के दायरे से बाहर हैं, लेकिन यह राष्ट्रपति द्वारा उन्हें सौंपी गई या सौंपी गई शक्तियों या कार्यों तक विस्तारित है "या" जिसमें उन्हें किसी भी कानून द्वारा या उसके तहत अपने विवेक से कार्य करने या किसी भी न्यायिक या अर्ध-न्यायिक कार्यों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। "प्रशासन" शब्द को जीएनसीटीडी के संपूर्ण प्रशासन के रूप में नहीं समझा जा सकता है। अन्यथा, संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त और लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार को शक्तियां देने का उद्देश्य कमजोर हो जाएगा।

ग

93. इसलिए, नियम 46 में "राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रशासन के संबंध में सेवारत व्यक्ति" वाक्यांश केवल उन व्यक्तियों को संदर्भित करेगा, जिनका प्रशासन "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" से जुड़ा हुआ है, जो एन. सी. टी. डी. के अधिकार क्षेत्र से बाहर के विषय हैं। 94. हालांकि, जैसा कि 2018 के संविधान पीठ के फैसले में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय में उल्लेख किया गया है, जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम की धारा 49 राष्ट्रपति को सामान्य नियंत्रण की एक प्रबल शक्ति प्रदान करती है। धारा 49 के अनुसार, "उपराज्यपाल और उनकी मंत्रिपरिषद राष्ट्रपति के सामान्य नियंत्रण में होगी और राष्ट्रपति द्वारा समय-समय पर दिए जाने वाले ऐसे विशेष निर्देशों, यदि कोई हों, का पालन करेगी।" राष्ट्रपति के निर्देश भारत संघ के मंत्रिपरिषद की "सहायता और सलाह" के अनुसार होते हैं।

डी.

ई.

95. इस प्रकार, संघ और एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्तियों का दायरा, जिस पर इस धारा के तहत चर्चा की गई है, कई गुना है। अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) के तहत, एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति राज्य सूची और समवर्ती सूची के तहत सभी विषयों तक फैली हुई है, सिवाय बहिष्कृत प्रविष्टियों के। जैसा कि 2018 के संविधान पीठ के फैसले में कहा गया है, जी. एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति इसकी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है। दूसरे शब्दों में, जी. एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति उन सभी विषयों तक फैली हुई है जिन पर इसकी विधान सभा को कानून बनाने की शक्ति है। संघ की विधायी शक्ति संघ सूची के अलावा राज्य सूची और समवर्ती सूची के तहत सभी प्रविष्टियों तक फैली हुई है। संघ की कार्यकारी शक्ति, राज्य सूची में किसी भी विषय से संबंधित कार्यकारी शक्ति के अभाव में, केवल उन तीन प्रविष्टियों से संबंधित मामलों को शामिल करेगी जिन्हें एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से बाहर रखा गया है।

च

जी.

एच.

554

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

परिणामस्वरूप, किसी कानून या संविधान के प्रावधान के अभाव में, केंद्र सरकार की ओर से कार्य करने वाले उपराज्यपाल की कार्यकारी शक्ति अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) में उल्लिखित तीन प्रविष्टियों से संबंधित मामलों पर ही लागू होगी, जो अनुच्छेद 73 की सीमाओं के अधीन होगी। इसके अलावा, यदि उपराज्यपाल जी. एन. सी. टी. डी. के मंत्रिपरिषद से भिन्न होता है, तो वह कार्य संचालन नियमों में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कार्य करेगा। हालाँकि, यदि संसद किसी ऐसे विषय पर कार्यकारी शक्ति प्रदान करने वाला कानून बनाती है जो एन. सी. टी. डी. के अधिकार क्षेत्र के भीतर है, तो उपराज्यपाल की कार्यकारी शक्ति को उस सीमा तक संशोधित किया जाएगा, जैसा कि उस कानून में प्रावधान किया गया है। इसके अलावा, जीएनसीटीडी अधिनियम की धारा 49 के तहत, उपराज्यपाल और मंत्रिपरिषद को विशिष्ट अवसरों पर राष्ट्रपति द्वारा जारी विशेष निर्देशों का पालन करना चाहिए।

ग

96. अब, हम राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत "सेवाओं" पर एन. सी. टी. डी. और संघ की विधायी और कार्यकारी शक्तियों के दायरे के बारे में हमारे सामने वर्तमान संदर्भ की ओर मुड़ते हैं। इस धारा में चर्चा के आधार पर, एन. सी. टी. डी. के पास "सेवाओं" पर कानून बनाने की विधायी शक्ति होगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि अनुच्छेद 239 ए (3) (ए) में "सेवाओं" (अर्थात् प्रविष्टि 41) को स्पष्ट रूप से बाहर नहीं किया गया है। चूंकि इसके पास विधायी शक्ति है, इसलिए इसके पास एन. सी. टी. डी. के भीतर "सेवाओं" को नियंत्रित करने की कार्यकारी शक्ति होगी। हालाँकि, हमें भारत संघ के इस तर्क को संबोधित करने की आवश्यकता होगी कि संविधान के प्रावधान इस मुद्दे पर एक निर्णायक राय बनाने के लिए एन. सी. टी. डी. के विधायी और कार्यकारी नियंत्रण से "सेवाओं" को बाहर करते हैं। इस निर्णय के बाद के खंड उपरोक्त प्रश्नों से संबंधित हैं।

डी.

ई.

जे. जवाबदेही की ट्रिपल श्रृंखला: सरकार के मंत्रिमंडल रूप में लोक सेवक

च

97. एन. सी. टी. डी. पर भाग XIV की प्रयोज्यता के बारे में प्रश्न पर चर्चा करने से पहले, उन सिद्धांतों पर चर्चा करना उचित होगा जो भाग XIV पर हमारे विश्लेषण का मार्गदर्शन करेंगे। दांव पर लगे मुद्दों को समझने के लिए वेस्टमिंस्टर शैली की कैबिनेट सरकार में सिविल सेवाओं की भूमिका पर चर्चा आवश्यक है।

जी.

(क) आधुनिक सरकार में सिविल सेवाओं की भूमिका

98. सिविल सेवाएँ आधुनिक सरकार का एक अभिन्न अंग हैं। प्रोफेसर हर्मन फिनर ने "द थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉडर्न गवर्नेंस" शीर्षक से अपनी उत्कृष्ट कृति में कहा है कि "आधुनिक राज्य में सिविल सेवा का कार्य केवल सरकार का सुधार नहीं है।

एच.

555

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क्योंकि इसके बिना, वास्तव में, सरकार स्वयं अनिवार्य रूप से असंभव होगी।" 29 राज्य की प्रभावशीलता और एक बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार सरकार की प्रणाली पेशेवरों पर निर्भर करती है, जो एक सक्षम और स्वतंत्र सिविल सेवा की संस्था को मूर्त रूप देते हैं।

99. सरकार की नीतियों को लोगों, संसद, मंत्रिमंडल या यहां तक कि व्यक्तिगत मंत्रियों द्वारा भी लागू नहीं किया जाता है, बल्कि सिविल सेवा अधिकारियों द्वारा किया जाता है। सरकार की संसदीय प्रणाली में सिविल सेवाओं की अपरिहार्य स्थिति के बारे में विस्तार से बताते हुए, डी. डी. बसु ने भारत के संविधान पर अपनी टिप्पणी में कहा है:

“सरकार की संसदीय प्रणाली की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि प्रशासन की नीति विधानमंडल के प्रति जिम्मेदार मंत्रियों द्वारा निर्धारित और निर्धारित की जाती है, नीति का पालन किया जाता है और देश का प्रशासन वास्तव में अधिकारियों के एक बड़े निकाय द्वारा चलाया जाता है जिन्हें राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है।” 30 100. भारत संघ बनाम तुलसीराम पटेल 31 में इस न्यायालय की एक संविधान पीठ ने सिविल सेवा की सर्वव्यापी प्रकृति पर विचार किया और कहा:

ग

डी.

“34. सिविल सेवा की अवधारणा नई या हाल ही में उत्पन्न हुई नहीं है। सरकारें-चाहे राजतंत्रीय हों, तानाशाह या गणतंत्रवादी-को काम करना होता है और प्रशासन और सरकार के विभिन्न कार्यों को करने के लिए व्यक्तियों की आयु संख्या की आवश्यकता होती है और हमेशा आवश्यक रही है, चाहे वे सिविल सेवा के रूप में गठित हों या नहीं।”

ई.

101. भारतीय संविधान में, एक पूरा भाग, भाग XIV, 'सेवाओं' के लिए समर्पित है, जो उस महान महत्व को दर्शाता है जिसे संविधान सभा के सदस्यों ने सिविल सेवा अधिकारियों में व्यक्त किया था। संविधान सभा की बहसों के दौरान, सिविल सेवाओं को "प्रशासन की आत्मा" के रूप में संदर्भित किया गया था और यह कहा गया था कि "सिविल सेवाओं के महत्व का लाभ नहीं उठाया जा सकता है।" 32 भाग XIV "संघ और राज्यों के तहत सेवाओं" से संबंधित है। अध्याय I जिसमें अनुच्छेद 308 से 313 शामिल हैं

च

जी.

29 पृष्ठ 1163 पर हर्मन फाइनर, द थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉडर्न गवर्नेंस (न्यूयॉर्क: द डायल प्रेस, 1932)

30 डॉ. डी. डी. बसु, भारत के संविधान पर टिप्पणी, 9 वीं संस्करण, 2018, खंड। 13, पृष्ठ 13991

31 (1985) 3 एस. सी. सी. 398

32 संविधान सभा की बहस में मुनिस्वामी पिल्लई और बी. एन. मुनवल्लि, खंड। 9 (22 अगस्त 1949)

एच.

556

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

सेवाओं से संबंधित है, और अध्याय II जिसमें अनुच्छेद 325 से 323 शामिल हैं, संघ और राज्यों के लिए लोक सेवा आयोगों से संबंधित है। भाग XIV के विस्तृत प्रावधानों की प्रभावशीलता काफी हद तक मंत्रियों और सिविल सेवा अधिकारियों के बीच संबंधों पर निर्भर करती है।

(ख) वेस्टमिंस्टर संसदीय लोकतंत्र में सिविल सेवकों की जवाबदेही

102. लोकतंत्र में, जवाबदेही उन लोगों की होती है जो परम संप्रभु होते हैं। भारत में अपनाई गई सरकार के संसदीय रूप के लिए अनिवार्य रूप से संसद और निर्वाचित प्रतिनिधियों वाली सरकार को लोगों के प्रति जवाबदेह होने की आवश्यकता होती है। निर्वाचित प्रतिनिधियों से युक्त मंत्रिमंडल देश के उचित प्रशासन के लिए सामूहिक रूप से जिम्मेदार है और अपने कार्यों के लिए विधायिका के प्रति जवाबदेह है। संविधान विधायिका को कानून बनाने और सरकार को कानून लागू करने की शक्ति प्रदान करता है। हर पाँच साल में होने वाले चुनावों में मतदाताओं द्वारा समय-समय पर सरकार के आचरण का मूल्यांकन किया जाता है। सरकार का गठन विधायिका में निर्वाचित सदस्यों के बहुमत के समर्थन से किया जाता है। विधायिकाक प्रति उत्तरदायी सरकारक आकलन विधायिकामे प्रतिदिन विधेयक पर बहस, अथवा प्रश्नकाल, प्रस्ताव, बहस आ अविश्वास प्रस्तावक दौरान उठायल गेल प्रश्न सभक माध्यमसँ कयल जाइत अछि। सरकार प्रत्येक मंत्री और उनके विभागों के निर्णयों और नीतियों के लिए जिम्मेदार है। यह जवाबदेही की एक बहु-जुड़ी श्रृंखला बनाता है, जहां विधायिका उन लोगों के प्रति जवाबदेह होती है जिन्होंने उन्हें चुना है, और सरकार सामूहिक रूप से विधायिका के प्रति जवाबदेह होती है। यह मतदाताओं और सरकार के बीच एक कड़ी स्थापित करता है। सरकार अपने कार्यों के लिए सामूहिक रूप से जिम्मेदार है। मंत्रिपरिषद विधायिका और निर्वाचक मंडल दोनों के प्रति जवाबदेह होती है। सामूहिक उत्तरदायित्व संसदीय लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है।³³

ग

डी.

ई.

च

103. सिविल सेवकों को राजनीतिक रूप से तटस्थ होना आवश्यक है। मंत्रिपरिषद के दिन-प्रतिदिन के निर्णयों को मंत्रियों के प्रशासनिक नियंत्रण में एक तटस्थ सिविल सेवा द्वारा लागू किया जाना है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सरकार का कामकाज निर्वाचित मंत्रियों की प्राथमिकताओं और उनके माध्यम से लोगों की इच्छा को दर्शाता है, सिविल सेवा पेशेवरों और उनकी देखरेख करने वाले निर्वाचित मंत्रियों के बीच जवाबदेही के संबंध की जांच करना आवश्यक है।

जी.

33 कृष्ण कुमार सिंह बनाम बिहार राज्य, (2017) 3 एस. सी. सी. 1; अमरिंदर सिंह बनाम पंजाब विधानसभा, (2010) 6 एस. सी. सी. 113; 2018 संविधान पीठ का फैसला।

एच.

557

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

चूंकि स्थायी कार्यकारी का गठन करने वाले सिविल सेवा अधिकारी आधुनिक कल्याणकारी राज्य लोकतंत्रों में काफी प्रभाव डालते हैं, इसलिए प्रभावी जवाबदेही के लिए दो लेनदेन की आवश्यकता होती है: “अधिकारियों का एक समूह, जैसे कि नौकरशाही, जो अपनी गतिविधि का लेखा दूसरे समूह को देती है, जैसे कि विधायक, जो उचित हिसाब रखते हैं और राजनीतिक व्यवस्था में और उस तंत्र के माध्यम से लोगों को अपना माना हुआ लेखा वापस देते हैं।”³⁴

104. सचिव, जयपुर विकास प्राधिकरण बनाम दौलत

35 वर्षीय माल जैन, इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि एक व्यक्तिगत मंत्री अपने अधीन काम करने वाले अधिकारियों द्वारा किए गए कार्यों के लिए लोगों के प्रति जवाबदेह और जवाबदेह है। इस न्यायालय ने कहा कि:

ग

“सरकार अपने नौकरशाहों के माध्यम से कार्य करती है, जो सामाजिक स्थिरता को आगे बढ़ाने और सामाजिक, आर्थिक रूप से प्रगति करने के लिए अपनी सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक नीतियों को आकार देते हैं और मंत्री न केवल अपने कार्यों के

लिए बल्कि उन नौकरशाहों के काम के लिए भी जिम्मेदार होते हैं जो उनके अधीन काम करते हैं या काम करते हैं। जिस विभाग का वह प्रमुख है, उसके संबंध में राज्यपाल के नाम पर किए गए अपने सभी कार्यों के लिए वह मतदाताओं के प्रति जिम्मेदार है। वह न केवल नैतिक जिम्मेदारी निभाता है, बल्कि उनके अधीन काम करने वाले नौकरशाहों के सभी कार्यों के संबंध में भी जिम्मेदार है, जो उनकी मंत्री जिम्मेदारी के तहत विभाग के कामकाज में वास्तविक जिम्मेदारी निभाते हैं।"

डी.

ई.

105. 2018 के संविधान पीठ के फैसले में सहमति जताते हुए न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने सरकारी जवाबदेही और सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत के बीच आंतरिक संबंध पर प्रकाश डाला। निर्णय ने विभाग में सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा की गई किसी भी और हर कार्रवाई के लिए विधायिका के प्रति एक व्यक्तिगत मंत्री की जिम्मेदारी को रेखांकित किया, जिसकी देखरेख मंत्री करता है:

च

"327. व्यवहार में सामूहिक जिम्मेदारी उन स्थितियों में भी मौजूद है जहां मंत्रियों को अपने-अपने विभागों के अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा की गई कार्रवाइयों की कोई जानकारी नहीं होती है।

जी.

343. ... आधुनिक सरकार, अपनी परिचर जटिलताओं के साथ, कई घटकों और घटक तत्वों से बनी है। इनमें ऐसे मंत्री शामिल हैं जिन्हें सदस्यों के रूप में भी चुना जाता है

34 एडम प्रजेवोस्की, सुसान सी. स्टोक्स, बर्नार्ड मैनिन, डेमोक्रेसी, एकाउंटेबिलिटी एंड रिप्रेजेंटेशन (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 2012), पृष्ठ 298 पर।

एच.

35 (1997) 1 एससीसी 35

558

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

विधायिका और अनिर्वाचित सार्वजनिक अधिकारी जो दैनिक शासन के मुद्दों पर काम करते हैं। सभी मंत्री उनमें से किसी एक या उनके विभागों द्वारा लिए गए निर्णय से बाध्य हैं।"

106. इस प्रकार सिविल सेवा अधिकारी निर्वाचित सरकार के मंत्रियों के प्रति जवाबदेह होते हैं, जिनके अधीन वे कार्य करते हैं। मंत्री बदले में संसद या, जैसा भी मामला हो, के प्रति जवाबदेह होते हैं। राज्य विधानसभाएँ वेस्टमिंस्टर संसदीय लोकतंत्र के तहत, सिविल सेवाएँ आदेश की एक ट्रिपल श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण घटक हैं जो लोकतांत्रिक जवाबदेही सुनिश्चित करती हैं। आदेश की ट्रिपल चेन इस प्रकार है:

ए। सिविल सेवा अधिकारी मंत्रियों के प्रति जवाबदेह होते हैं। बी। मंत्री संसद/विधानमंडल के प्रति उत्तरदायी होते हैं; और ग। संसद/विधानमंडल मतदाताओं के प्रति जवाबदेह है। 107. एक गैर-उत्तरदायी और गैर-उत्तरदायी सिविल सेवा लोकतंत्र में शासन की एक गंभीर समस्या पैदा कर सकती है। यह एक संभावना पैदा करता है कि अनिर्वाचित सिविल सेवा अधिकारियों से युक्त स्थायी कार्यपालिका, जो सरकारी नीति के कार्यान्वयन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं, ऐसे तरीकों से कार्य कर सकती हैं जो मतदाताओं की इच्छा की अवहेलना करते हैं।

ग

डी.

(ग) संघीय राजनीति 108 में सिविल सेवा अधिकारियों की जवाबदेही। हमारा संविधान संघीय स्वरूप का है। संघीय राजनीति में, एक मौलिक प्रश्न जो उत्पन्न होता है वह यह है कि कौन सा अधिक उपयुक्त प्राधिकरण होगा जिसके प्रति सिविल सेवा अधिकारी जवाबदेह होंगे। 109. जैसा कि पहले चर्चा की गई है, संघीय संविधान की एक सर्वोपरि विशेषता संघ और क्षेत्रीय इकाइयों के बीच विधायी और कार्यकारी शक्तियों का वितरण है। भारतीय संघवाद का अनिवार्य चरित्र राष्ट्र को समग्र रूप से केंद्र सरकार के नियंत्रण में रखना है, जबकि क्षेत्रीय या संघीय इकाइयों को अपने विधायी और सह-व्यापक कार्यकारी और प्रशासनिक क्षेत्रों के भीतर अपनी विशेष शक्ति का प्रयोग करने की अनुमति है। 36

ई.

च

जी.

110. सरकार के लोकतांत्रिक रूप में, प्रशासन की वास्तविक शक्ति संविधान की सीमाओं के अधीन राज्य की निर्वाचित शाखा में होनी चाहिए। 37 संवैधानिक रूप से स्थापित और

36 एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ, (1994) 3 एस. सी. सी. 1 37 2018 संविधान पीठ ए

एच.

559

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार को अपने प्रशासन पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। प्रशासन में कई लोक अधिकारी शामिल होते हैं, जो किसी विशेष सरकार की सेवाओं में तैनात होते हैं, चाहे वह सरकार उनकी भर्ती में शामिल थी या नहीं। उदाहरण के लिए, किसी विशेष सरकार द्वारा भर्ती किया गया अधिकारी किसी अन्य सरकार के साथ प्रतिनियुक्ति पर सेवा कर सकता है। यदि लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार को अपने अधिकार क्षेत्र में तैनात अधिकारियों को नियंत्रित करने की शक्ति प्रदान नहीं की जाती है, तो सामूहिक जिम्मेदारी की ट्रिपल-चेन में अंतर्निहित सिद्धांत निरर्थक हो जाएगा। कहने का मतलब है, अगर सरकार अपनी सेवा में तैनात अधिकारियों को नियंत्रित करने और उनका हिसाब रखने में सक्षम नहीं है, तो विधायिका के साथ-साथ जनता के प्रति भी उसकी जिम्मेदारी कम हो जाती है। सामूहिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत अधिकारियों की जिम्मेदारी तक फैला हुआ है, जो बदले में मंत्रियों को रिपोर्ट करते हैं। यदि अधिकारी मंत्रियों को रिपोर्ट करना बंद कर देते हैं या उनके निर्देशों का पालन नहीं करते हैं, तो सामूहिक जिम्मेदारी का पूरा सिद्धांत प्रभावित होता है। लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार तभी प्रदर्शन कर सकती है जब अधिकारियों की ओर से जागरूकता हो कि अगर वे प्रदर्शन नहीं करते हैं तो इसके क्या परिणाम हो सकते हैं। यदि अधिकारियों को लगता है कि वे निर्वाचित सरकार के नियंत्रण से अछूते हैं, जिसकी वे सेवा कर रहे हैं, तो वे जवाबदेह नहीं हो जाते हैं या अपने प्रदर्शन के प्रति प्रतिबद्धता नहीं दिखा सकते हैं। 111. हम पहले ही मान चुके हैं कि संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच संबंध एक असममित संघीय मॉडल के समान है, जहां एन. सी. टी. डी. राज्य सूची और समवर्ती सूची के निर्दिष्ट क्षेत्रों में अपने विधायी और कार्यकारी नियंत्रण का प्रयोग करता है। अनुच्छेद 239 एए, जिसने एन. सी. टी. डी. को एक विशेष दर्जा प्रदान किया और संवैधानिक रूप से सरकार के एक प्रतिनिधि रूप को स्थापित किया, को संघवाद की भावना से संविधान में शामिल किया गया था, जिसका उद्देश्य यह था कि राजधानी शहर के निवासियों को इस बात में आवाज उठानी चाहिए कि उन्हें कैसे शासित किया जाना है। यह एन. सी. टी. डी. सरकार की जिम्मेदारी है कि वह दिल्ली के लोगों की इच्छा को व्यक्त करे जिन्होंने इसे चुना था। इसलिए, आदर्श निष्कर्ष यह होगा कि जी. एन. सी. टी. डी. का "सेवाओं" पर नियंत्रण होना चाहिए, बशर्ते उन विषयों को बाहर रखा जाए जो इसके विधायी क्षेत्र से बाहर हैं। यदि सेवाओं को इसके विधायी और कार्यकारी क्षेत्र से बाहर रखा जाता है, तो एन. सी. टी. डी. के क्षेत्र में नीतियां बनाने के लिए जिम्मेदार मंत्रियों और कार्यपालिका को ऐसे कार्यकारी निर्णयों को लागू करने वाले सिविल सेवा अधिकारियों को नियंत्रित करने से बाहर रखा जाएगा।

डी.

ई.

च

जी.

112. जी. एन. सी. टी. डी. को "सेवाओं" का नियंत्रण प्रदान करने की आवश्यकता पर उपरोक्त चर्चा की पृष्ठभूमि में, हम निम्नलिखित पर विचार करते हैं।

एच.

560

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

भारत संघ का तर्क है कि भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों के लिए "सेवाओं" की परिकल्पना नहीं करता है।

के. बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट

113. भारत संघ ने बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट पर भरोसा किया जिसके कारण 1991 का संविधान संशोधन हुआ और यह तर्क देने के लिए कि केंद्र शासित प्रदेशों के लिए "सेवाएं" उपलब्ध नहीं हैं, अनुच्छेद 239 एए को शामिल किया गया। संशोधन अधिनियम के उद्देश्यों और कारणों के विवरण ने समिति की रिपोर्ट को संदर्भित किया:

“ उद्देश्यों और कारणों का विवरण

केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली में प्रशासनिक व्यवस्था के पुनर्गठन का सवाल पिछले कुछ समय से सरकार के विचाराधीन है। भारत सरकार ने दिल्ली के प्रशासन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर गौर करने और अन्य बातों के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के उपायों की सिफारिश करने के लिए एक समिति (बालकृष्णन समिति) का गठन किया। समिति ने इस मामले में बहुत विस्तार से चर्चा की और विभिन्न व्यक्तियों, संघों, राजनीतिक दलों और अन्य विशेषज्ञों के साथ चर्चा करने और अन्य देशों की राष्ट्रीय राजधानियों में एक संघीय व्यवस्था और संविधान सभा में बहस के साथ-साथ पूर्व समितियों और आयोगों की रिपोर्टों को ध्यान में रखते हुए मुद्दों पर विचार किया। इस तरह की विस्तृत जांच और जांच के बाद, इसने सिफारिश की कि दिल्ली को एक केंद्र शासित प्रदेश बना रहना चाहिए और आम आदमी के लिए चिंता के मामलों से निपटने के लिए उचित शक्तियों के साथ ऐसी विधानसभा के लिए जिम्मेदार एक विधान सभा और एक मंत्रिपरिषद प्रदान की जानी चाहिए। समिति ने यह भी सिफारिश की कि स्थिरता और स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी को केंद्र शासित प्रदेशों के बीच एक विशेष दर्जा देने के लिए संविधान में व्यवस्थाओं को शामिल किया जाना चाहिए।

ग

डी.

ई.

च

2. विधेयक उपरोक्त प्रस्तावों को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है।”

जी.

114. बालकृष्णन समिति ने विशेष रूप से राज्य सूची की प्रविष्टि 41 (सेवाओं से संबंधित) पर विचार किया। इसकी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रविष्टि 41 केंद्र शासित प्रदेशों के लिए उपलब्ध नहीं है, क्योंकि (i) प्रविष्टि में केवल 'राज्य' का उल्लेख है न कि 'केंद्र शासित प्रदेश' का; (ii) संविधान का भाग XIV केवल राज्य के मामलों और संघ के मामलों के संबंध में सेवाओं को संदर्भित करता है; और (iii) केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन।

एच.

561

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

केंद्र शासित प्रदेश संघ की जिम्मेदारी है और इस प्रकार यह 'संघ के मामलों' के दायरे में आता है। रिपोर्ट में कहा गया है:

“ 8.1 8. 1 दिल्ली प्रशासन में सार्वजनिक सेवाएँ। 2. राज्य सूची की प्रविष्टि 41 में उल्लेख है "राज्य लोक सेवाएँ: राज्य लोक सेवा आयोग "। जाहिर है, यह प्रविष्टि केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू नहीं होती है क्योंकि इसमें केवल "राज्य" का उल्लेख है न कि "केंद्र शासित प्रदेशों" का। इस दृष्टिकोण को इस तथ्य से बल मिलता है कि संविधान भारत में सार्वजनिक सेवाओं को दो श्रेणियों में विभाजित करता है, अर्थात् संघ के मामलों के संबंध में सेवाएं और राज्य के मामलों के संबंध में सेवाएं, जैसा कि संविधान के भाग XIV के विभिन्न प्रावधानों से स्पष्ट है। केंद्र शासित प्रदेशों की सेवाओं को कवर करने वाली सेवाओं की कोई तीसरी श्रेणी नहीं है। स्पष्ट कारण यह है कि केंद्र शासित प्रदेश का प्रशासन अनुच्छेद 239 के तहत संघ की संवैधानिक जिम्मेदारी है और इस तरह "संघ के मामलों" के तहत आता है। नतीजतन, किसी भी केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासन के लिए सार्वजनिक सेवाओं को संघ के मामलों के संबंध में सार्वजनिक सेवाओं का हिस्सा बनना चाहिए।”

ग

डी.

115. बालकृष्णन समिति ने राय दी कि मंत्रिपरिषद के साथ एक विधान सभा की स्थापना ऊपर चर्चा की गई स्थिति को बाधित नहीं करेगी। रिपोर्ट के अनुसार:

ई.

“सेवाएँ

9.3.4. संविधान के प्रावधानों के आधार पर, केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली के प्रशासन से संबंधित सेवाएं मंत्रिपरिषद के साथ एक विधान सभा की स्थापना के बाद भी संघ की सेवाओं का हिस्सा होंगी। यह संवैधानिक स्थिति असाधारण है और इसे बाधित नहीं किया जाना चाहिए। तथापि, सेवाओं या पदों की निर्दिष्ट श्रेणियों के संबंध में उपराज्यपाल को शक्तियों का पर्याप्त प्रत्यायोजन होना चाहिए। इस तरह की प्रत्यायोजित शक्तियों के तहत अपने कार्यों को करने में उपराज्यपाल को अपने विवेक से कार्य करना होगा, लेकिन जब भी संभव हो, मुख्यमंत्री के साथ परामर्श का एक सम्मेलन होना चाहिए।”

च

जी.

116. बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट के उद्धरणों पर न्यायमूर्ति भूषण ने अपने 2019 के विभाजित फैसले में यह अभिनिर्धारित करने के लिए भरोसा किया था कि एन. सी. टी. डी. की विधानसभा के पास सूची II की प्रविष्टि 41 के तहत कानून बनाने की शक्ति नहीं है।

एच.

562

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

117. हम प्रविष्टि 41 (सेवाओं) पर एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति के दायरे को खारिज करने के लिए बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट पर निर्भरता से सहमत नहीं हैं। हम 2018 की संविधान पीठ में बहुमत की राय में व्यक्त किए गए विचार को दोहराते हैं कि अनुच्छेद 239 एए की व्याख्या करने के लिए रिपोर्ट को संदर्भित करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि निर्णय आधिकारिक रूप से उक्त अनुच्छेद के दायरे से संबंधित है। यह अभिनिर्धारित किया गया कि: "277. इस प्रस्ताव के बारे में कोई विवाद नहीं हो सकता है कि किसी कानून को लागू करने वाली समिति की रिपोर्ट कानून को समझने या समझने के लिए बाहरी सहायता के रूप में काम कर सकती है। हालांकि, इसमें

तत्काल मामले में, जैसा कि हमने व्याख्या की आवश्यकता वाले संवैधानिक प्रावधान पर दिए जाने वाले अर्थ के बारे में विस्तार से चर्चा की है, समिति की रिपोर्ट द्वारा निर्देशित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

ग

(जोर दिया गया) 118। रिपोर्ट में दिए गए सुझाव के विपरीत, 2018 की संविधान पीठ के फैसले में प्रावधान किया गया था कि एन. सी. टी. डी. के पास अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (सी) में दिए गए बहिष्कृत विषयों को छोड़कर, सूची II में सभी विषयों पर विधायी शक्ति होगी।

डी.

119. बालाकृष्णन समिति की रिपोर्ट को 1991 के संविधान संशोधन के उद्देश्यों और कारणों के विवरण में संदर्भित किया गया था। उद्देश्यों और कारणों के कथन को केवल पृष्ठभूमि, पूर्ववर्ती स्थिति, संशोधन के संबंध में आसपास की परिस्थितियों और संशोधन के उद्देश्य को समझने की सीमित सीमा तक संदर्भित किया जा सकता है। 38 आर. एस. नायक बनाम ए. आर. अंतुले 39 में, इस न्यायालय की एक संविधान पीठ ने निर्णय दिया कि एक समिति की रिपोर्ट जो एक कानून के अधिनियमन से पहले, संयुक्त संसदीय समितियों की रिपोर्ट, अधिनियम के लिए सूचना एकत्र करने के लिए गठित आयोग की रिपोर्ट निर्माण के लिए अनुमेय बाहरी सहायता हैं। इस प्रकार, इस न्यायालय द्वारा बालाकृष्णन समिति की रिपोर्ट पर अनुच्छेद 239 एए को लागू करने के पीछे के इरादे को समझने के लिए भरोसा किया जा सकता है। हालांकि, यह न्यायालय विशिष्ट वाक्यांशों का अर्थ लगाने के लिए एक समिति की रिपोर्ट से बाध्य नहीं है। यही कारण है कि 2018 की संविधान पीठ ने बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट पर भरोसा किए बिना एन. सी. टी. डी. के लिए परिकल्पित संवैधानिक संरचना के संदर्भ में अनुच्छेद 239 ए. ए. के पाठ को प्रासंगिक रूप से समझा।

ई.

च

जी.

38 पश्चिम बंगाल राज्य बनाम सुबोध गोपाल बोस, ए. आई. आर. 1954 एस. सी. 92; भाईजी बनाम उप-विभागीय अधिकारी थांडला, (2003) 1 एस. सी. सी. 692

एच.

39 (1984) 2 एससीसी 183 ए

563

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

120. इसके अलावा, एन. सी. टी. डी. के लिए "सेवाओं" को शामिल करने के खिलाफ बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट में की गई दलीलों को इस अदालत ने खारिज कर दिया है। बालाकृष्णन समिति की रिपोर्ट में यह तर्क कि प्रविष्टि में 'राज्य' शब्द का

उपयोग अपने आप में इस ओर ले जाता है कि प्रविष्टि केंद्र शासित प्रदेश के विधानमंडल के लिए उपलब्ध नहीं है, 2018 की संविधान पीठ में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की सहमति वाली राय में निम्नलिखित शब्दों में विशेष रूप से खारिज कर दिया गया है:

“461. [...] "जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है" अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता है कि एन. सी. टी. की विधानसभा को राज्य या समवर्ती सूचियों में किसी भी विषय पर कानून बनाने की कोई शक्ति नहीं होगी, केवल उस विशेष प्रविष्टि में "राज्य" अभिव्यक्ति का उपयोग करके। यह अनुच्छेद 239-ए (3) (ए) के उपरोक्त शब्दों का सही पठन नहीं है।” सहमति देने वाली राय सूची II की प्रविष्टियों 38 और 40 को संदर्भित करती है जो इस प्रकार है:

ग

“38. राज्य के विधानमंडल के सदस्यों, विधान सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष और, यदि कोई विधान परिषद है, तो उसके अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के वेतन और भत्ते।

डी.

[...]

ई.

40. राज्य के लिए मंत्रियों का वेतन और भत्ते।” (जोर दिया गया) जी. एन. सी. टी. डी. अधिनियम के प्रावधानों का उल्लेख करते हुए जो इन प्रविष्टियों से संबंधित हैं, न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ ने अपनी सहमति में कहा कि संसद ने भी एक प्रविष्टि में 'राज्य' शब्द के उपयोग का अर्थ यह नहीं लगाया कि यह केंद्र शासित प्रदेशों के लिए उपलब्ध नहीं है, क्योंकि यह उक्त मुद्दों से निपटने के लिए जी. एन. सी. टी. डी. की विधानसभा की शक्ति को स्वीकार करता है। हम उपरोक्त टिप्पणियों से सहमत हैं। प्रविष्टियों में केवल 'राज्य' शब्द का उपयोग एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता को बाहर नहीं करेगा। उस तर्क के अनुसार, सूची II में सभी प्रविष्टियों को एन. सी. टी. डी. की विधायी क्षमता से बाहर रखा जाएगा क्योंकि सातवीं अनुसूची की सूची II का शीर्षक 'राज्य सूची' है।

च

जी.

121. इसके अलावा, बालकृष्णन रिपोर्ट का निष्कर्ष कि सातवीं अनुसूची की राज्य सूची की प्रविष्टि 41 केंद्र शासित प्रदेशों के लिए उपलब्ध नहीं है क्योंकि संविधान में केंद्र शासित प्रदेशों की सेवाओं को शामिल करने वाली सेवाओं की तीसरी श्रेणी की परिकल्पना नहीं की गई है, इसके विपरीत है।

एच.

564

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

प्रेम कुमार जैन (ऊपर) मामले में इस न्यायालय के फैसले के लिए, जिसने एन. सी. टी. डी. के लिए सेवाओं को बरकरार रखा था। प्रेम कुमार जैन (ऊपर) में निर्णय दिसंबर 1989 की बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट से पहले दिया गया था। बालकृष्णन समिति ने उक्त निर्णय का उल्लेख नहीं किया। इस प्रकार, बालकृष्णन समिति की रिपोर्ट पर यह निर्धारित करने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है कि क्या एन. सी. टी. डी. के लिए "सेवाएँ" उपलब्ध हैं।

एल. केंद्र शासित प्रदेशों में भाग **XIV** की प्रयोज्यता

122. भारत संघ ने प्रस्तुत किया है कि एन. सी. टी. डी. के पास सूची II की प्रविष्टि 41 पर विधायी क्षमता नहीं है क्योंकि संविधान के भाग XIV में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए किसी भी सेवा पर विचार नहीं किया गया है। यह तर्क दिया गया है कि एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को प्रतिबंधित किया जा सकता है यदि भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों को सेवाओं पर विचार नहीं करता है क्योंकि अनुच्छेद 239 ए. ए. वाक्यांश "संविधान के प्रावधानों के अधीन" से शुरू होता है।

ग

(क) संविधान के भाग 14 के प्रयोजन के लिए "राज्य" का अर्थ

डी.

123. यह देखने की आवश्यकता है कि संविधान के भाग XIV में "राज्य" वाक्यांश में केंद्र शासित प्रदेश शामिल है या नहीं। अनुच्छेद 308 संविधान के भाग XIV के लिए 'राज्य' की परिभाषा प्रदान करता है। संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम 1956 से पहले अनुच्छेद 308 40 में निम्नलिखित प्रावधान हैं: "308. इस भाग में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा 'राज्य' अभिव्यक्ति की आवश्यकता न हो, इसका अर्थ है पहली अनुसूची के भाग ए या भाग बी में निर्दिष्ट राज्य।"

ई.

124. राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 और इसके परिणामस्वरूप 1956 के संशोधन ने पहली अनुसूची के प्रावधानों को बदल दिया। 1956 में संशोधन से पहले, राज्यों को संविधान की पहली अनुसूची के भाग ए, बी और सी में निर्दिष्ट तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था। सातवें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 308 में संशोधन किया गया और भाग XIV के प्रयोजनों के लिए राज्य को निम्नानुसार परिभाषित किया गया:

च

"308. इस भाग में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, "राज्य" अभिव्यक्ति में जम्मू और कश्मीर राज्य शामिल नहीं है।"

जी.

125. अपरिवर्तित अनुच्छेद 308 के संदर्भ में, 'राज्य' की परिभाषा में पहली अनुसूची के भाग ए और भाग बी राज्य शामिल थे और

एच.

40 "1956 संशोधन "

565

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

इसमें भाग सी राज्य शामिल हैं, क्योंकि वे संघ द्वारा प्रशासित थे। 1956 के संवैधानिक संशोधन के बाद, अनुच्छेद 308 केवल जम्मू और कश्मीर राज्य को छोड़कर 'राज्य' की बहिष्कृत परिभाषा प्रदान करता है। अनुच्छेद 308 इस बारे में कोई स्पष्टता प्रदान नहीं करता है कि क्या "राज्य" में भाग XIV के प्रयोजनों के लिए केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं।

126. अनुच्छेद 366 अनुच्छेद 246-ए, 268, 269-ए और अनुच्छेद 279-ए के संदर्भ में "राज्य" को परिभाषित करता है ताकि विधायिका के साथ एक केंद्र शासित प्रदेश को शामिल किया जा सके। अनुच्छेद 366 संविधान के भाग XIV के किसी भी प्रावधान की व्याख्या के लिए लागू नहीं होता है। इस प्रकार, हमें अनुच्छेद 367 पर वापस जाना चाहिए। अनुच्छेद 367 में कहा गया है कि जब तक संदर्भ में अन्यथा आवश्यकता न हो, तब तक सामान्य खंड अधिनियम संविधान की व्याख्या के लिए लागू होगा। सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) "राज्य" को पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य के रूप में परिभाषित करती है और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल है।

127. जी. एन. सी. टी. डी. का तर्क है कि प्रेम कुमार जैन (उपरोक्त) मामले में इस न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित करके केंद्र शासित प्रदेश की सेवाओं के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से पवित्र कर दिया है कि "राज्य" की परिभाषा में संविधान के अनुच्छेद 312 के उद्देश्य के लिए केंद्र शासित प्रदेश शामिल होंगे। संघ ने तर्क दिया है कि प्रेम कुमार जैन में निर्णय अखिल भारतीय सेवा अधिनियम 1951 के साथ पढ़े गए आई. ए. एस. (संवर्ग) नियम 1954 41 के उद्देश्य के लिए सीमित था। इसके अलावा, यह तर्क दिया गया कि इसमें अनुच्छेद 312 का संदर्भ अनुच्छेद 308 के महत्व के किसी भी संदर्भ के बिना दिया गया है। संघ का यह तर्क है कि प्रेम कुमार जैन के अनुपात की व्यापक अर्थों में व्याख्या करने से संविधान के भाग XIV में परिकल्पित तंत्र में हिंसा होगी।

डी.

ई.

128. प्रेम कुमार जैन में, आई. ए. एस. में केंद्र शासित प्रदेशों के लिए विशेष रूप से एक संयुक्त संवर्ग की स्थापना को दरकिनार करने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती दी गई थी। अनुच्छेद 312 में कहा गया है कि संसद कानून द्वारा संघ और राज्यों के लिए समान "अखिल भारतीय सेवाओं" का निर्माण कर सकती है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियम 1954 के नियम 3 (1) के तहत सभी केंद्र शासित प्रदेशों का एक संयुक्त संवर्ग बनाया गया था। 42 एक नए संयुक्त संवर्ग के निर्माण को उच्च न्यायालय के समक्ष इस आधार पर चुनौती दी गई थी कि यह संविधान के अनुच्छेद 312 और अखिल भारतीय सेवा अधिनियम 1951 के विपरीत है। यह तर्क दिया गया था कि अनुच्छेद 312 संघ के लिए एक समान अखिल भारतीय सेवा पर विचार नहीं करता है

च

जी.

41 1954 संवर्ग नियम 42 "1954 संवर्ग नियम"

एच.

566

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

क्षेत्र क्योंकि प्रावधान में "राज्य" शब्द में केंद्र शासित प्रदेश शामिल नहीं हैं। 1954 के कैडर नियमों के नियम 2 (सी) के तहत "राज्य" की परिभाषा, जिसमें यह प्रावधान है कि एक राज्य का अर्थ है "संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल है" को भी चुनौती दी गई थी।

129. उस संदर्भ में, उच्च न्यायालय ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेशों को "राज्य" नहीं कहा जा सकता है, और संवर्ग नियमों के नियम 2 (सी) के तहत "राज्य" की परिभाषा को संविधान और अखिल भारतीय सेवा अधिनियम 1951 के अधिकार क्षेत्र से बाहर माना। उच्च न्यायालय ने कहा कि अनुच्छेद 308 में "राज्य" की परिभाषा को देखते हुए केंद्र शासित प्रदेश संविधान के भाग XIV के उद्देश्य से "राज्य" नहीं थे, जिसमें इसके संशोधन से पहले भाग सी राज्य शामिल नहीं थे। उच्च न्यायालय ने तर्क दिया कि केंद्र शासित प्रदेश भाग सी राज्यों के उत्तराधिकारी हैं और तदनुसार केंद्र शासित प्रदेशों को भाग XIV में 'राज्य' की परिभाषा से बाहर रखा गया था। उच्च न्यायालय ने 1956 में संशोधित सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) (बी) में 'राज्य' शब्द की परिभाषा पर कोई भरोसा करने से इनकार कर दिया। उच्च न्यायालय ने तर्क दिया कि केवल अनुच्छेद 372 (2) के तहत सामान्य खंड अधिनियम में किए गए अनुकूलन अनुच्छेद 367 (1) को देखते हुए संविधान की व्याख्या पर लागू होते हैं, और तदनुसार अनुच्छेद 372 ए द्वारा बाद में किए गए अनुकूलन लागू नहीं होते हैं। उच्च न्यायालय ने कहा कि:

डी.

ई.

‘(7) इसलिए अगला सवाल यह है कि क्या केंद्र शासित प्रदेश अनुच्छेद 312 (1) के उद्देश्य के लिए "राज्य" हैं।

अनुच्छेद 312 संविधान के अध्याय XIV का एक हिस्सा है, जो महत्वपूर्ण रूप से "संघ और राज्यों के तहत सेवाओं" का हकदार है। भाग XIV एक अखिल भारतीय सेवा नहीं बनाता है।[.....] इसकी कुंजी

अनुच्छेद 309 और 312 (1) सहित भाग XIV में प्रयुक्त "राज्य" शब्द का अर्थ व्याख्या द्वारा प्रदान किया गया है।

च

अनुच्छेद 308 में खंड। संविधान (सातवाँ संशोधन) अधिनियम, 1956 से पहले अनुच्छेद 308 इस प्रकार था:

“इस भाग में। जब तक कि संदर्भ में अन्यथा "राज्य" अभिव्यक्ति की आवश्यकता न हो, इसका अर्थ है पहली अनुसूची के भाग ए या भाग बी में निर्दिष्ट राज्य।

जी.

इस परिभाषा ने, इस प्रकार, यह स्पष्ट कर दिया कि भाग XIV में "राज्य" शब्द में भाग C राज्यों को शामिल नहीं किया जाना था। केंद्र शासित प्रदेश भाग सी राज्यों के उत्तराधिकारी हैं। अतः यह इस प्रकार है कि उन्हें भी ए की परिभाषा से स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।

एच.

567

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

“भाग XIV में "बताएँ। अनुच्छेद 313 के संदर्भ में ऐसा कुछ भी विशेष नहीं है जिसमें केंद्र शासित प्रदेश को शामिल करने के लिए "राज्य" शब्द की आवश्यकता हो।

...

संविधान का अनुच्छेद 367 (1) संविधान के अनुच्छेद 372 (2) के तहत अनुकूलित सामान्य खंड अधिनियम के प्रावधान की व्याख्या पर लागू होता है। अनुच्छेद 372 (2) (ए) को ध्यान में रखते हुए इस तरह का अनुकूलन संविधान के प्रारंभ से तीन साल के भीतर किया जाना था। संविधान के अनुच्छेद 372 (2) के तहत जारी कानून आदेश, 1950 के अनुकूलन द्वारा अनुकूलित सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) में "राज्य" की परिभाषा।

ग

(जोर दिया गया) 130। अपील में, इस न्यायालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले को दरकिनार कर दिया। सबसे पहले, इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) के तहत "राज्य" अभिव्यक्ति की संशोधित परिभाषा को देखते हुए, जैसा कि कानून अनुकूलन आदेश 1956 द्वारा अनुकूलित किया गया था, उस परिभाषा को संविधान के भाग XIV पर लागू करने योग्य बनाने के लिए विषय या संदर्भ के लिए कुछ भी प्रतिकूल नहीं था। इस न्यायालय ने तर्क दिया कि अनुच्छेद 372 ए को संविधान में शामिल किया गया था क्योंकि संसद ने 1956 के संविधान संशोधन के तुरंत पहले 1956 के संविधान संशोधन के प्रावधानों के अनुसार किसी भी कानून के प्रावधानों को लागू करने के उद्देश्य से राष्ट्रपति को अनुच्छेद 372 के समान शक्ति देने की आवश्यकता महसूस की थी, जैसा कि 1956 के संविधान संशोधन द्वारा संशोधित किया गया था। इस न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित करने के लिए अग्रिम बीमा (उपर्युक्त) पर भरोसा किया कि अनुच्छेद 372-ए ने राष्ट्रपति को एक नई शक्ति दी जो अनुच्छेद 372 (2) के तहत शक्ति के बराबर और अनुरूप थी। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि: “8. अतः 1 नवंबर, 1956 से, जब संविधान (सातवाँ संशोधन) अधिनियम, 1956 लागू हुआ, राष्ट्रपति के पास भारत में लागू

किसी भी कानून के प्रावधानों को संविधान के प्रावधानों के अनुसार लाने के उद्देश्य से कानूनों को अनुकूलित करने की शक्ति थी। यह उस शक्ति के अधीन था

डी.

ई.

च

जी.

कि राष्ट्रपति ने विधियों का अनुकूलन (संख्या 1) आदेश, 1956 जारी किया, जिसने, जैसा कि दिखाया गया है, सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 में एक नए खंड (58) को प्रतिस्थापित किया, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह प्रावधान किया गया है कि "राज्य" अभिव्यक्ति इस प्रकार होगी -

एच.

568 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 के प्रारंभ के बाद की किसी भी अवधि के संबंध में, इसका अर्थ है "संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल होगा।" यह किसी भी औचित्य के साथ नहीं कहा जा सकता है कि उस परिभाषा को लागू करने योग्य बनाने के लिए विषय या संदर्भ में कुछ भी अप्रिय था। संविधान के अनुच्छेद 372 ए (1) के आधार पर, यह "राज्य" अभिव्यक्ति की वह परिभाषा थी जो नवंबर, 1956 के पहले दिन से प्रभावी थी और संविधान स्पष्ट रूप से

बशर्ते कि इस पर "किसी भी अदालत में सवाल नहीं उठाया जा सकता"।

इसलिए उच्च न्यायालय ने एक विपरीत दृष्टिकोण अपनाते हुए और यह अभिनिर्धारित करते हुए गलत किया कि "केंद्र शासित प्रदेश संविधान के अनुच्छेद 312 (1) के प्रयोजनों के लिए 'राज्य' नहीं हैं और

ग

1951 के अधिनियम की प्रस्तावना। यही कारण था कि उच्च न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित करने में गलती की कि संवर्ग नियमों में "राज्य" की परिभाषा अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 और संविधान के अधिकार क्षेत्र से बाहर थी, और यह कि केंद्र शासित प्रदेशों का संवर्ग संविधान के अनुच्छेद 312 (1) के अर्थ के भीतर "केंद्र और राज्यों के लिए समान नहीं था", और केंद्र सरकार राज्य सरकारों के परामर्श से भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियम, 1954 नहीं बना सकती थी क्योंकि केंद्र शासित प्रदेशों में ऐसी कोई सरकार नहीं थी।"

डी.

ई.

(जोर दिया गया) 131। प्रेम कुमार जैन (ऊपर) में, इस न्यायालय ने संविधान के भाग XIV या अनुच्छेद 312 के विषय या संदर्भ के लिए कुछ भी प्रतिकूल नहीं पाया, विशेष रूप से सामान्य खंड अधिनियम की संशोधित धारा 3 (58) (बी) के संदर्भ में 'राज्य' की परिभाषा को लागू करने योग्य नहीं पाया। इसलिए, भाग XIV में आने वाली अभिव्यक्ति 'राज्य' को केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल करने के लिए माना गया था। इस निर्णय की पूर्ववर्ती धारा में, हमने अग्रिम बीमा (उपर्युक्त) में निर्णय को मंजूरी दी है और यह अभिनिर्धारित किया है कि कानूनों के अनुकूलन (संख्या 1) आदेश, 1956 द्वारा संशोधित सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58) में "राज्य" की परिभाषा को संविधान की व्याख्या के लिए तब तक लागू किया जाना चाहिए जब तक कि संदर्भ अन्यथा आवश्यक न हो।

च

जी.

132. खंड अनुच्छेद की परिभाषा में दी गई परिभाषा को संविधान के प्रासंगिक भाग के प्रयोजनों के लिए लागू और प्रभावी किया जाना चाहिए। हालाँकि, जब परिभाषा खंड से पहले वाक्यांश 'जब तक कि संदर्भ की अन्यथा आवश्यकता न हो' होता है, तो ए की आवश्यकता हो सकती है।

एच.

569

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

सामान्य नियम से अलग होने के लिए यदि उस संदर्भ में कुछ ऐसा है जिसमें ऐसी अभिव्यक्ति यह दिखाने के लिए होती है कि परिभाषा को लागू नहीं किया जाना चाहिए।⁴³ सामान्य खंड अधिनियम की धारा 3 (58), संविधान के अनुच्छेद 367 (1) के आधार पर, संविधान में 'राज्य' अभिव्यक्ति के निर्माण पर लागू होती है, जब तक कि संविधान के किसी विशेष प्रावधान के विषय या संदर्भ में कुछ अप्रिय न हो। भारत उस पक्ष पर है जो सामान्य खंड अधिनियम के तहत परिभाषा को संवैधानिक प्रावधान की व्याख्या पर लागू करने का विरोध करता है ताकि यह साबित किया जा सके कि संदर्भ में अन्यथा की आवश्यकता है। भारत संघ यह सुझाव देने में असमर्थ रहा है कि भाग XIV का संदर्भ अन्यथा सुझाव देता है। संविधान के भाग XIV के विषय या संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो केंद्र शासित प्रदेशों में इसके अनुप्रयोग को छोड़ दे। बल्कि, खंड 3 (58) के तहत प्रदान की गई "राज्य" की समावेशी परिभाषा के लागू होने से केंद्र शासित प्रदेशों के लिए परिकल्पित संवैधानिक योजना व्यावहारिक हो जाएगी।

ग

(ख) 1956 के संविधान संशोधन 133 द्वारा भाग XIV में चूक। भारत संघ ने तर्क दिया है कि भाग XIV में 1956 के संविधान संशोधन द्वारा सचेत चूक के कारण एक केंद्र शासित प्रदेश के लिए सेवाओं पर संविधान के भाग XIV में विचार नहीं किया गया है। इस तर्क के दो पहलू हैं: (i) अनुच्छेद 308 में "भाग ए राज्य" और "भाग बी राज्य" शब्दों को "राज्य" शब्द से प्रतिस्थापित किया गया था।

डी.

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बजाय सरलीकरण; और (ii) जबकि

ई.

भाग XIV में विभिन्न अनुच्छेदों में 'राज प्रमुख' शब्द को हटा दिया गया था, 'प्रशासक' शब्द नहीं जोड़ा गया था।

134. पूर्ववर्ती अनुच्छेद 239 के तहत, राष्ट्रपति ने भाग सी राज्यों के संबंध में कब्जा कर लिया था, जो भाग ए राज्यों में राज्यपाल और भाग बी राज्यों में राजप्रमुख के समान स्थिति थी। असंशोधित अनुच्छेद 239 में राष्ट्रपति द्वारा मुख्य आयुक्त या उपराज्यपाल के माध्यम से या पड़ोसी राज्य की सरकार के माध्यम से नियुक्त किए जाने वाले भाग सी राज्यों के प्रशासन की परिकल्पना की गई है।

च

135. 1956 के संविधान संशोधन को राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के प्रावधानों को लागू करने के लिए अपनाया गया था। सातवें संशोधन ने भाग ए, बी और सी राज्यों के बीच संवैधानिक भेद को निरस्त कर दिया और राजप्रमुख की संस्था को समाप्त कर दिया।

जी.

43 एस. के. गुप्ता बनाम के. पी. जैन, (1979) 3 एस. सी. सी. 54; इच्छापुर औद्योगिक सहकारी समिति। सोसायटी लिमिटेड बनाम। सक्षम प्राधिकरण, तेल और प्राकृतिक गैस आयोग, (1997) 2 एस. सी. सी. 42; रत्नप्रोवा देवी बनाम उड़ीसा राज्य, (1964) 6 एस. सी. आर. 301

भाग बी राज्यों का निरस्तीकरण। 1956 के संविधान संशोधन की धारा 29 के संदर्भ में, संसद ने अनुसूची में निर्देशित "संविधान में परिणामी और छोटे संशोधनों और निरसनों" का प्रावधान किया। अनुसूची के संदर्भ में किए गए संशोधनों में से एक संविधान में "पहली अनुसूची के भाग ए या भाग बी" और "राजप्रमुख" वाक्यांश को हटाना था। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि "भाग ए", "भाग बी" और "राजप्रमुख" अभिव्यक्तियों को आवश्यक रूप से संसद द्वारा किसी अन्य अभिव्यक्ति द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया था।

136. अनुच्छेद 239, जैसा कि 1956 के संविधान संशोधन द्वारा संशोधित किया गया था, में कहा गया है कि संसद द्वारा अधिनियमित किसी भी कानून के अधीन प्रत्येक केंद्र शासित प्रदेश का प्रशासन राष्ट्रपति द्वारा किया जाएगा, जो उनके द्वारा नियुक्त प्रशासक के माध्यम से कार्य करेगा। यह ध्यान देने योग्य है कि संशोधन के समय 'प्रशासक' शब्द को अनुच्छेद 239 के अलावा संविधान के किसी भी प्रावधान में नहीं जोड़ा गया था। अनुच्छेद 239 के भीतर भी, प्रावधान ने पदनाम के रूप में 'प्रशासक' शब्द का उपयोग नहीं किया। इसके बजाय, अनुच्छेद 239 प्रदान करता है कि:

ग

डी.

“239. केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन

(1) कानून द्वारा संसद द्वारा अन्यथा उपबंधित किए जाने के अलावा, प्रत्येक केंद्र शासित प्रदेश का प्रशासन राष्ट्रपति द्वारा, उस हद तक, जो वह उचित समझे, एक प्रशासक के माध्यम से किया जाएगा, जिसे उसके द्वारा उस पदनाम के साथ नियुक्त किया जाएगा जिसे वह निर्दिष्ट करे।

ई.

(2) भाग VI में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति किसी राज्य के राज्यपाल को आस-पास के केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासक के रूप में नियुक्त कर सकता है, और जहां राज्यपाल इस प्रकार नियुक्त किया जाता है, वह अपने मंत्रिपरिषद से स्वतंत्र रूप से ऐसे प्रशासक के रूप में अपने कार्यों का प्रयोग करेगा।”

च

137. इसके अलावा, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अनुच्छेद 239 ए और 239 एए को 1956 के संविधान संशोधन के बहुत बाद में जोड़ा गया था। 1962 में, अनुच्छेद 239 ए को संविधान (चौदहवाँ संशोधन) अधिनियम 1962 के माध्यम से जोड़ा गया था, जो संसद को कुछ केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कानून, स्थानीय विधानसभाओं या मंत्रिपरिषद या दोनों का निर्माण करने का विवेक देता है। 1991 में, एन. सी. टी. डी. को केंद्र शासित प्रदेशों सहित अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से सुई जेनरिस का दर्जा देने के लिए 1991 के संविधान संशोधन के माध्यम से अनुच्छेद 239 ए. ए. जोड़ा गया था, जिसमें अनुच्छेद 239 ए लागू होता है। जब 1956 के संविधान संशोधन को अपनाया गया तो संसद यह कल्पना नहीं कर सकती थी कि केंद्र शासित प्रदेशों को विविध शासन मॉडल प्रदान किए गए होंगे। अतः ए का तर्क

जी.

एच.

सातवें संशोधन में चूक को ध्यान में रखते हुए विधायी इरादे पर संघ प्रेरक नहीं है।

(ग) शक्ति का अस्तित्व और शक्ति का प्रयोग

138. यह विवाद में नहीं है कि वर्तमान में, एन. सी. टी. डी. के लिए एक लोक सेवा आयोग मौजूद नहीं है। हालाँकि, शक्ति का अस्तित्व और शक्ति का प्रयोग दो अलग-अलग अवधारणाएँ हैं, और इन्हें मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए। यह एक स्थापित कानून है कि कोई शक्ति मौजूद है या नहीं, यह इस बात से प्राप्त नहीं किया जा सकता है कि उसका प्रयोग किया गया है या नहीं और कितनी बार किया गया है।

139. बिहार राज्य बनाम महाराजाधिराज सर कामेश्वर

सिंह, 44 ने इस न्यायालय की संविधान पीठ ने इस तर्क को खारिज कर दिया कि समवर्ती सूची की प्रविष्टि 42 के तहत कानून बनाने की शक्ति एक कर्तव्य के साथ एक शक्ति थी। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि सातवीं अनुसूची के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए विधानमंडल का कोई कानून बनाने का दायित्व नहीं है:

ग

“19. यह आगे तर्क दिया गया कि सूची III की प्रविष्टि 42 के तहत कानून बनाने की शक्ति एक शुल्क के साथ एक शक्ति थी, क्योंकि ऐसा कानून स्पष्ट रूप से ज़ब्त किए गए मालिकों के लाभ के लिए था, और जहाँ विधानमंडल ने इस तरह के ज़ब्त को अधिकृत किया है, वह उन सिद्धांतों को निर्धारित करने वाली कानून बनाने की शक्ति का प्रयोग करने के लिए भी बाध्य था, जिन पर ऐसे मालिकों को उनके नुकसान की भरपाई की जानी चाहिए।... जबकि कुछ शक्तियाँ कुछ व्यक्तियों के पक्ष में प्रयोग करने के लिए दी जा सकती हैं जो उनके अभ्यास से लाभान्वित होने का इरादा रखते हैं, और उस कारण से उनके प्रयोग के लिए एक उचित अवसर उत्पन्न होने पर उनका प्रयोग करने के कर्तव्य के साथ अच्छी तरह से जोड़ा जा सकता है, किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने के लिए एक विधायिका को दी गई शक्ति को उस श्रेणी के तहत नहीं लाया जा सकता है, यह संभवतः नहीं हो सकता है:

डी.

ई.

च

इसका उद्देश्य यह था कि विधायिका उस शक्ति का प्रयोग करते हुए एक कानून बनाने के लिए बाध्य होना चाहिए, क्योंकि उस तरह के किसी भी दायित्व को अदालत द्वारा किसी विधायी निकाय के खिलाफ लागू नहीं किया जा सकता है।”

(जोर दिया गया)

जी.

140. इसी तरह, हरियाणा राज्य बनाम चानन मल, 45 में हरियाणा खनिज (अधिकार निहित) अधिनियम, 1973 की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए, अधिनियम की धारा 2 में की गई घोषणा को ध्यान में रखते हुए।

44 1952 एससीआर 889 45 (1977) 1 एससीसी 340

एच.

572

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

खान और खनिज (विनियमन और विकास) अधिनियम, 1957, जैसा कि संघ सूची की प्रविष्टि 54 द्वारा परिकल्पित है, यह अभिनिर्धारित किया गया था कि शक्ति के प्रयोग और अस्तित्व को संयोजित नहीं किया जा सकता है:

“24. ऊपर चर्चा किए गए दो मामलों में 1957 के केंद्रीय अधिनियम 67 का कोई प्रावधान इस न्यायालय द्वारा विचाराधीन नहीं था। इसके अलावा, विकास और विनियमन के उद्देश्यों के लिए अधिग्रहण करने की शक्ति का प्रयोग 1957 के अधिनियम 67 द्वारा नहीं किया गया है। शक्ति का अस्तित्व

संसद द्वारा इस विषय पर दूसरे विषय पर विधायी शक्ति के प्रयोग की घटना के रूप में कानून बनाना एक बात है।

इसका वास्तविक अभ्यास एक और है। यह देखना मुश्किल है कि कैसे अधिग्रहण के क्षेत्र पर उसी तरह केंद्रीय अधिनियम का कब्जा हो सकता है जैसे पश्चिम बंगाल के मामले में संसद द्वारा किसी राज्य में भूमि अधिग्रहण के लिए कानून बनाने से पहले हुआ था। कम से कम जब तक संसद पश्चिम बंगाल के मामले में इस न्यायालय द्वारा विचार किए गए कानून द्वारा इस तरह से कानून नहीं बनाती है, तब तक यह क्षेत्र सूची III की प्रविष्टि 42 के स्पष्ट प्रावधानों के तहत आने वाले राज्य कानून के लिए स्वतंत्र है।

ग

डी.

(जोर दिया गया)

141. संविधान के अनुच्छेद 309 में संघ या राज्य की सेवा करने वाले व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तों का प्रावधान है। अनुच्छेद 309 के संदर्भ में, संविधान के प्रावधानों के अधीन, एक उपयुक्त विधानमंडल संघ या किसी राज्य के मामलों के संबंध में सार्वजनिक सेवाओं और पदों पर नियुक्त व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तों को विनियमित करने के लिए एक कानून बना सकता है। इस प्रावधान में इंगित विधायी क्षेत्र वही है जो सातवीं अनुसूची की राज्य सूची की संघ सूची या प्रविष्टि 41 में इंगित किया गया है। अनुच्छेद 309 के परंतुक के संदर्भ में, भारत संघ के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल या ऐसे व्यक्ति जिन्हें वे निर्देश दे सकते हैं, के पास एक विराम व्यवस्था के रूप में समान नियम बनाने की शक्ति है जब तक कि उस संबंध में प्रावधान उपयुक्त विधायिका द्वारा नहीं किए जाते हैं। अनुच्छेद 309 का परंतुक केवल एक संक्रमणकालीन प्रावधान 46 है, क्योंकि परंतुक के तहत शक्ति का प्रयोग केवल तब तक किया जा सकता है जब तक कि उपयुक्त विधानमंडल सार्वजनिक पदों पर भर्ती और उस पद से संबंधित सेवा की अन्य शर्तों के लिए कोई कानून नहीं बनाता है। यदि किसी उपयुक्त विधानमंडल ने अनुच्छेद 309 के तहत कोई कानून बनाया है, तो परंतुक के तहत बनाए गए नियम उस अधिनियम के अधीन होंगे। 47 अनुच्छेद 309 में प्रावधान है कि:

ई.

च

जी.

46 ए. बी. कृष्णा बनाम कर्नाटक राज्य, (1998) 3 एस. सी. सी. 495 47 बी. एस. वाडेरा बनाम भारत संघ, (1968) 3 एस. सी. आर. 575 ए

एच.

573

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

“309. संघ या राज्य की सेवा करने वाले व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तें

इस संविधान के प्रावधानों के अधीन, उपयुक्त विधानमंडल के अधिनियम संघ या किसी राज्य के मामलों के संबंध में सार्वजनिक सेवाओं और पदों पर नियुक्त व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तों को विनियमित कर सकते हैं:

बशर्ते कि राष्ट्रपति या संघ के कार्यों के संबंध में सेवाओं और पदों के मामले में ऐसा व्यक्ति जो वह निर्देश दे, और किसी राज्य के राज्यपाल या ऐसे व्यक्ति के लिए जो वह राज्य के मामलों के संबंध में सेवाओं और पदों के मामले में निर्देश दे, ऐसी सेवाओं और पदों पर भर्ती और नियुक्त व्यक्तियों की सेवा की शर्तों को विनियमित करने वाले नियम बनाने के लिए तब तक सक्षम होगा जब तक कि इस अनुच्छेद के तहत उपयुक्त विधानमंडल के किसी अधिनियम द्वारा या उसके तहत उस ओर से प्रावधान नहीं किया जाता है, और इस तरह बनाए गए कोई भी नियम ऐसे किसी अधिनियम के प्रावधानों के अधीन रहते हुए प्रभावी होंगे।

ग

डी.

142. अनुच्छेद 309 के प्रावधान के तहत नियम बनाने का कार्य संक्रमणकालीन है। संघ के मामलों के संबंध में पदों के संबंध में राष्ट्रपति और राज्य के मामलों के संबंध में राज्यपाल को केवल परंतुक के तहत नियम बनाने की शक्ति होगी जब तक कि इस संबंध में कोई कानून अधिनियमित नहीं किया जाता है। राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा बनाया गया कोई भी नियम उपयुक्त विधानमंडल द्वारा बनाए गए "ऐसे किसी अधिनियम के प्रावधानों के अधीन" होगा। अनुच्छेद 309 के तहत राष्ट्रपति और राज्यपाल द्वारा शक्ति का प्रयोग किसी भी तरह से उस शक्ति को प्रतिबंधित नहीं करता है जो अन्यथा अनुच्छेद 309 के तहत उपलब्ध है। अनुच्छेद 309 के तहत राष्ट्रपति द्वारा शासन बनाने की शक्ति का प्रयोग दी गई विधायी शक्ति का स्थान नहीं लेता है।

ई.

च

143. तुलसीराम पटेल (उपरोक्त) मामले में, इस न्यायालय की एक संविधान पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 309 के तहत कानून बनाने के लिए उपयुक्त विधायिका, विधायी क्षमता और शक्तियों के विभाजन के संबंध में संविधान के प्रावधानों पर निर्भर करेगी। इस न्यायालय ने आगे कहा कि अनुच्छेद 309 के तहत राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा बनाए गए नियमों को सूची I की प्रविष्टि 70 और सूची II की प्रविष्टि 41 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए अधिनियमित कानून के अनुरूप होना चाहिए:

जी.

"51. कानून बनाने के लिए कौन सा उपयुक्त विधानमंडल होगा या नियम बनाने के लिए उपयुक्त प्राधिकरण संविधान के प्रावधानों पर निर्भर करेगा।

एच.

574 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 9 एस. सी. आर.

विधायी क्षमता और विधायी विभाजन के लिए

शक्तियाँ। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची I में प्रविष्टि 70 के तहत, संघ लोक सेवा, अखिल भारतीय सेवा और संघ लोक सेवा आयोग ऐसे विषय हैं जो संसद के अनन्य विधायी क्षेत्र में आते हैं, जबकि संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II में प्रविष्टि 41 के तहत, राज्य लोक सेवा और राज्य लोक सेवा आयोग राज्य विधानमंडलों के अनन्य विधायी क्षेत्र में आते हैं। इसलिए, किसी राज्य के राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा बनाए गए नियम भी इन विधायी शक्तियों के अनुरूप होने चाहिए।"

(जोर दिया गया) **144।** उपरोक्त चर्चा से पता चलता है कि भले ही राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 309 के प्रावधान के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए प्रासंगिक नियम बनाए हों, लेकिन "सेवाओं" पर कानून बनाने की एन. सी. टी. डी. की शक्ति को बाहर नहीं रखा गया है। वास्तव में अगले खंड में, हम सूची II की प्रविष्टि 41, यानी "सेवाओं" के तहत एन. सी. टी. डी. द्वारा विधायी

शक्ति के प्रयोग के उदाहरणों पर चर्चा करेंगे। 145. उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखते हुए, हमारा मानना है कि भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों पर भी लागू होता है।

ग

डी.

एम. प्रविष्टि 41 पर एन. सी. टी. डी. द्वारा विधायी शक्ति का प्रयोग

146. एन. सी. टी. डी. की ओर से यह तर्क दिया गया है कि दिल्ली विधानसभा द्वारा पदों के निर्माण और सेवा के नियमों और शर्तों से संबंधित कई कानून बनाए गए हैं। रिलायंस को विभिन्न राज्य सेवाओं पर रखा गया था, जैसे दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007, दिल्ली सफाई कर्मचारी आयोग अधिनियम, 2006, दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1999, दिल्ली वित्त आयोग अधिनियम, 1994, दिल्ली लोकायुक्त और उप-लोकायुक्त अधिनियम, 1995, दिल्ली महिला आयोग अधिनियम, 1994 और दिल्ली विद्युत सुधार अधिनियम, 2001 के तहत दिल्ली अग्निशमन सेवा। यह तर्क दिया गया था कि ये कानून जो अन्य बातों के साथ-साथ पदों और वेतन के विवरण का निर्माण करते हैं, राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के लिए संदर्भित विषय के प्रयोग में अधिनियमित किए गए थे।

ई.

च

147. हालाँकि, न्यायमूर्ति अशोक भूषण ने 2019 के विभाजित फैसले में दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007 से संबंधित इस तर्क को खारिज कर दिया, क्योंकि उन्होंने कहा कि यह कानून राज्य सूची की प्रविष्टि 5 के तहत आता है न कि राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत। न्यायमूर्ति भूषण ने कहा:

जी.

“208. हम सबसे पहले देख सकते हैं कि अधिनियम में उपयोग किए गए “सेवाएँ” शब्द का उपयोग अग्नि ए के लिए सेवाएँ प्रदान करने के तरीके से किया गया है।

एच.

575

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

रोकथाम और अग्नि सुरक्षा उपाय। “सेवा” शब्द का उपयोग किसी सेवा के गठन के अर्थ में नहीं किया गया है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अग्निशमन सेवा स्थानीय प्राधिकरण द्वारा किया जाने वाला एक नगरपालिका कार्य है। दिल्ली नगर परिषद अधिनियम, 1957 में आग आदि की रोकथाम से संबंधित विभिन्न प्रावधान हैं। इसके अलावा अग्निशमन सेवाएँ नगरपालिकाओं के अधिकार क्षेत्र में आने वाला एक नगरपालिका कार्य है, जिसे भारत के संविधान में मान्यता दी गई है। संविधान का अनुच्छेद 243 (डब्ल्यू) 12 वीं अनुसूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में नगर पालिकाओं के कार्यों से संबंधित है। 12 वीं अनुसूची की प्रविष्टि 7 नगरपालिकाओं के कार्यों में से एक के रूप में “अग्निशमन सेवाओं” का प्रावधान करती है। अधिनियम की प्रकृति और प्रावधान स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम सूची II की प्रविष्टि 5 के तहत आता है न कि सूची II की प्रविष्टि 41 के तहत। 148. बारहवीं अनुसूची की प्रविष्टि 7 के साथ पठित संविधान के अनुच्छेद 243 डब्ल्यू में प्रावधान है कि किसी राज्य का विधानमंडल, कानून द्वारा, ‘अग्निशमन सेवाओं’ के संबंध में नगर पालिकाओं को जिम्मेदारियाँ दे सकता है। सूची II की प्रविष्टि 5 के तहत, एक उपयुक्त विधानमंडल ‘स्थानीय सरकार, यानी, स्थानीय स्वशासन या ग्राम प्रशासन के उद्देश्य से नगर निगमों, सुधार न्यासों, जिला बोर्डों, खनन निपटान प्राधिकरणों और अन्य स्थानीय प्राधिकरणों के गठन और शक्तियों’ से संबंधित कानून बना सकता है।

ग

डी.

149. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या कोई कानून प्रविष्टि 41 के तहत सेवा बनाता है या नहीं, इस न्यायालय द्वारा निर्धारित किया गया है। संविधान में

ई.

गुजरात राज्य बनाम रमन लॉ केशव लाल, 48 में न्यायपीठ का निर्णय

यह अभिनिर्धारित करते हुए कि गुजरात पंचायत अधिनियम 1961 की धारा 203 (1) के तहत परिकल्पित पंचायत सेवा एक राज्य सिविल सेवा थी, यह अभिनिर्धारित किया गया कि किसी राज्य के तहत किसी सेवा के प्रशासन में मोटे तौर पर निम्नलिखित कार्य शामिल हैं: (i) सिविल सेवा का संगठन और उसमें सेवारत व्यक्तियों के पारिश्रमिक, सेवा की शर्तों, खर्चों और भत्तों का निर्धारण; (ii) सिविल सेवा में व्यक्तियों को प्रवेश देने का तरीका; (iii) सेवा के सदस्यों पर अनुशासनात्मक नियंत्रण का प्रयोग और सार्वजनिक हित में जब भी ऐसा करने का अवसर आता है, उन्हें स्थानांतरित करने, निलंबित करने, हटाने या बर्खास्त करने की शक्ति। इस न्यायालय ने टिप्पणी की: “21. [...] तत्काल मामले में, हम महसूस करते हैं कि यह मानने का कोई ठोस कारण नहीं है कि पंचायत सेवा राज्य के तहत सिविल सेवा नहीं है। यह देखा गया है कि उम्मीदवारों की आगे की भर्ती

च

जी.

48 (1980) 4 एस. सी. सी. 653

एच.

576

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

पंचायत सेवा को राज्य सरकार द्वारा गठित गुजरात पंचायत सेवा चयन बोर्ड द्वारा किया जाना है।

संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 41, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, राज्य लोक सेवाओं को भी संदर्भित करती है जो यह सुझाव देती है कि राज्य के तहत एक से अधिक राज्य लोक सेवाएँ हो सकती हैं।

किसी राज्य के अधीन ऐसी सेवाओं की संख्या जैसे पुलिस सेवा, शैक्षिक सेवा, राजस्व सेवा आदि। राज्य लोक सेवाएँ

राज्य विधानमंडल द्वारा बनाई गई विधि द्वारा या संविधान के अनुच्छेद 309 के प्रावधान के तहत बनाए गए नियमों द्वारा या यहां तक कि संविधान के अनुच्छेद 162 के तहत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार द्वारा बनाए गए कार्यकारी आदेश द्वारा भी इसका गठन या स्थापना की जा सकती है। भर्ती

ग

और राज्य सरकार के अधिकारियों और सेवकों की सेवा की शर्तों को भी कानून, नियमों या कार्यपालिका द्वारा विनियमित किया जा सकता है।

आदेश देते हैं। किसी राज्य के अधीन किसी सेवा के प्रशासन में मोटे तौर पर निम्नलिखित कार्य शामिल होते हैं: (i) सिविल सेवा का संगठन और उसमें सेवारत व्यक्तियों के पारिश्रमिक, सेवा की शर्तों, खर्चों और भत्तों का निर्धारण; (ii) सिविल सेवा में व्यक्तियों को प्रवेश देने का तरीका; (iii) सेवा के सदस्यों पर अनुशासनात्मक नियंत्रण का प्रयोग और सार्वजनिक हित में जब भी ऐसा करने का अवसर आता है, उन्हें स्थानांतरित करने, निलंबित करने, हटाने या बर्खास्त करने की शक्ति। [...]

डी.

ई.

(जोर दिया गया) 150। इस प्रकार, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या किसी कानून को लागू करने की शक्ति राज्य सूची की प्रविष्टि 41 में पाई जा सकती है, यह जांच करना आवश्यक है कि क्या उस कानून में भर्ती, सेवा की शर्तों और हस्तांतरण और निलंबन की शक्ति सहित नियंत्रण के प्रयोग को विनियमित करने वाले प्रावधान हैं या नहीं। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हमें दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007 की जांच करने की आवश्यकता है।

च

151. दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007 49 को एन. सी. टी. डी. की विधानसभा द्वारा "अग्निशमन सेवा के रखरखाव और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में कुछ इमारतों और परिसरों में अग्नि सुरक्षा रोकथाम और अग्नि सुरक्षा उपायों के लिए अधिक प्रभावी प्रावधान करने और संबंधित मामलों" के लिए अधिनियमित किया गया था।

जी.

49 दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007, 2009 का दिल्ली अधिनियम 2 ए

एच.

577

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

इसके साथ।" दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007 एक व्यापक अधिनियम है जिसने तीन विधानों या, जैसा भी मामला हो, उन नियमों को बदल दिया जो एन. सी. टी. डी. में संचालित होते थे:

ए। संयुक्त प्रांत अग्नि सुरक्षा अधिनियम 1944 का दिल्ली तक विस्तार किया गया। भारत सरकार अधिनियम 1935 की धारा 93 के तहत जारी एक उद्घोषणा के तहत अपने द्वारा ग्रहण की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए संयुक्त प्रांतों के राज्यपाल द्वारा इस अधिनियम को अधिसूचित किया गया था। अधिनियम को संयुक्त प्रांतों में अग्निशमन दल के कर्मचारियों और संचालन के लिए एक प्रांतीय अग्निशमन सेवा के गठन और रखरखाव के लिए अधिनियमित किया गया था।

बी। भारत सरकार अधिनियम 1935 50 की धारा 241 (1) (बी) और धारा 241 (2) (बी) के तहत बनाए गए दिल्ली अग्निशमन सेवा (अधीनस्थ सेवा) नियम 1945; और

ग

ग. दिल्ली अग्नि रोकथाम और अग्नि सुरक्षा अधिनियम 1986। संसद द्वारा अधिनियमित अधिनियम केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली में अग्नि रोकथाम और अग्नि सुरक्षा उपायों के लिए प्रभावी प्रावधान करने पर केंद्रित था। इसमें 'अग्निशमन सेवा' के रखरखाव से संबंधित कोई प्रावधान नहीं था। 152. दिल्ली अग्निशमन सेवा अधिनियम 2007 का उद्देश्य "अग्निशमन सेवा के रखरखाव" का प्रावधान करना है। धारा 2 (1) 'अग्निशमन सेवा' को परिभाषित करती है जिसका अर्थ है अधिनियम की धारा 5 के तहत गठित दिल्ली अग्निशमन सेवा। धारा 5 अग्निशमन सेवा के गठन को निर्धारित करती है। धारा 5 (ए) के संदर्भ में, अग्निशमन सेवा में कई रैंकों में ऐसी संख्याएँ शामिल होंगी और उनका ऐसा संगठन और ऐसी शक्तियाँ, कार्य और कर्तव्य होंगे जो सरकार निर्धारित करे। धारा 5 (बी) के संदर्भ में, अग्निशमन सेवा के सदस्यों की भर्ती और वेतन, भत्ते और सेवा की अन्य सभी शर्तें ऐसी होंगी जो निर्धारित की जाएं। धारा 3 में कहा गया है कि पूरी दिल्ली के लिए एक अग्निशमन सेवा होगी और अग्निशमन सेवा के सभी अधिकारी और अधीनस्थ रैंक अग्निशमन सेवा की किसी भी शाखा में नियुक्ति के लिए उत्तरदायी होंगे। अधिनियम के अध्याय II में अग्निशमन सेवा के संगठन, अधीक्षण, नियंत्रण और रखरखाव का प्रावधान है। अध्याय III में अग्निशमन सेवा के नियंत्रण और अनुशासन का प्रावधान है।

डी.

ई.

च

जी.

153. दिल्ली अग्रिशमन सेवा का गठन दिल्ली अग्रिशमन सेवा अधिनियम 2007 के तहत किया गया है, जिसे एन. सी. टी. डी. की विधानसभा द्वारा अधिनियमित किया गया है।

50 धारा 65, दिल्ली अग्रिशमन सेवा अधिनियम 2007

एच.

578

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

प्रशासन, भर्ती और सेवा की शर्तों से संबंधित प्रावधान अधिनियम के ढांचे में प्रदान किए गए हैं। धारा 4 के संदर्भ में, अधिनियम में परिभाषित अग्रिशमन सेवा का अधीक्षण और नियंत्रण सरकार में निहित है। धारा 6 अग्रिशमन सेवा के पदों को समूह ए, बी, सी और डी पदों में वर्गीकृत करने का प्रावधान करती है। धारा 7 में कहा गया है कि सरकार संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श के बाद समूह ए या समूह बी के किसी भी पद पर नियुक्तियां करेगी। धारा 8 दिल्ली में अग्रिशमन सेवा के निर्देशन और पर्यवेक्षण के लिए दिल्ली अग्रिशमन सेवा के निदेशक की नियुक्ति को निर्धारित करती है। धारा 14 में निर्धारित किया गया है कि केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम 1964 और केंद्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण और अपील) नियम 1965 और केंद्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1972, जैसा कि संशोधित किया गया है, दिल्ली अग्रिशमन सेवा के सभी कर्मचारियों के लिए उत्परिवर्तित किए जाएंगे।

ग

154. इसके अलावा, अधिनियम की धारा 63 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के तहत, उपराज्यपाल ने दिल्ली अग्रिशमन सेवा नियम 2019 को अधिसूचित किया है, जो सेवाओं पर प्रतिष्ठान, संगठन और प्रबंधन को विनियमित करता है। नियम 9 में प्रावधान है कि अग्रिशमन सेवा में विभिन्न पदों पर भर्ती सरकार द्वारा अधिसूचित भर्ती नियमों के अनुसार की जाएगी। नियम 10 में प्रावधान है कि अग्रिशमन सेवा में विभिन्न रैंकों के लिए वेतन और भत्ते वेतन आयोग या सरकार द्वारा नियुक्त किसी अन्य प्राधिकरण की सिफारिशों के अनुसार होंगे।

डी.

ई.

155. दिल्ली अग्रिशमन सेवा अधिनियम 2007 और 2019 के नियमों के प्रावधानों के विश्लेषण पर, यह स्पष्ट है कि कानून में पद, उनकी भर्ती प्रक्रिया, वेतन और भत्ता, अनुशासनात्मक शक्ति और नियंत्रण शामिल हैं-ये सभी राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत "सेवा" के घटक हैं, जैसा कि रमन कानून केशव लाल (उपरोक्त) में माना गया है। इस प्रकार, दिल्ली अग्रिशमन सेवा अधिनियम 2007 को एन. सी. टी. डी. की विधान सभा द्वारा राज्य सूची की प्रविष्टि 41 के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए अधिनियमित किया गया था।

च

156. एन. सी. टी. डी. पहले ही राज्य सूची की प्रविष्टि 41 से संबंधित अपनी विधायी शक्ति का प्रयोग कर चुका है। हालाँकि, "सेवाओं" की रूपरेखा बहुत व्यापक है, और "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" से भी संबंधित हो सकती है-जो एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र और कार्यकारी क्षेत्र से बाहर हैं। इसके बाद सवाल यह उठता है कि एन. सी. टी. डी. के दायरे में कौन सी "सेवाएं" हैं।

जी.

एच.

579

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

क.

एन. "सेवाएं" और एन. सी. टी. डी.

157. अब जब हमने माना है कि एन. सी. टी. डी. के पास प्रविष्टि 41 के तहत "सेवाओं" के संबंध में विधायी और कार्यकारी शक्ति है, तो एक स्वाभाविक सवाल जो उत्पन्न होता है वह है "सेवाओं" पर एन. सी. टी. डी. के नियंत्रण की सीमा। सवाल प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि तीन प्रविष्टियाँ (सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस, भूमि), जिन्हें एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति के दायरे से बाहर रखा गया है, का भी "सेवाओं" के साथ कुछ संबंध है। इस न्यायालय को एन. सी. टी. डी. के संबंध में एन. सी. टी. डी. और संघ द्वारा नियंत्रित की जाने वाली "सेवाओं" के बीच अंतर पैदा करना चाहिए। यह अंतर संविधान द्वारा एन. सी. टी. डी. को प्रदान की गई विधायी और कार्यकारी शक्ति के दायरे और 2018 के संविधान पीठ के फैसले में निर्धारित एन. सी. टी. डी. के लिए संवैधानिक शासन के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

ग

158. इस न्यायालय ने निर्धारित किया है कि सातवीं अनुसूची में प्रविष्टि के दायरे को व्यापक रूप से पढ़ने की आवश्यकता है। आई. के. सक्सेना बनाम मध्य प्रदेश राज्य 51 में, इस न्यायालय की चार न्यायाधीशों की पीठ ने निर्णय दिया कि अनुसूची VII में प्रविष्टियों को उनके व्यापक संभव आयाम में पढ़ा जाना चाहिए। पीठ ने कहा कि प्रविष्टि 41 द्वारा परिभाषित विधायी क्षमता का क्षेत्र अनुच्छेद 309 द्वारा कवर किए गए क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है:

डी.

"32. यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि अनुसूची VII में इन विधायी सूचियों में प्रविष्टियों को उनके व्यापक संभव आयाम में समझा जाना चाहिए, और ऐसी प्रविष्टियों में उपयोग किए जाने वाले प्रत्येक सामान्य शब्द को सहायक या सहायक मामलों को समझने के लिए रखा जाना चाहिए। इस प्रकार यह माना जाता है कि

ई.

यह स्पष्ट है कि प्रविष्टि 41 का दायरा अनुच्छेद 309 के तहत लोक सेवकों की भर्ती और सेवा की शर्तों को विनियमित करने के मामले से अधिक व्यापक है। प्रविष्टि 41 द्वारा परिभाषित विधायी क्षमता का क्षेत्र अनुच्छेद 309 के परंतुक द्वारा शामिल क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है।"

च

(जोर जोड़ा गया) 159। लेकिन, हमारे संदर्भ में, हम एन. सी. टी. डी. के संबंध में प्रविष्टि 41 को व्यापक संभव अर्थों में पढ़ने में सक्षम नहीं हो सकते हैं क्योंकि सूची II (प्रविष्टि 41 सहित) में सभी प्रविष्टियों को 'सार्वजनिक व्यवस्था', 'पुलिस' और 'भूमि' से संबंधित मामलों को छोड़कर एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति पर अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) में निर्धारित सीमा के साथ सुसंगत होने की आवश्यकता है। 160. प्रविष्टि 41 पर एन. सी. टी. डी. की विधायी और कार्यकारी शक्ति का विस्तार "सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" से संबंधित सेवाओं तक नहीं होगा और

जी.

51 (1976) 4 एससीसी 750

एच.

580

“भूमि”। हालांकि, भारतीय प्रशासनिक सेवाओं या संयुक्त संवर्ग सेवाओं जैसी सेवाओं पर विधायी और कार्यकारी शक्ति, जो क्षेत्र के दिन-प्रतिदिन के प्रशासन के संदर्भ में एन. सी. टी. डी. की नीतियों और दृष्टिकोण के कार्यान्वयन के लिए प्रासंगिक हैं, एन. सी. टी. डी. के पास होगी। इसके तहत अधिकारी एन. सी. टी. डी. में सेवारत हो सकते हैं, भले ही उन्हें एन. सी. टी. डी. द्वारा भर्ती नहीं किया गया हो। ऐसे परिदृश्य में, एक उदाहरण के रूप में, कुछ नियमों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा, जो स्पष्ट रूप से अखिल भारतीय या केंद्र और राज्यों के बीच संयुक्त कैडर सेवाओं के नियंत्रण का सीमांकन करते हैं। एन. सी. टी. डी., अन्य राज्यों की तरह, सरकार के प्रतिनिधि रूप का भी प्रतिनिधित्व करता है। एन. सी. टी. डी. के प्रशासन में भारत संघ की भागीदारी संवैधानिक प्रावधानों द्वारा सीमित है, और आगे कोई भी विस्तार शासन की संवैधानिक योजना के विपरीत होगा।

ग

161. हम भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियम, 1954 का उदाहरण लेंगे, जो आई. ए. एस. अधिकारियों की नियुक्ति से संबंधित है। नियम 2 (ए) 'संवर्ग अधिकारी' को आई. ए. एस. के सदस्य के रूप में परिभाषित करता है। नियम 2 (बी) 'संवर्ग पद' को भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग शक्ति निर्धारण) विनियम, 1955 की अनुसूची में प्रत्येक संवर्ग के मद I के तहत निर्दिष्ट किसी भी पद के रूप में परिभाषित करता है। नियम 2 (सी) 'राज्य' को संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट राज्य के रूप में परिभाषित करता है और इसमें एक केंद्र शासित प्रदेश शामिल है। नियम 2 (डी) संयुक्त संवर्ग के संबंध में 'संबंधित राज्य सरकार' को परिभाषित करता है, जिसका अर्थ है संयुक्त संवर्ग प्राधिकरण। 'संयुक्त संवर्ग प्राधिकरण' के गठन और संरचना को अखिल भारतीय सेवा (संयुक्त संवर्ग) नियम 1972 के संदर्भ में समझा जाता है। 1972 के नियम "केंद्र शासित प्रदेशों के संयुक्त संवर्ग के अलावा राज्यों के किसी भी समूह के लिए गठित संयुक्त संवर्ग" पर लागू होते हैं।" 52 आई. ए. एस. (संवर्ग) नियम 1954 के नियम 3 में प्रत्येक राज्य या राज्यों के समूह के लिए 'राज्य संवर्ग' या 'संयुक्त संवर्ग' के रूप में संवर्गों के गठन का प्रावधान है। नियम 5 केंद्र सरकार को विभिन्न संवर्गों में संवर्ग अधिकारियों को आवंटित करने का अधिकार देता है। नियम 5 (1) के संदर्भ में, विभिन्न संवर्गों को संवर्ग अधिकारियों का आवंटन केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकार या संबंधित राज्य सरकार के परामर्श से किया जाएगा। नियम 7 में कहा गया है कि संवर्ग पदों पर सभी नियुक्तियां "सिविल सेवा बोर्ड की सिफारिश पर" की जाएंगी-राज्य सरकार द्वारा "राज्य संवर्ग के मामले में" और संबंधित राज्य सरकार द्वारा, जैसा कि नियम 2 (डी) में परिभाषित किया गया है, "संयुक्त संवर्ग के मामले में"। नियम 11 ए के तहत, "उस राज्य की सरकार" को संयुक्त संवर्ग के सदस्यों के संबंध में नियम 7 (और अन्य उल्लिखित नियमों) के तहत निर्णय लेने की शक्तियां प्रदान की गई हैं।

डी.

ई.

च

जी.

52 धारा 1 (i), अखिल भारतीय सेवा (संयुक्त संवर्ग) नियम 1972 ए

एच.

581

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] ए

सेवा "किसी भी संविधान राज्य के मामलों के संबंध में सेवा"। नियम 2, 7 और 11 ए के संयुक्त अध्ययन से संकेत मिलता है कि राज्य संवर्ग के साथ-साथ एक संविधान राज्य के संयुक्त संवर्ग के भीतर नियुक्ति "उस राज्य की सरकार", यानी विधिवत निर्वाचित सरकार द्वारा की जाएगी। हमारे मामले में यह एन. सी. टी. डी. की सरकार होगी। हम तदनुसार मानते हैं कि अखिल

भारतीय सेवाओं या संयुक्त संवर्ग सेवाओं के प्रासंगिक नियमों में "राज्य सरकार" के संदर्भ, जिनमें से एन. सी. टी. डी. एक हिस्सा है या जो एन. सी. टी. डी. के संबंध में हैं, का अर्थ एन. सी. टी. डी. की सरकार होगा।

162. हम दोहराते हैं कि अनुच्छेद 239 एए और 2018 की संविधान पीठ के फैसले के आलोक में, उपराज्यपाल एन. सी. टी. डी. के विधायी दायरे के भीतर मामलों के संबंध में एन. सी. टी. डी. के मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बाध्य हैं। जैसा कि हमने माना है कि एन. सी. टी. डी. के पास सूची II में प्रविष्टि 41 के तहत "सेवाओं" ("सार्वजनिक व्यवस्था", "पुलिस" और "भूमि" को छोड़कर) पर विधायी शक्ति है, उपराज्यपाल सेवाओं पर जी. एन. सी. टी. डी. के निर्णयों से बाध्य होंगे, जैसा कि ऊपर बताया गया है। स्पष्ट करने के लिए, संबंधित नियमों में सेवाओं ('सार्वजनिक व्यवस्था', 'पुलिस' और 'भूमि' से संबंधित सेवाओं को छोड़कर) पर 'उपराज्यपाल' के किसी भी संदर्भ का अर्थ होगा जी. एन. सी. टी. डी. की ओर से कार्य करने वाले उपराज्यपाल।

ग

डी.

163. संघ और एन. सी. टी. डी. के बीच प्रशासनिक शक्तियों के विभाजन का सम्मान किया जाना चाहिए जैसा कि इस खंड में समझाया गया है।

ई.

ओ. निष्कर्ष

164. उपरोक्त चर्चा को ध्यान में रखते हुए, हमारे निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

ए। समान शासन संरचनाओं वाले केंद्र शासित प्रदेशों का कोई सजातीय वर्ग मौजूद नहीं है।

च

ख. एन. सी. टी. डी. अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के समान नहीं है। अनुच्छेद 239 एए के आधार पर, एन. सी. टी. डी. को "सुई जेनरिस" का दर्जा दिया गया है, जो इसे अन्य केंद्र शासित प्रदेशों से अलग करता है।

ग. एन. सी. टी. डी. की विधानसभा को सूची II की स्पष्ट रूप से बहिष्कृत प्रविष्टियों को छोड़कर सूची II और सूची III में प्रविष्टियों पर अधिकार है। सूची I में प्रविष्टियों के अलावा, संसद के पास एन. सी. टी. डी. के संबंध में सूची II और सूची III में सभी मामलों पर विधायी क्षमता है, जिसमें वे प्रविष्टियां भी शामिल हैं जिन्हें अनुच्छेद 239 ए. ए. (3) (ए) के आधार पर एन. सी. टी. डी. के विधायी क्षेत्र से बाहर रखा गया है।

जी.

एच.

582

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 9 एस सी आर।

घ. एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति अपनी विधायी शक्ति के साथ सह-व्यापक है, अर्थात् इसका विस्तार उन सभी मामलों में होगा जिनके संबंध में उसके पास कानून बनाने की शक्ति है।

ई. भारत संघ के पास सूची II में केवल तीन प्रविष्टियों पर कार्यकारी शक्ति है जिन पर एन. सी. टी. डी. के पास विधायी क्षमता नहीं है।

च. सूची द्वितीय और सूची तृतीय में प्रविष्टियों के संबंध में एन. सी. टी. डी. की कार्यकारी शक्ति संविधान द्वारा या संसद द्वारा अधिनियमित कानून द्वारा संघ को स्पष्ट रूप से प्रदत्त कार्यकारी शक्ति के अधीन होगी।

ग

छ. अनुच्छेद 239 ए (3) में 'जहां तक ऐसा कोई मामला केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है' वाक्यांश को राज्य सूची या समवर्ती सूची में प्रविष्टियों पर एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को और बाहर करने के लिए नहीं पढ़ा जा सकता है, उन विषयों के अलावा जिन्हें स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है।

डी.

ज. अनुच्छेद 239 ए (3) में "इस संविधान के प्रावधानों के अधीन" वाक्यांश के संदर्भ में, एन. सी. टी. डी. की विधायी शक्ति को संविधान के व्यापक सिद्धांतों और प्रावधानों द्वारा निर्देशित किया जाना है, न कि केवल सीमित किया जाना है; और

i. एन. सी. टी. डी. के पास "सेवाओं" पर विधायी और कार्यकारी शक्ति है, यानी सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 41 क्योंकि: (I) सामान्य खंड अधिनियम 1897 की धारा 3 (58) के तहत राज्य की परिभाषा संविधान के भाग XIV में "राज्य" शब्द पर लागू होती है। इस प्रकार, भाग XIV केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है; और

ई.

च

(II) अनुच्छेद 309 के प्रावधान के तहत नियम बनाने की शक्ति का प्रयोग राज्य सूची की प्रविष्टि 41 पर कानून बनाने के लिए उपयुक्त प्राधिकारी की विधायी शक्ति को समाप्त नहीं करता है।

165. हमने 6 मई 2022 के आदेश द्वारा इस संविधान पीठ को भेजे गए मुद्दे का जवाब दे दिया है। रजिस्ट्री प्रशासनिक पक्ष में भारत के मुख्य न्यायाधीश के निर्देश प्राप्त करने के बाद निपटान के लिए नियमित पीठ के समक्ष इस अपील के कागजात रखेगी।

जी.

बिभूति भूषण बोस

संदर्भ ने जवाब दिया।

एच.

(सहायक: राहुल राठी, एलसीआरए)